कामायनी आधुनिक हिन्दी काव्यक कालजयी कृति अछि। छायावादी आलोचनामे *कामायनी*कें एक नमहर गीत मानल गेल आ एकर महाकाव्यात्मक भास्वरताकें संस्तुति भेटल। एहि कृतिक अतिरिक्त छायावाद कालमे दोसर महाकाव्य नहि लिखल गेल। *कामायनी*मे कहल गेल अछि जे मनु भारतीय इतिहासक आदि पुरुष छथि। जलप्रलयक पश्चात श्रद्धा आ मनुक सहयोगसँ मानवताक विकास भेल। *कामायनी*मे श्रद्धा आ मनुक मिलनसँ ओहि निर्जन प्रदेशमे उजड़ल सृष्टिकें पुनः आरम्भ करबाक घटनाकें सांगोपांग कथाक द्वारा सृजित कएल गेल अछि। एहि विलक्षण कथासूत्रक अनुरूप *कामायनी*क भाषा सेहो अत्यंत प्रांजल, मनोभावपूर्ण, कमनीय एवं संस्कृतनिष्ठ अछि।

जयशङ्कर प्रसाद (1889-1937)क हिन्दी साहित्यमे विशिष्ट स्थान छन्हि। गहन संवेदनाक सहज अभिव्यक्ति करयवला प्रसाद छायावादक अनन्य गीतकार छथि। हुनकर गीत विराट मानव-जीवनक समस्त प्रवृत्ति, अनुभूतिकें ओकर समस्त जटिलता आ लालित्यकें सेहो अपन समयक बहुआयामी यथार्थक संग अभिव्यंजित करैत अछि। प्रसादक गद्य विधामे सेहो कलात्मक छवि स्थापित छन्हि। कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि कत-ओक गद्य रचना सभमे आ गीतक अपन दुर्लभ शिल्पमे गीत रचयवला प्रसाद छायावादक एकमात्र गीतात्मक महाकाव्य *कामायनी*क सर्जक छथि। प्रसादजीक काव्यात्मक प्रतिभा हुनक पूर्वापर कालमे खोजब कठिन अछि।

शांति सुमन (1944) मैथिली एवं हिन्दीक प्रतिष्ठित गीतकार छथि। हिन्दीमे अहाँक दस गोट नवगीत-संग्रह आ मैथिलीमे मेघ *इंद्रनील* नामक गीत-संग्रह प्रकाशित अछि। अहाँक हिन्दी आ मैथिलीक गीत समकालीन जीवनकेर संवेदनशील क्षणक दस्तावेज अछि। प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्षक रूपमे सेवानिवृत्त शांति जी के बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार सरकारक राजभाषा विभाग, मैथिली साहित्य परिषद, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित कएल जा चुकल छन्हि।

आवरण चित्र : *जयश्री राय*

साहित्य अकादेमी

ISBN 987-81-260-4271-5

9 788126 042715

₹ 160

कामायनी

जयशङ्कर प्रसाद

मैथिली अनुवाद

शांति सुमन

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट जोतखी भगवान बुद्धक माय रानी मायाक सपनाकेँ अरथाबैत छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे बैसल एक मुन्सी ओहि अर्थकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लिखावटक ई प्रायः सभसँ पुरान आ चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी ई.
सौजन्यः राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

कामायनी

(हिन्दी काव्य)

जयशङ्कर प्रसाद

मैथिली अनुवाद

शांति सुमन

साहित्य अकादेमी

Kamayani : Maithili translation by Shanti Suman of Jaishankar Prasad's Hindi epic poetry with the same title. Sahitya Akademi, New Delhi (2013). ₹ 160

साहित्य अकादेमी

मुख्य कार्यालय

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति' मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

ई-मेल : sahityaakademisale@yahoo.com

क्षेत्रीय कार्यालय

4, डी. एल. ख़ान मार्ग, कोलकाता 700 025

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014

सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगलूरु 560 001

चेन्नई कार्यालय

मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्ना सालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 2013

ISBN : 978-81-260-4271-5

मूल्य : 160 टाका

आवरण चित्र : जयश्री राय

शब्द संयोजक एवं मुद्रक : वेलविश प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रम

आमुख	7
आत्म स्वीकृति	11
चिन्ता	13
आशा	26
श्रद्धा	39
काम	49
वासना	59
लज्जा	67
कर्म	75
ईर्ष्या	94
इड़ा	106
स्वप्न	117
संघर्ष	126
निर्वेद	138
दर्शन	154
रहस्य	168
आनन्द	180

आमुख

आर्य-साहित्य मे मानवक आदिपुरुष मनुक इतिहास वेद सँ लऽकऽ पुराण आ इतिहासमे पसरल भेटइत अछि। श्रद्धा आ मनुक सहयोगसँ मानवताक विकासक कथाकेँ, रूपकक आवरणमे, पछिला कालमे मानि लेबाक ओहने प्रयत्न भेल हो जेना कि सभ वैदिक इतिहासोक संग निरुक्तक द्वारा कएल गेल, परंच मन्वन्तरक अर्थात् मानवताक नवयुगक प्रवर्त्तकक रूपमे मनुक कथा आर्यसभक अनुश्रुतिमे दृढ़तासँ मानल गेल अछि। तैं वैवस्वत मनुकेँ ऐतिहासिक पुरुषे मानब उचित छथि। प्रायः लोक गाथा आओर इतिहासमे मिथ्या आ सत्यक अवरोध मानैत अछि। परंच सत्य मिथ्यासँ अधिक विचित्र होइत अछि। आदिम युगक मनुष्यक प्रत्येक दल ज्ञानोन्मेषक अरुणोदय मे जाहि भावपूर्ण इतिवृत्तकेँ संग्रहीत केने छलाह, ओकरे सभकेँ आइ गाथा अथवा पौराणिक उपाख्यान कहि केँ अलग कऽ देल जाइछ, किएक तँ ओहि चरित्रसभक संग भावनाक संबंध सेहो बीच-बीचमे लागल सन दृश्य होइछ। घटना सभ कतहु-कतहु अतिरंजित जकाँ सेहो बुझा पड़इछ। तथ्य संग्रहकरयवाली तर्क बुद्धि केँ एहन घटनासभ मे रूपकक आरोप कए लेबाक सुविधा भऽजाइछ। परंच ओहि सभमे सेहो किछु सत्यांश घटनासँ संबद्ध छैक एनातँ मानहि पड़त। आजुक मनुष्यक लग तँ ओकर वर्तमान संस्कृतिक क्रमपूर्ण इतिहासमात्र होइत अछि; परंच ओकर इतिहासक सीमा जतयसँ प्रारंभ होइछ; ठीक ओकरे पहिने सामूहिक चेतनाक दृढ़ आ गाढ़ रंगक रेखासँ, बीतल आओरो पहिलुक बात सभक उल्लेख स्मृति-पट पर अमिट रहैछ; परंच किछु अतिरेक जकाँ। ओ घटनासभ आइ विचित्रतासँ पूर्ण जानि पड़ैत अछि। संभवतः एहि लेल हमरा अपन प्राचीन श्रुतिसबहक निरुक्तक द्वारा अर्थ करय पड़ल जाहि सँ ओहि अर्थ सभक अपन वर्तमान रुचिसँ सामंजस्य बैसाओल जाय।

जँ श्रद्धा आओर मनु किंवा मननक सहयोगसँ मानवताक विकास रूपक थीक तइयो बहुत भावमय आ श्लाघ्य छैक। ई मनुष्यताक मनोवैज्ञानिक इतिहास बनयमे समर्थ भऽ सकैत अछि। आइ हम सत्यक अर्थ घटना कऽ लैत छी। तइयो ओकर तिथि-क्रम मात्रसँ संतुष्ट नहि भऽकऽ, मनोवैज्ञानिक अन्वेषणक माध्यमसँ इतिहासक

घटनाक भीतर किछु देखय चाहैत छी। ओकर मूलमे की रहस्य छैक! आत्माक अनुभूति! हँ, ओहि भावक रूप-ग्रहणक चेष्टा सत्य किंवा घटना बनिकऽ प्रत्यक्ष होइत अछि। फेर ओ सत्य घटनासभ स्थूल आ क्षणिक भऽकऽ मिथ्या आओर अभाव में परिणत भऽ जाइछ। परंच सूक्ष्म अनुभूति अथवा भाव, चिरन्तन सत्यक रूपमे प्रतिष्ठित रहैत अछि, जकर माध्यमसँ युग-युगक पुरुषक आ पुरुषार्थक अभिव्यक्ति होएत रहैत अछि।

जल प्रलय भारतीय इतिहासमे एक एहने प्राचीन घटना अछि, जे मनुकेँ देवगणसँ विलक्षण, मनुष्यक एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करबाक अवसर देलक। ओ इतिहासे छी। 'मनवे वै प्रातः' इत्यादि सँ एहि घटनाक उल्लेख शतपथ ब्राह्मणक आठम अध्यायमे भेटैत अछि। देवगणक उच्छृंखल स्वभाव, निर्बाध आत्मतुष्टिमे अंतिम अध्याय जुड़ल आ मानवीय भाव किंवा श्रद्धा आओर मननक समन्वय भऽकऽ प्राणीकेँ एक नवयुगक सूचना भेटल। एहि मन्वन्तरक प्रवर्त्तक मनु भेलाह। मनु भारतीय इतिहासक आदिपुरूष छथि। राम, कृष्ण आ बुद्ध हिनके वंशज छथिन्ह। शतपथ ब्राह्मणमे हुनका श्रद्धादेव कहल गेल छन्हि, 'श्रद्धादेवो वै मनुः' (का. १ प्र.१)। भागवतमे एही वैवस्वत मनु आ श्रद्धासँ मानवीय सृष्टिक प्रारंभ मानल गेल अछि।

"ततो मनुः श्राद्धदेवः संज्ञायामास भारत
श्रद्धायां जनयामास दशपुत्रान् स आत्मवान्।"

(९-१-११)

छांदोग्य उपनिषद्मे मनु आ श्रद्धाक भावमूलक व्याख्या सेहो भेटैत अछि। "यदावै श्रद्धधाति अथ मनुते नाऽश्रद्धधन् मनुते" ई किछु निरुक्तक सन व्याख्या थीक। ऋग्वेदमे श्रद्धा आ मनु दुनूक नाम ऋषिगण जकाँ भेटैत अछि। श्रद्धावला सूक्तमे सायण श्रद्धाक परिचय दैत लिखने छथि, "कामगोत्रजा श्रद्धानामर्षिका"। श्रद्धा कामगोत्रक बालिका छथि, तेँ श्रद्धा नामक संग हुनका कामायनी सेहो कहल जाइत अछि। मनु प्रथम पथ-प्रदर्शक आओर अग्निहोत्र प्रज्वलित करयवला आ अन्य कतेको वैदिक कथाक नायक छथि: — "मनुर्हवा अग्रे यज्ञेनेजे; यदनुकृत्येमाः प्रजा यजन्ते" (५-१ शतपथ) हिनक संबंधमे वैदिक साहित्यमे बहुत रास बात छिरियैल भेटैत अछि, परंच ओकर सबहक क्रम स्पष्ट नहि अछि। जल-प्रलयक वर्णन शतपथ ब्राह्मणक प्रथम काण्डक आठम अध्यायसँ प्रारंभ होइत अछि जाहिमे हुनक नाहकेँ उत्तरगिरि हिमवान प्रदेशमे पहुँचैक प्रसंग छैक। ओतय ओघक जलक अवतरण भेला पर मनु सेहो जाहि स्थान पर उतरलाह ओकरा मनोरवसर्पण कहल जाइछ। "अपीपरं वै त्वा, वृक्षे नावं प्रतिबध्नीष्व, तं तु त्वा मा गिरौ सन्तमुदक

मन्तश्चैत्सीद् यावद् यावदुदकं समवायात्—तावत् तावदन्ववसर्पासि इति स ह तावत् तावदेवान्ववससर्प। तदप्येतदुत्तरस्य गिरेर्मनोरवसपणमिति। (८-१)"

श्रद्धाक संग मनुक मिलन भेलाक उपरान्त वोहि निर्जन प्रदेशमे उजड़ल सृष्टिकेँ पुनः आरम्भ करबाक प्रयत्न भेल। परंच असुर पुरोहितकेँ भेटि गेलासँ ई सभ पशु-बलि केलन्हिः—"किलाताकुली - इतिहासुर ब्रह्मा वासतुः। तौ होचतुः - श्रद्धादेवौ वै मनुः - आवं नु वेदावेति। तौ हागत्योचतुः - मनो! बाजयाव त्वेति।"

एहि यज्ञक उपरान्त मनुमे जाहि पूर्वपरिचित देव-प्रवृत्तिक उदयभेल; ओ इड़ाक संपर्कमे एला पर हुनका श्रद्धाक' अतिरिक्त एक दोसर दिस प्रेरित कयलक। इड़ाक सम्बंधमे शतपथमे कहल गेल अछि जे ओकर उत्पत्ति वा पुष्टि पाक यज्ञसँ भेल आ ओहि पूर्ण योषिताकेँ देखि कऽ मनु पुछलखिन्ह जे "अहाँ के छी?" इड़ा कहलक, "अहाँक दुहिता छी।" मनु पुछलथि जे "हमर दुहिता कोना?" ओ कहलक "अहाँक दही, घी इत्यादिक हवियेसभसँ हमर पोषण भेल अछि।" "तां ह" मनुरुवाच—"का असि" इति। "तव दुहिता" इति। "कथं भगवति? मम दुहिता" इति। (शतपथ ६ प्र. ३ ब्रा.)

इड़ाक लेल मनुकेँ अत्यधिक आकर्षण भेल आ श्रद्धासँ ओ किछु अनमन भऽ गेलाह। ऋग्वेदमे इड़ाक कतेक स्थान पर उल्लेख भेटैत अछि। ई प्रजापति मनुक पथ-प्रदर्शिका, मनुष्यक शासन करयवाली कहल गेल छथि। "इड़ामकृण्वन्मनुषस्य शासनीम्" (१-३१-११ ऋग्वेद)। इड़ाक सम्बंधमे ऋग्वेदमे कतेक मंत्र भेटैत अछिः—"सरस्वती साधयन्ती धियं न इड़ा देवी भारती विश्वतूर्तिः तिस्रो देवीः स्वधयावर्हि रेदमच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य।" (ऋग्वेद २-३-८) "आनो यज्ञं भारती तूय मेत्विड़ा मनुष्वदिह चेतयन्ती। तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु।" (ऋग्वेद १०-११०-८) एहि मंत्र सभमे मध्यमा, बैखरी आ पश्यन्तीक प्रतिनिधि भारती, सरस्वतीक संग इड़ाक नाम आयल अछि। लौकिक संस्कृतमे इड़ा शब्द पृथ्वी किंवा बुद्धि, वाणी आदिक पर्यायवाची थीकः—"गो भू वाचस्त्विड़ा इला"—(अमर) एहि इड़ा अथवा वाक्क संग मनु वा मनक एक आओर विवादक सेहो शतपथमे उल्लेख भेटैत अछि जाहिमे दुनू अपन महत्त्वक लेल लड़ैत छथिः—"अथातोमनसश्च" इत्यादि (४ अध्याय, ५ ब्राह्मण) ऋग्वेदमे इड़ाकेँ धी, बुद्धिक साधन करयवाली, मनुष्यकेँ चेतना प्रदान करयवाली कहल गेल अछि। पछिला समयमे संभवतः इड़ाकेँ पृथ्वी आदिसँ सम्बद्ध कऽ देल गेल हो, परंच ऋग्वेद ५-५-८ मे इड़ा आ सरस्वतीक संग महीक अलग उल्लेख स्पष्ट छैक। "इड़ा सरस्वती मही तिस्रोदेवी मयोभुवमः" सँ ज्ञात होइत छैक जे महीसँ इड़ा भिन्न अछि। इड़ाकेँ मेधसवाहिनी नाड़ी सेहो कहल गेल छैक।

अनुमान कएल जा सकैत अछि जे बुद्धिक विकास, राज्य-स्थापना इत्यादि

इड़ाक प्रभावेसँ मनु केलनि। फेर तँ इड़ा पर सेहो अधिकार करैक चेष्टाक कारण मनुकेँ देवगणक कोपभाजन होमय पड़लनि। 'तद्वै देवानां आग आस' (७-४ शतपथ)। एहि अपराधक कारण हुनका दण्ड भोगय पड़लनि—''तंरुद्रोऽभ्यावत्य विव्याध'' (७-४ शतपथ) इड़ा देवगणक स्वसा छलि, मनुष्यकेँ चेतना प्रदान करयवाली छलि, एहि लेल यज्ञ सभमे इड़ा-कर्म होइछ। ई इड़ाक बुद्धिवाद श्रद्धा आ मनुक बीच व्यवधान बनबयमे सहायक होइत अछि। फेर बुद्धिवादक विकासमे, अधिक सुखक खोजमे दुख भेटब स्वाभाविक छैक। ई आख्यान एतेक प्राचीन अछि जे इतिहासमे रूपकक सेहो अद्‌भुत मिश्रण भऽ गेल अछि। तेँ मनु, श्रद्धा आ इड़ा इत्यादि अपन ऐतिहासिक अस्तित्व रखैत सांकेतिक अर्थकेँ सेहो अभिव्यक्त करथि तँ हमरा कोनो आपत्ति नहि। मनु अर्थात् मनक दुनू पक्ष हृदय आ मस्तिष्कक सम्बंध क्रमशः श्रद्धा आ इड़ा सँ सेहो सरलता सँ लगि जाइत अछि। 'श्रद्धां हृदय्य याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु!' (ऋग्वेद १०-१५१-४) एहि सभक अधार पर 'कामायनी'क कथा-सृष्टि भेल अछि। हँ, 'कामायनी'क कथा-शृंखला मिलयबाक लेल कतहु-कतहु थोड़ बहुत कल्पनाकेँ सेहो काजमे लऽ आनक अधिकार हम नहि छोड़ि सकलहुँ अछि।

—जयशंकर प्रसाद

आत्म स्वीकृति

हिन्दी कविताक इतिहास मे छायावाद नामक एक अभिजात काव्य प्रवृत्तिक जन्म भेल। ओ तत्कालीन गीतक एक अनिवार्य परिणति छल। जयशंकर प्रसाद छायावादक एक समर्थ, श्रेष्ठ आ अप्रतिम गीतकार-कवि छलाह। छायावादमे महाकाव्यक स्वरूप-विधानक आधार पर कोनो महाकाव्यक रचना नहि भेल। मुदा आलोचकक एक वर्ग मानैत रहल जे निरालाक 'राम की शक्ति पूजा' आओर जयशंकर प्रसादक 'कामायनी' महाकाव्यात्मक गरिमा सँ भास्वर गीत-कविता अछि।

'कामायनी' मे कहल गेल जे मनु भारतीय इतिहासक आदि पुरुष छथि। जल-प्रलयक पश्चात श्रद्धा आ मनुक सहयोगसँ मानवताक विकास भेल। 'कामायनी' मे श्रद्धा आ मनुक मिलन सँ ओहि निर्जन प्रदेशमे उजड़ल सृष्टिकेँ पुनः आरम्भ करबाक घटनाकेँ सांगोपांग कथाक द्वारा सृजित कएल गेलअछि। तेँ एहि कथा-सूत्रकेँ जोड़बाक लेल श्रद्धा आ मनुक अतिरिक्त इड़ा आओर मानवक प्रवेशक द्वारा कथा-विस्तार कएल गेल अछि। ई सब पात्र अभिजात वर्गक छथि। स्पष्टतः एहि विलक्षण कथासूत्रक अनुरूप कामायनीक भाषा सेहो अत्यंत प्रांजल, मनोभावपूर्ण, कमनीय एवं संस्कृतनिष्ठ अछि।

'कामायनी'क अनुवाद स्वतः एक कठिन मुदा आह्लादक अछि। जल-प्रलय आ ओकर बाद मनु-श्रद्धाक मिलनसँ सृष्टिक अवतरण, इड़ाक प्रसंग द्वारा साम्राज्य-संवर्द्धन तथा मानवक सान्निध्यमे सृष्टिक विस्तारक परिणतिक लेल एकर भाषा अथवा कही जे अंतर्वस्तुक अनुरूप प्रभावी शिल्पक सरंचना भेल अछि। प्रसादजीक भाषा-शिल्प-शब्द-गठन, बिम्ब-विधान, प्रतीक-विन्यास, अलंकार योजना आदि अत्यंत विलक्षण अछि। एकर भाषान्तर-भावानुवाद तँ स्वतः एक अद्‌भुत रचना-कर्मलगैत अछि। जहि कोमल भावभूमि पर ई काव्य-कृति रचित आ संगठित अछि ओहि कोमलताक आत्म साक्षात्कार केने बिना एकर अनुवाद प्रायः कठिन छल। तेँ पहिने एहि संपूर्ण कथाकेँ मनमे अंतर्लीन केलाक बादे एकर अनुवाद संभव भेल। प्रसादक भाषा-शैलीक प्रसादत्व, महाकाव्यत्व एवं आभिजात्यकेँ कोनो साधारण रूपसँ व्यक्त करनाए प्रायः असंभव अछि।

हम एहि अनुवादमे अपनेक अनुवाद हेतु अनुबंधक आधार ग्रहण कएने छी। हम अपनेक कथनक मर्यादा रखैत एहि अनुवादकेँ सुबोधगम्यता आ समुचित अभिव्यक्तिसँ समझौता केने बिना मूलनिष्ठ रखने छी।

ई ध्यातव्य अछि जे हिंदी जकाँ मैथिलीमे सेहो संस्कृतक तत्सम शब्द स्वीकृत अछि। तेँ एहि अनुवाद में जतय आवश्यक भेल अछि, हम तत्सम शब्दक प्रयोग यथावत रखने छी। स्पष्ट: मूल कविताक तत्सम शब्दकेँ प्रसंगानुसार अविकल रखने छी। आवश्यक भेला पर हम मूल कविताक कतओक शब्दकेँ एहि लेल रखने छी जे ओहि शब्दकेँ बदलि देलासँ मूल अर्थक कोमलता, अर्थवत्ता आ प्रासंगिकताक टुटैक आशंका नहि हो।

हम साहित्य अकादेमीक अभारी छी जे ओ हमरा एहि अनुवादक कार्यभार देल आ हमरा एकर योग्य मानलक।

शान्ति सुमन

चिन्ता

हिमगिरिक उच्च शिखर पर,
बैसि शिलाकेर शीतल छाँह;
एक पुरुष, भीजल नयन सँ,
देखि रहल छल प्रलह-प्रवाह!

नीचाँ जल छल, ऊपर हिमछल
एक तरल छल एक सघन;
एकहितत्त्वकेर प्रधानता
कही ओकरा जड़ वा चेतन।

दूर-दूर तक पसरल छल हिम
स्तब्ध ओकरे हृदय-समान;
नीरवता सन शिला-चरण सँ
टकराकऽ घुरैत पवमान।

तरूण तपस्वी सन ओ बैसल
साधन करैत सुर-श्मशान;
नीचाँ प्रलय सिंधु लहरिकेर,
होइत छल सकरुण अवसान।

ओही तपस्वी सन नमगर छल
ठाढ़ देवदारु दुइ चारि पड़ल;
भेल हिम-धवल जेना पाथर
ठिठुरि-ठिठुरि कऽ रहल अड़ल।

अवयवक दृढ़ माँसपेशी सब,
ऊर्जस्वित छल वीर्य अपार;
स्फीत शिरासभ स्वस्थ रक्त केर
होइत छल जहिमे संचार।

चिन्तातुर देह भऽ रहल
पौरुष जाहिमे ओत-प्रोत;
ओने उपेक्षामय यौवनकेर
बहएत भीतर मधुमय स्रोत।

बन्हल महावट सँ नाह छल
आब सूखल में पड़ल रहल;
ससरि गेल छल ओ जल-प्लावन,
आओर मही निकलय लागल।

निकलि रहल छल मर्म वेदना,
करुणा विकल कहिनी सन;
ओतय एकसरि प्रकृति सुनि रहल
हँसइत जकाँ, पहिचानल-सन।

''अओ चिन्ताकेर पहिल रेख
हे विश्व-वनकेर व्याली;
ज्वालामुखी स्फोटक भीषण
प्रथम कम्पसन मतवाली!

हे अभावक चपल बालिके,
हे ललाटक खल लेखा!
हरल-भरल सन दौड़ धूप, अओ
जल-मायाकेर चल रेखा!

एहि ग्रह कक्षकेर हलचल! हे,
तरल गरलकेर लघु लहरि;

जरा अमर जीवनक, आओर नहि
किछु सुनयवाली, गै बहिर!

हे व्याधिक सूत्रधारिणी!
हे आधि, मधुमय अभिशाप!
हृदय-गगनमे धूमकेतु सन,
पुण्य सृष्टिमे सुन्दर पाप।

मनन करयबह तोँ कतेक?
ओहि निश्चिन्त जातिकेर जीव;
अमर मरबऽ की? तोँ कतेक
दऽरहल छऽ गहीर नीव।

आह? घेरत हृदय लहलह
खेत पर करका-घन सन;
रहत नुकाएल अंतरतम मे
सबहक तोँ निगूढ़ धन सन।

बुद्धि, मनीषा, मति, आशा, चिन्ता
कतेक तोहर छऽ नाम!
हे पाप छऽ तोँ, जाह चलि जाह
एतय नहि किछु तोहर काम।

विस्मृति आउ, अवसाद घेरि लेऽ
नीरवता! बस चुप कए देऽ
चेतनता चलि जो, जड़तासँ
आइ शून्य हमर भरि देऽ।

''चिन्ता करैत छी हम जतेक
ओहि अतीतक, ओहि सुखकेर;
ओतबे अनंतमे बनएत
जाइछ रेखा सभ दुख केर।

आह सर्गक अग्रदूत! तोँ
असफल भेलह, विलीन भेलह।
भक्षक वा रक्षक, जे बुझह
खाली अपने मीन भेलह।

हे अन्हड़सब! ओ बिजलीकेर
दिवा-रात्रि तोहर नर्त्तन;
ओहि वासनाकेर उपासना,
ओ तोहर प्रत्यावर्त्तन।

मणिदीपकेर अंधकारमय
हे निराशपूर्ण भविष्य!
देवदम्भक महामेघ मे
सभ किछिओ बनि गेल हविष्य।

हे अमरताक चमकैत
पुतरासब! तोहर ओ जयनाद;
काँपि रहल अछि आइ प्रतिध्वनि
बनि कय जेना दीन विषाद।

प्रकृति रहल दुर्जेय पराजित
हम सब छलहुँ विसरल मदमे
सुद्धा छल, हँ बहइत केवल
सब विलासिताक नदमे।

ओ सब डुबल, डुबल हुनकर
विभव, गेल बनि पारावार;
उमड़ि रहल अछि देवक सुख पर
दुख जलधिकेर नाद अपार।''

''ओ उन्मत्त विलास भेल की?
स्वप्न रहल वा छलना छल!

देव सृष्टिक सुख विभावरी
तारावलिक कलना छल।

चलएत छल सुरभित अंचल सँ
जीवनकेर मधुमय निश्वास;
कोलाहलमे मुखरित होइत
देव जातिक सुख-विश्वास।

सुख, मात्र सुखक ओ संग्रह
केन्द्रीभूत भेल एतेक;
छाया पथमे नव तुषारक
सघन मिलन होएत जतेक।

सब किछु छल स्वायत्त, विश्वक
बल, वैभव, आनन्द अपार;
उद्वेलित लहरिसँ होइत, ओहि
समृद्धिक सुख-संचार।

कीर्ति, दीप्ति, शोभा छल नचइत
अरुण किरन सन चारू ओर;
सप्तसिन्धुक तरल कणमे,
द्रुमदलमे, आनन्द-विभोर।

शक्ति रहल हँ शक्ति, प्रकृतिछल
पद-तल मे विनम्र विश्रांत
कँपएत धरणी, ओहि चरण सँ
भऽ कअ् प्रतिदिने आक्रांत!

स्वयं देव छलहुँ हम सब, तँ पुनि
किए नहि विशृंखल होइत सृष्टि,
हे, अचानक भेल एहि सँ
कठोर आपदा सबहक वृष्टि।

गेल, सभ किछु गेल, मधुरतम
सुरबाला सबहक शृंगार;
उषा ज्योत्सना सन, यौवन-स्मित,
मधुप सदृश निश्चिंत विहार।

भरल वासना-सरिताकेर ओ
केहन छल मदमत्त प्रवाह;
प्रलय-जलधि मे जकर संगम
देखि हृदय छल उठल कराहि!''

''चिर किशोर-वय, नित्य विलासी,
सुरभित जाहि सँ रहल दिगंत;
आइ तिरोहित भेल कतय ओ
मधुसँ पूर्व अनन्त वसन्त?

कुसुमित कुन्ज मे ओ पुलकित
प्रेमालिंगन भेल विहीन;
मौन भेल अछि तान सभ मूर्च्छित
आओर नहि आब सुनि पड़इछ बीन।

आब नहि कपोल पर छाया सन
पड़एत मुखक सुरभित भाफ;
भुजमूल मे, शिथिल वसन केर
व्यस्त नहि आब होएत अछि माप।

कंकन क्वनित, रणित नूपुर छल
हिलएत छल छाती पर हार;
मुखरित छल कलरव, गीत मे
स्वर-लयकेर होइत अभिसार।

सौरभ सँ दिगंत पूरित छल
अन्तरिक्ष आलोक-अधीर;

सभ मे एक अचेतन गति छल
जाहि सँ पिछड़ल रहल समीर!

ओ अनंग पीड़ा अनुभव सन
अंगभंगि सभक नर्त्तन;
मधुकरक मरंद-उत्सव सन
मदिर भाव सँ आवर्त्तन।

सुरा सुरभिमय देह अरूण ओ
नयन भरल आलस अनुराग;
कल कपोल जतय विचरय छल
कल्पवृक्षकेर पीत पराग।

विकल वासनाक प्रतिनिधि ओ
सब मुरझाएल चलि गेल;
आह! जरल अपन ज्वाला सँ
फेर ओ जलमे गलल गेल।''

''हे उपेक्षाभरल अमरता!
हे अतृप्ति! निर्बाध विलास!
द्विधारहित अपलक नयनकेर
भूख भरल दर्शनक पियास!

बिछुड़ल तोहर सभ आलिंगन,
नहि पुलक स्पर्शक पता रहल;
मधुमय चुम्बनक कातरता
आइ नहि मुख कैं सता रहल।

रत्न सौधक वातायन, जाहि मे
आबय मधुमदिर समीर;
टकराइत होयत आब ओहिमे
तिमिंगलक भीड़ अधीर।

देवकामिनीकेर नयन सँ
जतय नील नलिनक सृष्टि;
होइत छल, आब ओतय भऽ रहल
प्रलयकारिणी भीषण वृष्टि।

ओ अम्लान कुसुम सुरभित,
मणि-रचित मनोहर माला;
बनल शृंखला, जकड़ल जाहिमे
विलासिनी सुरबाला।

देव-यजनक पशु यज्ञकेर
ओ पूर्णाहुतिक ज्वाला;
जलनिधि मे बनि जरएत कोना
आइ लहरिकेर माला।

हुनका देखि के कानल एना
अन्तरिक्ष मे बैसि अधीर!
व्यस्त बरसय लागल अश्रुमय
ई प्रालेय हलाहल नीर!

हहाकार भेल क्रन्दनमय
कठिन कुलिश होइत छल चूर;
भेल दिगन्त बधिर, भीषण रव
बेर-बेर होएत छल क्रूर।

दिग्दाह सँ धूम उठय वा
उठय क्षितिज तट केर जलधर!
सघन गगन मे भीम प्रकंपन,
झटक के कारण अन्हड़।

अंधकार में मलिन मित्रकेर
धुमिल आभा भेल लीन;
व्यस्त छला वरुण, सघन कालिमा
स्तर-स्तर जमैत भेल पीन।

पंचभूतकेर भैरव मिश्रण,
शंपासबहक शकल-निपात;
उल्का लऽ कअ् अमर शक्तिसभ
ताकि रहल जेना हेराएल प्रात।

बेर-बेर ओहि भीषण रव सँ
कँपइत धरती देखि विशेष;
मानु नील व्योम उतरल होअ
आलिंगन केर हेतु अशेष।

ओमहर गरजैत सिन्धु लहरिसब
कुटिल कालक जाल जकाँ;
आबि रहल अछि फेन उगलएत
फन पसारने व्याल जकाँ।

धँसैत धरा, धधकएत ज्वाला,
ज्वालामुखी सभक निश्वास;
आओर संकुचित क्रमशः ओकर
अवयवक होइत छल ह्रास।

सबल तरंगाघात सँ ओहि
क्रुद्ध सिन्धुकेर, विचलित सन;
व्यस्त महाकच्छप सन धरणी,
ऊभ-चुभ छल विकलित सन।

बढ़य लगल विलास वेग सन
ओ अति भैरव जल संघात;
तरल तिमिर सँ प्रलय पवनकेर
होएत आलिंगन, प्रतिघात।

बेला क्षण-क्षण निकट आबि रहल
क्षितिज क्षीण, पुनि लीन भेल;
उदधि डुबाकए अखिल धरा कँ
बस मर्यादा हीन भेल।

करका क्रन्दन करइत खसइत
आओर थकुचब छल सभकेर;
पंचभूतकेर ई ताण्डवमय
नृत्य भऽ रहल छल कहियाकेर।''

''एक नाह छल, आओर नहि ओहि मे
लगइत लग्गा ओ पतवार;
तरल तरंग मे उठैत-खसैत
बहइत बतही बारम्बार!

लागि रहल छल प्रबल हिलोर;
धूमिल तट केर पता नहि छल;
कातरता सँ भरल निराशा
देखि नियति पथ ओतय बनल।

लहरि व्योमकेँ चुमएत उठइत;
चपला सभ असंख्य नचइत।
गरल जलदकेर ठाढ़ झड़ी मे
बुन्न अपन संसृति रचइत।

चपला ओहि जलधि विश्वमे
स्वयं चमत्कृत होइत छल
जेना विराट बाड़व ज्वाला सभ
खंड-खंड भऽ कनैत छल।

जलनिधिक तलवासी जलचर
विकल उबियाकऽ हेलैत
भेल विलोड़ित गृह, तखन प्राणी
के! कतय! कखन सुख पबैत?

घनीभूत भऽउठल पवन पुनि
साँसक गति होइत रुद्ध;
आओर चेतना विलखैत छल
दृष्टि विफल होएत छल क्रुद्ध।

ओहि विराट् आलोड़नमे, ग्रह
तारा बुदबुद सन लगैत;
प्रखर प्रलय पावसमे जगमग
ज्योतिरिंगन सन जगैत।

पहर दिवस बीतल अतेक
एकरा के बता सकत!
एकर सूचक उपकरण केर
चेन्ह नहि केओ पाबि सकत।

कारी शासन-चक्र मृत्युकेर
कहिया धरि चलल नहि स्मरण रहल;
महामत्स्यक एक झाँट
दीन पोतकेर मरण रहल।

किन्तु वएह तँ आनि टकरौलक
एहि उत्तर-गिरिकेर शिर सँ,
देवसृष्टिक ध्वंस अचानक
लागल साँस लेबस फेरसँ।

आइ अमरताकेर जीवित छी
हम ओ भीषण जर्जर दम्भ,
आह सर्गक प्रथम अंककेर
अधम पात्र मय सन विष्कंभ।''

''ओ जीवनकेर मरु मरीचिका
कायरताक अलस विषाद।
हे पुरातन अमृत! अगतिमय
मोहमुग्ध जर्जर अवसाद।

मौन! नाश! विध्वंस! अन्हार!
शून्य बनल जे प्रकट अभाव,
वएह सत्य अछि हे अमरता!
आब एतय कतय अहाँकेँ ठाँव।

मृत्यु, हे चिर निद्रा! तोहर,
अंक हिमानी सन शीतल;
तोँ अनंत मे लहरि बनबैत
काल-जलधिक सन हलचल।

महानृत्यक विषम सम, हे
अखिल स्पंदनक तोँ माप;
तोरे तँ विभूति बनएत छै
सृष्टि सदा भऽकऽ अभिशाप।

अन्हारकेर अट्टहास सन
मुखरित सतत चिरंतन सत्य;
छिपल सृष्टिक कण-कण मे तोँ
ई सुन्नर रहस्य अछि नित्य।

जीवन तोहर क्षुद्र अंश थीक
व्यक्त नील घन-मालामे;
सौदामिनी-संधि सन सुन्दर
छन भरि रहल उजियारामे।''

पवन पीबि रहल छल शब्दकेँ
निर्जनताकेर उखड़ल साँस;
टकराइत छल, क्षीन प्रतिध्वनि
बनल हिमशिलाकेर पास।

धू-धू करइत नाचि रहल छल
अनस्तित्वक तांडव नृत्य;
आकर्षण विहीन विधुरकण
बनल भरिया छल भृत्य।

मृत्यु जकाँ शीतल निराश
आलिंगन पाबैत छल दृष्टि;

परम व्योमसँ भौतिक कण सन
सघन कुहेसकेर छल वृष्टि।

भाफ बनल उजड़ैत जाइत छल
वा ओ भीषण जल संघात;
सौर चक्र मे आवर्तन छल
प्रलय निशाकेर होइत प्रात!

आशा

उषा सोनहुल तीर बरसइत
जयलक्ष्मी सन उदित भेली;
कालरात्रि सेहो ओने पराजित
जलमे अन्तर्निहित भेली।

ओ विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृतिकेर
आइ लागल हँसय फेर सँ;
वर्षा बीतल, भेल सृष्टिमे
शरद-विकास नव सिर सँ।

नव कोमल आलोक छिड़िआएल
हिम-संसृति पर भरि अनुराग;
सित सरोज पर क्रीड़ा करइत
जेना मधुमय पिंग पराग।

हिम-आच्छादन धिरे-धिरे
हटय लगल धरातल सँ;
जागल वनस्पति अलसाएल
मुख धोइत शीतल जल सँ।

नेत्र निमीलन करइत मानु
प्रकृति प्रबुद्ध लगल होमय;
जलधि लहरि सबहक अंगेठी
बेर-बेर जाइछ सूतय।

सिंधु-सेज पर आब धरा वधू
कने संकुचित बैसल सन;
प्रलय निशाक हलचल स्मृतिमे
मान केने सन, ऐंठल सन।

मनु देखलनि ओ अतिरंजित
विजन विश्वकेर नव एकांत;
जेना सूतल होए कोलाहल
हिम शीतल जड़ता सन श्रांत।

महा चषक छल इन्द्रनील मणि
सोम रहित उनटा लटकल;
आइ पवन मृदु साँस लऽ रहल
जेना गेल खटका बीतल।

ओ विराट छल हेम घोरइत
भरैक लेल आइ नवरंग;
के? भेल ई प्रश्न अचानक
आओर कुतूहल केर छल संग!

''विश्वदेव, सविता वा पूषा
सोम, मरुत, चंचल पवमान;
वरुण आदि सब घुमि रहल छथि
ककर शासन मे अम्लान?

ककर छल भ्रू-भंग प्रलय सन
जहिमे ई सब रहल विकल;
हे! प्रकृतिक शक्ति-चेन्हई
तइयो कतेक रहल निबल!

विकल भेल सन काँपि रहल छल
सकल भूत चेतन समुदाय;

केहन अधलाह दशा छल हुनकर
ओ छला विवश आओर निरुपाय।

देव हम नहि छलहुँ आओर नञ् ई छथि
परिवर्तन केर पुतरा सब कोय
हँ, कि गर्व-रथ मे तुरंग सन
जतेक जे चाहएजोति लेअ।"

"महानील एहि परम व्योम मे,
अंतरिक्ष मे ज्योतिर्मान;
ग्रह, नक्षत्र, आओर विद्युतकण
ककर कैरत सन संधान!

नुका जाइत अछि आ निकलैत
आकर्षण मे खिचल;
तृण, वीरुध लहलहा रहल
ककर रस सँ सिँचल?

सिर नीचाँ कऽ ककर सत्ता
सब करैत स्वीकार एतय;
सदा मौन भऽ प्रवचन करैत
जकर, ओ अस्तित्व कतय?

हे अनन्त रमणीय! के अहाँ?
ई हम कोना कहि सकब;
कोना छी? की छी? एकर तँ
भार विचार नञ् सहि सकत।

हे विराट्! हे विश्वदेव! अहँ
किछु छी, एहन ओइछ भान"—
मंद, गंभीर, धीर स्वर संयुत
इहए कऽ रहल सागर गान।

"ई की मधुर स्वप्न सन झिलमिल
सदय हृदय मे अधिक अधीर;
व्याकुलता सन व्यक्त भऽ रहल
आशा बनि कऽ प्राण समीर!

ई कतेक स्पृहणीय बनि गेल
मधुर जागरण सन छविमान;
स्मितिक लहरि सन उठैत अछि
जेना नचइत मधुमय तान।

जीवन! जीवनकेर पुकार अछि
खेलि रहल अछि शीतल दाह;
नत होइत ककर चरणमे
नव प्रभातकेर शुभ उत्साह।

हम छी, ई वरदान सदृश किए
लागल गुँजय कान मे!
हम सेहो कहय लागलहुँ, 'हम रही'
शाश्वत नभकेर गान मे।

ई संकेत कऽ रहल सत्ता
ककर सरल विकासमयी;
किए आइ जीवनक लालसा
एतेक प्रखर विलासमयी?

तँ हम की पुनि जिबी आओर सेहो
जीकेँ की करैक होएत?
देव! बता दिअ, अमर वेदना
लऽ कऽ कहिया मरन होएत?"

एक यवनिका हरल, पवन सँ
प्रेरित माया-पट जहिना;

आओर आवरण-मुक्त प्रकृति छल
हरल-भरल तइयो ओहिना।

स्वर्ण शालि केर कलम गुच्छ छल
दूर-दूर धरि पसरि रहल;
शरद इन्दिराक मंदिर केर
मानु कोनो गैल रहल!

विश्वकल्पना सन ऊँच ओ
सुख शीतल सन्तोष निदान;
आ अचलाकेर डुबैत सन
अवलंबन मणि रत्न निधान।

अचल हिमालयकेर शोभनतम
लता कलित शुचि सानु शरीर;
सुख स्वप्न देखैत निद्रामे
जेना पुलकित भेल अधीर।

उमड़ि रहल जकर चरण मे
नीरवता केर विमल विभूति;
धारा सब शीतल झरना केर
छिड़िआबय जीवन अनुभूति।

ओहि असीम नील अंचलमे
देखि ककरो मृदु मुस्कान;
मानु हँसी हिमालयकेर अछि
फुटि चलल करैत कलगान।

शिला संधि सबमे टकराकऽ
पवन भरि रहल छल गुंजार;
ओहि दुर्भेद्य अचल दृढ़ताकेर
करैत चारण जकाँ प्रचार।

घनमाला केर सुन्दर संध्या
ओढ़ने रंग-विरंगी छीट;
गगन चुम्बिनी शैल-श्रेणि सब
पहिरने रहय तुषार किरीट।

विश्व मौन, गौरव, महत्त्व केर
प्रतिनिधि सब सन भरल विभा;
एहि अनन्त प्रांगणमे मानु
जोड़ि रहल अछि मौन सभा।

ओ अनन्त नीलिमा व्योम केर
जड़ता सन जे शान्त रहल;
दूर-दूर ऊँच सँ ऊँच
निज अभाव मे भ्रान्त रहल।

ओकरा देखबैत जगतीकेर सुख
हँसी आओर उल्लास अजान;
मानु तुंग तरंग विश्व केर
हिमगिरिक ओ सुढ़र उठान।

कोर जकाँ जे छल अनन्तकेर
विस्तृत गुहा ओतय रमणीय;
ओहिमे मनु स्थान बनौलनि
सुन्नर, स्वच्छ आओर वरणीय।

पहिल संचित अग्नि जरि रहल
पास मलिन द्युति रविकर सँ;
शक्ति आ जागरण चेन्ह सन
धधकय लगल आब फेर सँ।

जरय लगल निरन्तर हुनकर
अग्निहोत्र सागरकेर तीर;
मनु तप मे जीवन अपन
केलनि समर्पण भऽ कऽ धीर।

सुर संस्कृति सजग भेल फेरसँ
देव यजन केर वर माया;
हुनका पर अपन पसारय लागल
कर्ममयी शीतल छाया।

उठलथि स्वस्थ मनु जेना उठैत अछि
क्षितिज बीच अरुणोदय कांत;
लगलथि देखय लुब्ध नयन सँ
प्रकृति विभूति मनोहर शान्त।

पाक यज्ञ करब निश्चित कए
लगलथि शालि सब कैँ चुनय;
वह्नि ज्वाला सेहो अपन ओने
लगल धूम पट कैँ बुनय।

वृक्षसभक शुष्क डारि सँ
अग्नि अर्चा भेल समिद्ध;
आहुतिकेर नव धूम गंध सँ
नभ कानन भऽ गेल समृद्ध।

आओर सोचिकए अपन मन मे
जेना हम बँचल छी,
की आश्चर्य आओर कोनो
जीवन लीला रचल अछि।

अग्निहोत्र अवशिष्ट अन्न किछु
कतओ दूर रखि अबैत छलाह;
होएत एहि सँ तृप्त अपरिचित
समझि सहज सुख पबैत छलाह।

गहन पाठ दुखक आब पढ़ि कैँ
सहानुभूति समझैत छलाह;

नीरवता केर गहिराइमे
मगन एकसर रहैत छलाह।

मनन करैत रहथि ओ बैसल
ज्वलित अग्निकेर पास ओतय;
जेना एक सजीव तपस्या
पतझड़ मे करइत वास रहय।

धड़कन हृदयमे तइयो कखनहुँ
होइत, चिन्ता कखनहुँ नवीन;
लागल बीतय हुनकर एहिना
जीवन अस्थिर दिन-दिन दीन।

नित नव प्रश्न उपस्थित छल
अंधकारकेर माया मे;
रंग बदलैत जे पल-पल मे
ओहि विराटकेर छाया मे।

उत्तर भेटइछ अर्द्धप्रस्फुटित
रहलि सकर्मक प्रकृति समस्त;
निज अस्तित्व बना राखयमे
भेल आइ जीवन छल व्यस्त।

नियमित तप मे निरत भेला मनु
अपन कर्म लगलाह करय;
विश्व रंग मे कर्मजाल केर
सूत्र लगल घन भ' घेरय।

ओहि एकांत नियति शासनमे
चललाह विवश धिरे-धिरे;
लहरिक एक शांत स्पन्दन
होइछ जेना सागर तीरे।

तन्द्रामे विजन जगत केर
चलैत तखन छल सून सपन;
ग्रह पथक आलोक वृत्त सँ
काल जाल तनैत अपन।

अबैत छल रजनी प्रहर दिवस
चलि जाइत संदेश-विहीन;
एक विरागपूर्ण संसृतिमे
निष्फल जेना आरंभ नवीन।

चन्द्र बिम्ब सन धवल मनोहर
अंकित सुन्दर स्वच्छ निशीथ;
शीतल पवन गबइत जहिमे
पुलिकत भ' पावन उद्‌गीथ।

दूर-दूर नीचाँ विस्तृत छल
उर्मिल सागर व्यथित अधीर;
अन्तरिक्ष मे व्यस्त ओकरे सन
रहल चन्द्रिका निधि गंभीर।

खुलल ओहि रमणीय दृश्यमे
अलस चेतना केर आँखि;
हृदय कुसुमक खिलल अचानक
भीजल मधु सँ ओ पाँखि।

व्यक्त नील मे चल प्रकाश केर
कंपन सुख बनि बजैत छल;
एक अतीन्द्रिय स्वप्न लोक केर
मधुर रहस्य ओझराएत छल।

जगल अनादि वासना नव भ'
मधुर प्राकृतिक भूख समान;

चिर परिचित सन चाहि रहल छल
द्वन्द्व सुखद कऽकेँ अनुमान।

दिवारात्रि वा मित्र वरुणक
बालाकेर अक्षय शृंगार;
मिलन लगल हँसय जीवनकेर
उर्मिल सागरकेर ओहि पार।

संचित बल तप सँ संयम केर
आइ तृषित आ व्याकुल छल;
सून राज, रिक्तकेर ओ अधीर
तम अट्टहास कऽ उठल।

पुलकित धीर समीर परस सँ
श्रांत देह भ' गेल विकल;
ओझराएल आशाक अलक सँ
लहरि मधुगंध अधीर उठल।

विकल भऽ उठल छल मनुकेर मन
संवेदन सँ खाकेँ चोट;
संवेदन! जीवन जगती केँ
जे कटुता सँ दैत घोंटि।

"आह! कल्पनाक सुन्दर ई
जगत मधुर कतेक होइत!
सुख-स्वप्नकेर दल छाया मे
पुलकित भ' जगइत-सुतइत।

संवेदनकेर आओर हृदयकेर
ई संघर्ष नज् भ' सकैत;
फेर अभाव असफलताकेर
गाथा के कतय बकैत!

कखन धरि आओर एकसर? कहि दिअ
बाजू हे हमर जीवन?
ककरा सुनाएब कथा? कहू नञ्
निधि नहि खोलु व्यर्थ अपन!''

''हे रहस्य तम केर सुन्दरतम,
तारा कांति किरण रंजित!
व्यथित विश्वक विन्दु भरल
नव रस सब शीतल सात्विक।

आतप तापित जीवन सुखकेर
शान्तिमयी छायाकेर देश,
हे अनन्तकेर गणना, दैत
तोँ कतेक मधुमय संदेश!

आह शून्यते! चुप रहबा में
एतेक चतुर तोँ किए भेलह?
इन्द्रजाल जननी! रजनी तोँ
एतेक आब किए मधुर भेलह?''

''सिन्धु तट जखन एली कामना
लऽ संध्याकेर तारा दीप,
फाड़ि सोनहुली नूआ हुनकर
तोँ किए हँसैत छह हई प्रतीप?

एहि अनंत कारी शासन केर
जखनओ उच्छृंखल इतिहास,
अश्रु आ तम घोरि लिखि रहलि
तोँ सहसा करैत मृदु हास।

मृदुल मधुकरी विश्व कमलकेर
रजनी तोँ कोन कोना सँ—
अबैत चूमि-चूमि चलि जाइत
पढ़ल छ' कोन टोना सँ।

एतेक कोन दिगंत रेखामे
संचित कऽ सिसकी सन साँस,
एना हवा मे हकमि रहलि सन
चलल जा रहलि ककर पास।

किए विकल खिलखिलैत छ' तोँ
एतेक हँसी नञ् व्यर्थ पसार;
तुहिन कण, फेनिल लहरि मे
पसरि जेतैक फेर अन्हार।

घोघ उठाकऽ देखि मुसकैत
ककरा ठिठकैत सन अबैत;
कोनो भूल सन विजन गगनमे
ककरा स्मृति पथमे लैत?

नव पराग सन रजत कुसुमकेर
उड़ा नञ् दए तोँ एतेक धूलि;
एहि ज्योत्सनाकेर, अयि बावरी
तोँ एहिमे जयबह भूल।

पगली हँ सम्हारि लए कोना
छुटि गेल तोहर अंचल;
देखऽ छिड़िआएत अछि मणिराजी
हे उठबऽ बेसुध चंचल।

फाटल छल नील वसन की
ओ यौवनकेर मतवाली;
देखऽ, अकिंचन जगत लुटैत
तोहर छवि भोली भाली।

एहन अतुल अनंत विभवमे
किए जागि गेल तीव्र विराग?
वा बिसरल सन ताकि रहल किछु
वनक छातीकेर दाग!

''हमहूँ बिसरि गेल छी किछु
हँ स्मरण नहि होइछ, की छल!
प्रेम, वेदना, भ्रांति या कि की?
मन जाहि मे सुख सुतय छल!

पड़ल अचानक भेटय कतओ ओ
ओकरो नहि लुटाए दिअह;
देखऽ तोरो देबओ तोहर
भाग, नञ् ओकरा बिसरि जइयह।''

श्रद्धा

"के अहँ? संसृति-जलनिधि तीर
तरंग दल सँ फेकल मणि एक;
कऽ रहल निर्जनकेर चुपचाप
प्रभाकेर धारा सँ अभिषेक?

मधुर विश्रांत आओर एकान्त-
जगतकेर सोझाराएल रहस्य;
एक करुणामय सुन्दर मौन
आओर चंचल मनकेर आलस्य!''

सुनलनि मनु ई मधु गुंजार
मधुकरी जकाँ जखन सानन्द;
केने मुँह नीचा कमल समान
जेना कविक पहिल सुन्दर छन्द।

एक झटका सन लगल सहर्ष
लुटल सन के निरखय, लगल—
गाबि रहल ई सुन्दर संगीत
पुनि मौन नहि रहि सकल कुतूहल।

आओर ओ सुन्दर दृश्य देखल
नयनकेर इन्द्रजाल अभिराम;
कुसुम-वैभव मे लता जकाँ
चन्द्रिका सँ लपटल घनश्याम!

हृदय केर अनुकृति वाह्य उदार
एक लमहर काया उन्मुक्त;
मधु पवन क्रीड़ित जेना शिशु साल
सुशोभित भ' सौरभ उन्मुक्त।

कोमल गांधार देशकेर, नील
रोमवला मेषकेर चर्म;
झँपैत छल ओकर सुन्दर देह
बनि रहल छल ओ मृदु वर्म।

नील परिधान बीच सुकमार
खुलि रहल कोमल अधखुलल अंग;
खिलल हो फूल जेना बिजली केर
मेघ बनि बीच गुलाबी रंग।

आह! ओ मुख! पश्चिमकेर व्योम—
बीच घिरैत होय जखन घनश्याम;
ओकरा वेधि अरुण रवि मंडल
देखा पड़ैत होय छविधाम!

वा कि, नव इन्द्रनील लघु शिखर
फोड़ि कऽ धधकि रहल हो कान्त;
एक लघु ज्वालामुखी अचेत
वसन्ती रजनी मे अश्रांत।

घिरि रहल छल घुरमल केस
कान्ह पर आश्रित मुख केर पास;
नील घनशावक सन सुकमार
सुधा भरबालए विधुकेर पास।

आओर ओहि मुख पर ओ मुस्कान!
लाल नव पल्लव पर लऽ विश्राम;
सुरुज केर एक किरन अम्लान
बहुत अलसाएल हो अभिराम।

नित्य यौवन छविये सँ दीप्त
विश्वकेर करुण कामना मूर्त्ति;
परसकेर आकर्षण सँ पूर्ण
जेना प्रकट करैत जड़मे स्फूर्ति।

पहिल लेखा उषाकेर सुन्दर
माधुरी सँ भीजल भरि मोद;
जेना उठल सलज्ज मदभरल
भोरक तारक द्युतिकेर गोद।

कुसुम कानन अंचलमे मन्द
पवन प्रेरित सौरभ साकार;
रचित परमाणु पराग शरीर
ठाढ़ भऽ लऽ मधुकेर आधार।

आओर पड़ैत हो ओहि पर शुभ्र
नवल मधु-राका मनकेर साध;
हँसीकेर मद विह्वल प्रतिबिम्ब
मधुरिमा खेला जकाँ अबाध!

कहलनि मनु "नभ धरती बीच
बनल जीवन रहस्य निरूपाय;
जरैत एक उल्का सन भ्रान्त
शून्य मे फिरैत छी असहाय।

अभागल नहि बनल शैल निर्झर
गलि नहि सकल जे हिम खंड;
दौड़ि कऽ मिलल नहि सागर अंक
आह, ओहने छी पाखंड।

बुझौअलि सन अछि जीवन व्यस्त
ओकरा सोझराबय केर अभिमान;
कहैत अछि विस्मृतिकेर पथ
चलि रहल छी बनि कऽ अनजान।

दिन-राति बिसरिते जाइत
सजल अभिलाषा भरल अतीत;
बढ़ि रहल तिमिर गर्भ मे नित्य
दीन जीवनकेर ई संगीत।

की कहू, की हम छी उद्‌भ्रान्त?
नील गगनक विवरमे आज;
वायुक भटकल एक तरंग
शून्यताकेर उजड़ल सन राज।

अचेत स्तूप एक विस्मृतिकेर
ज्योतिकेर धुमिल सन प्रतिबिम्ब;
आओर जड़ताकेर जीवन-राशि
सफलताकेर संकलित विलम्ब।

के छी अहाँ वसन्तक दूत
विरस पतझड़ मे अति सुकमार!
सघन अन्हाड़मे बिजलीकेर रेख
तपनमे शीतलमंद बयार।

नखतकेर आशा किरन जकाँ
कोमल कविकेर हृदयक कान्त;
लघु लहरि दिव्य कल्पनाकेर
कऽ रहल मानस हलचल शान्त!''

आगन्तुक व्यक्ति लगल कहय
मेटबैत उत्कंठा सविशेष;
दऽ रहल हो कोकिल सानन्द
जेना सुमनकेँ मधुमय सन्देश:-

नव उत्साह भरल छल मनमे
सीख ली ललित कलाकेर ज्ञान;
एमहर रहि गंधर्वक देश
पिताकेर छी पिआरी सन्तान।

हमर अभ्यास घुमबाकेर
बढ़ल छल मुक्त नभ तल नित्य;
कुतूहल खोजि रहल छल व्यस्त
हृदय सत्ताकेर सुन्दर सत्य।

हिमगिरिदिस दृष्टि जखन जाइछ
करैत प्रश्न मन अधिक अधीर;
धराकेर ई सकुचन भयभीत
आह, केहन छै? की अछि पीर?

अपनहि मधुरिमा मे मौन
सुतल सन्देश एक महान;
संकेत छल करैत सजग भ'
चेतना मचलि उठल अनजान।

बढ़ल मन आओर चलल ई पैर
शैल मालावलिकेर सिंगार
ई देखि मेटल आँखिक भूख
अहा कतेक सुन्दर सम्भार।

सिन्धु अपार अचानक एक दिन
नग तल टकराबय लगल क्षुब्ध;
बिनु उपाय जीवन ई एकसर
आइ धरि घूमि रहल विश्रब्ध।

बलि केर अन्न एतय किछु देखल
भूत-हित-रत ककर ई दान!
एखन सजीव एने केओ अछि
भेल एहन मनमे अनुमान।

तपस्वी! किएक एतेक छी क्लान्त?
वेदनाकेर केहन ई वेग?
आह! कतेक अधिक हताश अहाँ
कहू ई केहन उद्वेग!

की नहि अछि अधीर हृदयमे
लालसा जीवनकेर निश्शेष?
वंचित कतहु न त्याग कऽ रहल
अहाँ कें, मन मे धरि सुन्दर वेश!

दुखक डर सँ अहाँ अज्ञात
जटिलता सबहक कऽ अनुमान;
झिझकि रहल छी काम सँ आइ
भविष्यत सँ बनिकें अनजान।

लीलामय आनन्द कऽ रहलि
महाचिति सजग भेल सन व्यक्त;
उन्मीलन अभिराम विश्वकेर
सभ होइत एहिमे अनुरक्त।

मंडित श्रेय काम मंगल सँ
सर्ग, इच्छाकेर अछि परिणाम;
ओकरा अहँ बिसरि तिरस्कृत कऽ
बनबय छी असफल भवधाम।

''दुखक पछिला रजनी बीच
सुखक नवल विकसैत प्रभात;
एक परदा ई झलमल नील
नुकेने अछि जहिमे सुखगात।

समझै छी शाप अहाँ जकरा
जगतकेर ज्वाला सबहक मूल;
ईशक ओ रहस्य वरदान
कहियो एकरा जाउ नहि भूल।

पीड़ा सँ व्यस्त विषमताकेर
भऽ रहल स्पंदित विश्व महान;
विकासक सत्य इएह दुख-सुख
इएह भूमाकेर मधुमय दान।

नित्य समरसताकेर अधिकार
उमड़ैत कारण जलधि समान;
व्यथा सँ नील लहरिक बीच
छिड़िआएत सुख मणिगण द्युतिमान।

विषाद सहित लगलाह कहय मनु-
''मधुर मारुत सन ई उच्छ्वास;
अधिक उत्साह तरंग अबाध
उठबैत मानसमे सविलास।

कतेक जीवन निरुपाय किन्तु
देखि लेने छी नहि संदेह;
परिणाम जकर निराशा अछि
सफलताकेर ओ कल्पित गेह।''

कहलनि आगन्तुक सस्नेह—
''हे, अहाँ एतेक भेलहुँ अधीर!
जीवनकेर दाव हारि बैसलहुँ
जकरा मरिकें जितय वीर।

जीवन सत्य केवल तप नहि
क्षणिक ई करुण दीन अवसाद;
तरल आकांक्षासँ अछि भरल
सुति रहल आशाकेर आह्लाद।

प्रकृतिकेर यौवनक सिंगार
करत कहियो नहि बासि फूल;
मिलत ओ जाकें अति शीघ्र
आह उत्सुक अछि हुनकर धूलि।

ई निर्मोक पुरातनताकेर
सहन करय नहि प्रकृति पल एक;
नित्य नूतनताकेर आनन्द
केने अछि परिवर्त्तनमे टेक।

सृष्टि युगकेर चटान पर
दऽ चलल पदचिह्न गम्भीर;
देव, गन्धर्व, असुर केर पाँति
करैत ओकर अनुसरण अधीर।

''एक अहाँ, विस्तृत भूखंड ई
प्रकृति विभव सँ भरल अमन्द;
कर्मक भोग, भोगकेर कर्म
इएह जड़केर चेतन आनन्द।

अहाँ कोना असहाय एकसर
यजन कऽ सकब? तुच्छ विचार!
तपस्वी! आकर्षणसँ हीन
कऽ सकल नहि आत्मविस्तार।

दबि रहल छी अपनहि बोझ
कतहु खोजैत सेहो नहि अवलम्ब;
सहचर बनिकऽ अहाँकेर की नहि
उऋण होअब हम बिना विलम्ब।

समर्पण लिअ सेवाकेर सार
सजल संसृतिकेर ई पतवार;
आइ सँ ई जीवन उत्सर्ग
एही पदतलमे विगत विकार।

दया, माया, ममता लिअ आइ
मधुरिमा लिअ, अगाध विश्वास;
हमर हृदय रत्ननिधि स्वच्छ
अहाँक लेल खुलल अछि पास।

संसृतिकेर मूल रहस्य बनु
अहीँ सँ पसरत ओ बेलि;
भरि जाए विश्वभरि सौरभ सँ
खेलु सुमनकेर सुन्दर खेल।

''आओर सुनैत नहि अहाँ ई की
विधाताकेर मंगल वरदान—
'शक्तिशाली छी, विजयी बनु'
विश्वमे गुँजि रहल जयगान।

हे अमृत संतान डरू जुनि
अग्रसर अछि मंगलमय वृद्धि;
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
आएत खिचल सकल समृद्धि।

देव असफलताकेर ध्वंस
प्रचुर उपकरण जुटाकेँ आज;
पड़ल अछि बनि मानव संपत्ति
पूर्ण होऽ मनकेर चेतन राज।

चेतनाकेर सुन्दर इतिहास
अखिल मानव भावक सत्य;
विश्वक हृदय-पटल पर दिव्य
अंकित होऽ अक्षर सँ नित्य।

कल्याणी सृष्टि विधाताकेर
सफल होऽ एहि भूतल पर पूर्ण;
पटय सागर, छितरय ग्रह-पुंज
आओर ज्वालामुखी होऽ सब चूर्ण।

ओकरा चिनगीजकाँ सदर्प
थकुचैत रहय ठाढ़ सानन्द;
आइ सँ मानवताकेर कीर्ति
अनिल, भू, जलमे रहय ने बन्द।

कतओक फूटय उत्स जलधिकेर
द्वीप, कच्छप डुबय-उतराय;
किन्तु ओ ठाढ़ रहय दृढ़ मूर्ति
अभ्युदयकेर कऽ रहलि उपाय।

विश्वकेर दुर्बलता बल बनय
पराजयकेर बढ़ैत व्यापार;
विलास मे हँसबैत रहय ओकरा
शक्तिकेर क्रीड़ामय संचार।

शक्तिक विद्युतकण, जे व्यस्त
विकल छितरल अछि, भ' निरुपाय;
समस्त समन्वय ओकर करय
विजयिनी मानवता भ' जाय!''

काम

जीवन वनकेर मधुमय वसन्त
ओ अन्तरिक्षकेर लहरिमे,
अहाँ चुपचाप एलहुँ कहिया
रजनीकेर पछिला पहरमे।

की अहाँकेँ देखिकेँ एना अबैत
मतवाली कोइली बाजल छल!
ओहि नीरवतामे अलसाएल
आँखि कली सभ खोलल छल?

जखन छलहुँ लीलासँ अहँ सीखि रहल
कोरक कोनमे छिपि जाएब!
तखन शिथिल सुरभि सँ धरणीमे
हलचल नहि भेल छल? साँच कहब।

अहाँ सरस हँसी जखन लिखैत छलहुँ
अपन, फूल गुच्छक अंचल मे;
कलकंठ अपन मिलबैत छलहुँ
झरनाकेर कोमल कल-कलमे।

ओ छल कतेक निश्चिन्त आह!
उल्लास, काकलीकेर स्वरमे!
आनन्द प्रतिध्वनि गुँजि रहल
जीवन दिगन्तकेर अम्बरमे।

चंचलतामे शिशु चित्रकार
कतेक आशा चित्रित करैत!
अस्पष्ट एक लिपि ज्योतिमयी
आँखिमे जीवनकेर भरैत।

लतिका घोघटसँ चितवनकेर
ओ कुसमु दुग्ध सन मधु धारा;
प्लावित करैत मन रहल अजिर
छल तुच्छ विश्व वैभव पूरा।

ओ फूल आ ओ हँसी रहल
ओ सौरभ, ओ निश्वास छनल;
हे ओ कलरव ओ संगीत
ओ कोलाहल एकांत बनल!''

किछु सोचि रहलाह कहैत-कहैत
लऽ कऽ निसाँस निराशाकेर;
मनु अपन मनकेर बात, रुकल
तइयो ने प्रगति अभिलाषा केर।

''ओ जगतीकेर नील आवरण
दुर्बोध नहि छऽ तोँ एतेक;
आँखिकेर होएत अवगुंठन
आलोक रूप बनत जतेक।

चलचक्र वरुणकेर ज्योति भरल
व्याकुल फेरी तोँ किए दैत?
ताराक फूल छितराएत अछि
अहाँक असफलता अछि लुटैत।

अछि झीमिरहल नवनील कुंज
कथा कुसुमक नहि बन्द भेल;
आमोद भरल अछि अन्तरिक्ष
हिम कणिके मकरन्द भेल।

एहि इन्दीवरसँ गंध भरल
बुनैत जाली मधुकेर धारा;
मन मधुकरकेर अनुरागमयी
बनि रहल मोहनीसन कारा

विश्राम कतय छै अणुसभकेँ
ई कृतिमय वेग भरल कतेक;
अछि अविराम कंपन नचैत
सजीव भेल उल्लास कतेक!

ओहि नृत्य शिथिल निश्वासकेर
अछि कतेक मोहमयी माया;
छनैत-छनैत जहि सँ समीर
अछि बनैत प्राणसभक छाया।

पूरितसन अछि अकास-रंध्र
ई सृष्टि गहन सन होइत अछि;
मुर्च्छित सुतैत आलोक सेहो
ई आँखि थकल सन कनैत अछि।

चंचल कृतिसभ सौन्दर्यमयी
बुनि कऽ रहस्य अछि नाचि रहल;
ओतहि रोकि हमर आँखिकेँ
आगाँ बढ़वामे जाँचि रहल।

जे किछियो छी हम देखि रहल
की ओ छाया ओझरौट सभ अछि?
एहि परदामे सुन्दरताकेर
की धरल अन्य कोनो धन अछि?

हमर अक्षयनिधि! तोँ की छह
जानि सकब की नहि तोरा?
ओझरौट प्राणक सूतकेर
सुलझनकेर समझी मान तोरा।

अलसाएल माधवी निशाकेर
अलकमे नुकाएल तारा सन;
की सुन्न मरु अंचलमे छह
अन्त:सलिलाकेर धारा सन?

श्रुतिसभमे चुप्पे-चुप्पेसँ
मधुधारा केओ घोरि रहल;
एहि परदामे नीरवता केर
केओ किछु जेना बाजि रहल।

अछि झिलमिल सन परस मलयकेर
संज्ञाकेँ आओर सुतबय अछि;
आँखि बन्द केने पुलकित भऽ
तन्द्राकेँ पास बजबय अछि।

चंचल कतेक ई व्रीड़ा अछि
विभ्रमसँ घोघट खिचि रहल;
नुकेने पर स्वयं मृदुल करसँ
हमर आँखि किए मिचि रहल।

श्याम घटा उद्‌बुद्ध क्षितिजकेर
एहि उदित शुक्रकेर छायामे;
रहस्य लेने के ऊषासन
सुतैत किरनकेर कायामे!

किरनक ऊपर उठैत अछि
कोमल किसलय केर छाजन सन;
जेना किछु दूर बजय वंशी
रंध्रमे स्वरकेर मधु निस्वन।

'खोलु खोलु सब कहैत अछि
छवि देखब जीवनधन केर;'
बनैत जाएत स्वयं आवरण
अछि भीड़ लगि रहल दर्शनकेर।

खुलि जाए कतहु चाननि सन
अवगुंठन आइ सँवरैत जकाँ;
कल्लोल भरल जहिमे अनन्त
लहरि मे मस्त विचरैत जकाँ।

पटकि रहल अपन फेनिल फन
मणिराशिक जाल लुटबैत जकाँ;
उन्निद्र देखाए दैत अछि
किछु गबैत भेल उन्मत्त जकाँ।''

''हम ने सम्हारब, जे किछु होऽ
एहि मधुर भारकेँ जीवनक;
कतेक अबैत अछि आबय दिअ
बाधा सभ दम संयम बनिकऽ।

की देखब अहाँ नक्षत्र लोक
एहि ऊषाकेर लाली की अछि?
ओहिमे संकल्प भरि रहल अछि
संदेह सभक जाली की अछि?

कतेक अछि कोमल कौशल ई
सुषमा दुर्भेद्य बनत की?
इन्द्रिय सभक चेतना हमर
हमरे हारि बनत की?''

''पीबैत छी हम हँ, पीबैत छी,
ई स्पर्श, रूप, रस, गंध भरल;
टकराबय सँ मधु लहरि केर
ध्वनि मे अछि की गुंजार भरल।

ई छितरि रहल तारा बनिकेँ
किए स्वप्नक उन्माद भरल;
मादकर्तामातल नीन लेने
सुतओं मन मे अवसाद भरल।''

होइत अछि चेतना शिथिल सन
ओहि अंधकारकेर लहरिमे;
डूबि गेला धिरे-धिरे मनु
रजनीकेर पछिला पहरमे।

सृष्टि बनल ओहि दूर क्षितिज मे
स्मृतिकेर संचित छायासँ;
विश्राम कतय एहि मनकेँ अछि
चंचल ई अपन मायासँ।

छल बिसरि गेल जागरण लोक
स्वप्नक सुख-संचार भेल;
कौतुक सन बनि मनुकेर मनक
ओ सुन्दर क्रीड़ागार भेल।

छल आलसमे सोचैत व्यक्ति
चेतना सजग रहैत दोहरल;
कानकेर कान खोलिकेँ
सुनइत छल कोनो ध्वनि गहरल।

''पिआसल छी हम एखनहुँ पिआसल
सन्तोष ओघसँ हमरा नहि भेल;
आएल तइयो चलि गेल ओ
तृष्णा केँ कनिओ नहि चेन भेल।

देवक सृष्टि विलीन भेल
अनुदिन हमर अनुशीलन मे;
नहि बन्द भेल अतिचार हमर
उन्मत्त रहल सबकेँ घेरने।

ओ करैत हमर उपासना
हमर संकेत विधान बनल;
विस्मृत जे मोह रहल हमर
ओ देव विलास वितान तनल।

हुनकर सहबचर हम काम रही
हुनकर विनोदक छलहुँ साधन;
हँसैत आ हँसाबैत छलहुँ
हम छलहुँ हुनक कृतिमय जीवन।

जे हँसैत छलि बनि आकर्षण
रति छली अनादि वासना वएह;
अव्यक्त प्रकृति उन्मीलन केर
अन्तरमे हुनके चाह रहय।

अस्तित्व रहय हम दुनुकेर
ओहि आरम्भिक आवर्त्तन सन;
संसृतिकेर बनैत अछि जहिसँ
आकार रूपकेर नर्त्तन सन।

यौवनमे ओहि प्रकृति लताकेर
ओहि पुष्पवतीक माधवकेर;
ओ पहिल मधु हास भेल छल
दु रूप मधुर जे ढारि गेल।''

''उठ ठाढ़ि भेल ओ मूल शक्ति
अपन आलसक त्याग केने;
सभ दौड़ि पड़ल परमाणु बाल
सुन्दर जकर अनुराग लेने।

उड़बैत सन चूर्ण कुमकुमकेर
गरा मिलबालए ललकैत जकाँ;
अन्तरिक्षक मधु उत्सव केर
विधुतकण मिलल झलकैत जकाँ।

ओ आकर्षण, ओ मिलन भेल
प्रारंभ माधुरी छायामे;
जकरा कहैत सब सृष्टि, बनल
मतवाली अपन मायामे।

प्रत्येक नाश विश्लेषण सेहो
संश्लिष्ट भेल, बनि सृष्टि रहल;
कुसुमोत्सव छल ऋतुपतिकेर घर
मादक मरन्दकेर वृष्टि रहल।

सरिता सबहक भुज लता पड़ल
सनाथ शैलदलक गरा भेल;
व्यजन बनल जलनिधिकेर अंचल
धरतीकेर, दु-दु संग भेल।

जन्म रहल कोरक अंकुर सन
हम दुनू साथी झूलि गेलहुँ;
ओहि नवल सर्गकेर काननमे
मृदु मलयानिल सन फूलि गेलहुँ।

जागि उठलहुँ भूख-प्याससँ हम
आकांक्षा-तृप्ति समन्वयमे;
रति-काम बनला ओहि रचनामे
जे रहल नित्य यौवन-वयमे।''

''सखी रहलि सुरबाला सबहक
हुनकर हृतंत्रीकेर लय छलि;
सोझराबैत हुनक मनकेँ रति,
ओ रागभरल छलि, मधुमय छलि।

विकसित करैत छलहुँ तृष्णा हम
ओ तृप्ति देखबैत छलि हुनका;
आनन्द-समन्वय होइत छल
हम ल' जाइत पथ पर हुनका।

ओ अमर रहल नञ् विनोद रहल,
चेतनता रहल, अनंग भेलहुँ;
अस्तित्व लेने छी भटकि रहल
संचित केर सरल प्रसंग भेलहुँ।''

''कृति सबहक नीड़ मनोहर ई
ई विश्व कर्म रंगस्थल अछि;
लगि रहल एतय अछि परम्परा
ठहरल जहिमे जतेक बल अछि।

होएत छथि ओ कतेक एहन
साधन केवल जे बनैत छथि;
आरम्भ आओर परिणामकेर
सम्बन्ध सूत्र सन बुनैत छथि।

उषाक सजल गुलाली जे
घोरा जाइछ नीलाम्बरमे;
ओ की थिक? अहाँ देखि रहलहुँ की
वर्णसभक मेघाडम्बरमे?

दिन आ रातिक अन्तर अछि
ई साधक कर्म छितराएत अछि;
नील अंचलमे मायाकेर
आलोक बिन्दु सन झरैत अछि।''

''हम आरम्भिक वात्या उद्गम
आब बनि रहलहुँ प्रगति संसृतिकेर
मानवकेर शीतल छायामे
करव ऋण शोध अपन कृति केर।

दुनुक समुचित प्रतिवर्त्तन
जीवनमे शुद्ध विकास भेल;
स्पष्ट भेल प्रेरणा अधिक आब
जल-विप्लवमे पड़ि ह्रास भेल।

विकसि चलल जकर लीला ई
ओ मूल शक्ति छल प्रेम कला;
सुनाबय लेल सन्देश ओकर
संसृति मे आएल ओ अमला।

वएह हम दुनुक संतति
कतेक सुन्दर भोलीभाली;
खेलल होए रंग जिनका सँ
एहन फूल गुच्छक ओ डारि।

वएह गेँठ जड़ चेतनताकेर
सोझराहटि अछि भूल-सुधार;
ओ शीतलता अछि शांतिमयी
जीवनक उष्ण विचारकेर।

इच्छा होऽ पाबैक ओकरा
तँ योग्य बनु'' कहैत-कहैत;
ओ ध्वनि भेल अचानक चुप
जेना मुरली चुप भ' रहैत।

पुछि रहला मनु आँखि खोलि
''पथ कोन ओतय पहुँचाबैत अछि?
देव कहु! ओहि ज्योतिमयीकेँ
कोना कोनो नर पाबैत अछि।''

उत्तर देत मुदा ओतय के
अद्‌भुत स्वप्न ओ भंग भेल;
देखलनि तँ प्राचीमे सुन्दर
अरुणोदय केर रस रंग भेल।

ओहि झिलमिल सँ लता कुंजकेर
हेमाभ रश्मि छल खेलि रहल;
देवगणक सोमसुधा रसकेर
मनुक हाथमे बेलि रहल।

वासना

हृदय कहिया सँ चलि पड़ल दु पथिक सन अश्रान्त;
जे छलाह एतय मिलबा लेल भटकैत भ्रान्त।
एक गृहपति, छल दोसर अतिथि विगत विकार;
प्रश्न छल जँ एक तँ उत्तर द्वितीय उदार!

छल जीवन-सिन्धु एक, तँ ओ लहरि लघु लोल;
एक नवल प्रभात, तँ ओ स्वर्ण किरण अमोल।
एक छल आकाश वर्षाकेर सजल उद्दाम;
रंजित किरन सन दोसर श्रीकलित घनश्याम!

क्षितिजमे नदी तटकेर नव जलद, संध्याकाल;
दु विद्युत दल सँ खेलैत जेना मधुरिमा-जाल।
लड़ि रहल अविरत युगल छल चेतनाकेर पाश;
एक केओ सकैत छल नहि दोसरकेँ फाँसि!

छल समर्पणमे ग्रहणकेर एक सुनिहित भाव;
प्रगति छल, मुदा सतत रहैत छल अड़ल अटकाव।
विजन पथ पर चलि रहल छल मधुर जीवन-खेल;
आब चाहैत छलि नियति दु अपरिचित सँ मेल।

भ रहल परिचित नित्य तइयो रहल किछु शेष;
छिपल रहैत गूढ़ अन्तरकेर रहस्य-विशेष।
सघन वन-पथ दूर जेना अंतकेर आलोक;
जा रहल होऽ सतत होइत नयनकेर गति रोकि।

खसि रहल निस्तेज गोलक जलधिमे असहाय;
डुबैत छल घन-पटलमे किरणकेर समुदाय।
दिनसँ अवसाद कर्मक कऽ रहल छल छन्द;
सुरस संचय मधुकरीकेर आब भ' गेल बन्द।

कलिमा धूसर क्षितिज सँ उठि रहल छल दीन;
भेटैत अंतिम अरुण आलोक वैभवहीन।
रचि रहल मलिन मिलन ई एक करुणालोक;
निर्जन निलयसँ शोक भरि बिछुड़ैत छल कोक।

मनन करैत छला मनु एखन धरि लगेने ध्यान;
भरि रहल छला कामकेर सन्देशे सँ कान।
आबि जुटल छल एने गृहमे उपकरण अधिकार;
शस्य पशु वा धान्यकेर होमय लगल संचार।

खिचि आनय नव इच्छा, अतिथिकेर संकेत—
चलि रहल छल सरल शासनयुक्त सुरुचि समेत।
देखैत छला मनु अग्निशालासँ कुतूहलयुक्त;
चमत्कृत निज नियतिकेर खेल बंधनमुक्त।

आबि रहल छल एक माया! पशु अतिथिकेर साथ;
भ' रहल छल मोह करुणासँ सजीव सनाथ।
कऽ रहल चपल कोमल पुनि सतत पशुकेर अंग;
करैत चामर स्नेहसँ उद्ग्रीव भ' ओ संग।

पुलकित रोमराजिसँ कखनहुँ देह उछालि;
बनबैत अपन भामर सँ अतिथि सन्निधि जाल;
अपन भोल नयन सँ कखनहुँ अतिथि बदन निहारि;
दैत संचित स्नेह सकल दृष्टि पथ सँ ढारि।

आओर ओ दुलारैक स्नेह-शवलित चाह;
मिलल मंजु ममता सँ बनल हृदयकेर सद्भाव।
देखितहि-देखितहि दुनू पहुँचिकेँ पास;
करय लागल सरल शोभन मधुर मुग्ध विलास।

ओ विराग-विभूति ईर्षा-पवन सँ भ' व्यस्त;
छल छिड़ियाएत, आओर खुलैत ज्वलन कण जे अस्त।
मुदा ई की? एक घोंट तीख, हिचकी आह!
हृदयमे दैत अछि के वेदनामय डाह?

"इह ई पशु आओर एतेक सरल सुन्दर स्नेह!
हमर देल अन्न सँ जे पलि रहल एहि गेह।
हम? कतय हम ल' लैत छल सभ केओ निज भाग;
आओर प्राप्य हमर छल दैत फेकि तुच्छ विराग!

हई नीच कृतघ्नते! पिच्छर शिला संलग्न;
मलिन कजरी जकाँ करबऽ हृदय कतेक भग्न?
अपहृत राजस्व हृदयकेर, कऽ अधम अपराध;
हमरा सँ चाहैत अछि दस्यु सदा सुख निर्बाध।

सरल सुन्दर होऽ विश्वमे जे विभूति महान;
सब हमर छी, करैत रहथि सब प्रतिदान।
इएह तँ, हम ज्वलित वाड़व-वह्नि नित्य अशांत;
करथि हमरा सब सिन्धु लहरि जकाँ शीतल शान्त।"

फेर आबि गेल पास क्रीड़ाशील अतिथि उदार;
चपल शैशव सन मनोहर भूलकेर ल' भार।
कहल "किए बैसले रही अहाँ एखन धरने ध्यान,
देखैत अछि आँखि किछु, सुनैत रहल किछु कान—

मन कतहु, ई भेल की अछि? आइ केहन रंग;"
फण भेल नत दृप्त ईर्षाकेर, विलीन उमंग।
आओर ससारय लगल कर-कमल कोमल कान्त;
मनु भेला ओ रूप सुषमा देखि कऽ किछु शान्त।

कहल "अहाँ रहलहुँ अतिथि कतय कोमहर छलहुँ अज्ञात;
आओर अहाँक ई सहचर कऽ रहल जे बात-
कोनो सुलभ भविष्यकेर, किए आइ अधिक अधीर?
मिलि रहल अहँ सँ चिरन्तन स्नेह सन गम्भीर?

खिचय छी हमरा एना के छी अहाँ अपन ओर;
आओर ललचाबैत हटैत स्वयं ओनेकेर ओर!
ज्योत्स्ना निर्झर! ठहरैत नहि ई आँखि;
जानबाक अहाँकेँ किछु हेरा गेल सन साख।

रहस्य कोन अछि करुण अहँमे छिपल छविमान?
जकरा देल करैत लता वीरुध छाया-दान।
पशु कि होऽ पाषाण, सब मे नृत्यकेर नव छंद;
एक आलिंगन सबकेँ बजाबय सानन्द।

छितरल पड़ल अछि राशि-राशि शांत संचित प्यार;
ओकरा रहल अछि राखि उघि कऽ दीन विश्व उधार।
देखैत छी चकित जेना ललित लतिका-लास;
अरुण घनकेर सजल छायामे दिनान्त निवास।

आओर भऽ गेल ओहिमे जेना सहज सविलास;
मदिर माधव यामिनीकेर धीर पद-विन्यास।
इह ई जे सून कोन पड़ल दीन रहय;
ध्वस्त मंदिरकेर, जकरा केओ नहि बसबय।

मायाकेर विश्राम ओहिमे अचल आवास;
हे ई सुख नीन केहन, भ' रहल हिमहास!
मधुर छाया वासनाकेर! स्वास्थ्य बल विश्राम!
हृदयकेर सौन्दर्य प्रतिमा! के अहाँ छवि धाम!

मिलल हो जहिमे कामनाकेर किरनक ओज;
छी अहाँ के, एहि बिसरल हृदयकेर चिर खोज!
कुन्द मंदिर सन हँसी खुलल जेना सुषमा बाँट;
किए ओहने नहि खुलल ई हृदय रूद्ध कपाट!''

कहलनि हँसिके ''अतिथि छी हम, आओर परिचय व्यर्थ;
एतेक नहि उद्विग्न छलहुँ कहियो अहाँ एकर अर्थ!
चलु, देखु आओत चलि ओ बजाबय आज;
सरल हँसमुख विधु जलद लघु खंड वाहन साज!

लगल धोबय कालिमा घोरय लगल आलोक;
आब लगल बसय एहि निभृत अनंतमे लोक।
मनोहर एहि चन्द्रमुखकेर सुधामय मुस्कान;
जाए बिसरि देखि कऽ सब दुख केर अनुमान।

देखि लिअ, ऊँच शिखरक व्योम चुम्बन व्यस्त;
अंतिम किरनक घुरब आओर होएब अस्त।
चलु तऽ एहि कौमुदी मे देखि आबी आज;
प्रकृति केर ई स्वप्न शासन साधनाकेर राज।''

हँसय लागल सृष्टि खिलल आँखिमे अनुराग;
छल राग रंजित चन्द्रिका, उड़ल सुमन पराग।
आओर हँसब छल अतिथि मनुकेर पकड़ि कऽ हाथ;
स्वप्न पथ मे चलल दुनू स्नेह संबल साथ।

देवदारु निकुंज गह्वर सब सुधामे स्नात;
मनाबैत सब एक उत्सव जागरणकेर राति।
छल मदिर मंद आबि रहल माधवीकेर गंध;
घिरि पड़ैत पवनकेर घन छल बनल मधु अंध!

पड़ल छाया शिथिल अलसाएल निशाकेर कान्त;
शिशिर कणकेर सेज पर छल सुति रहल विश्रान्त!
भावना छल ओहि झुरमुटमे हृदयकेर भ्रान्त;
करैत छल सृजन जतय छाया कुतूहल कान्त।

कहलनि मनु ''कतेक बेर अतिथि अहाँकेँ देखलहुँ;
मुदा छविक भार एतेक त नहि अहाँ दबल छलहुँ।
पूर्वजन्म कहओं कि छल स्पृहणीय मधुर अतीत;
गुँजैत मदिर घनमे जखन वासनाकेर गीत।

जहि दृश्यकेँ हम बिसरि कऽ आइ बनल अचेत;
सव्रीड़ सस्मित वएह किछु, कऽ रहल संकेत।
'भ' रहल छी हम अहाँकेर' यएह सुदृढ़ विचार;
परिधि बनैत चेतनाकेर घुमि चक्राकार।

विधु किरन बरसैत मधु अछि कँपैत सुकमार;
पुलक मंथर पवनमे अछि चलि रहल मधु भार।
अहँ समीप, अधीर एतेक आइ किए अछि प्राण;
कोन सुरभि सँ छकि रहल अछि तृप्त भ' क' घ्राण?

रुसि जेबाक आइ किए संदेह होइछ व्यर्थ;
चाहैत सन मनबय किए बनि रहल असमर्थ!
वेदना सन धमनीमे रक्तकेर संचार;
कँपैत धड़कन हृदयमे अछि लेने लघु भार!

रंगीन ज्वाला परिधिमे चेतना सानन्द;
दिव्य सुख मानैत सन किछु गाबि रहल अछि छन्द!
जरैत अग्निकीट समान अछि भरल उत्साह;
आओर नञ् फोंका जीवित अछि, अछि नञ् ओहि मे दाह।

विश्वमाया अहाँ के छी कुहक सन साकार;
प्राणसत्ताकेर मनोहर भेद सन सुकमार!
कांत छायामे जकर हृदय लेने निश्वास;
थकल पथिक जकाँ करैत व्यजन ग्लानि विनाश।"

मधु किरन सन श्याम नभमे फेर वएह मृदुहास;
सिन्धुकेर हिलकोर दक्षिणकेर समीर विलास!
गुंजरित केओ मुकुल सन कुंजमे अव्यक्त;
कहय लागल अतिथि सुनि रहल छला मनु अनुरक्त—

"मनकेर अतृप्ति अधीर ई क्षोभयुत उन्माद;
सखे! तुमुल तरंगसन उच्छ्वासमय संवाद।
जुनि कहू पुछु नञ् किछु देखु ने मौन केहन;
के बैसल स्तब्ध विमल राकाक मूर्त्ति बनि!

विभव मतवाली प्रकृतिकेर आवरण ओ नील;
शिथिल अछि जहि पर छिड़िआएत प्रचुर मंगल खील।
राशि-राशि नखत कुसुमकेर अर्चना अश्रान्त;
छितराएत अछि कमल सुन्दर चरणकेर प्रान्त।"

निरखय लगलाह जेना-जेना मनु यामिनी केर रूप;
पसरैत प्रगाढ़ छाया ओ अनन्त अपरूप।
मदिर कण सन बरसैत छल स्वच्छ सतत अनन्त;
होमय लगल मिलनकेर संगीत छल श्रीमन्त।

छुटैत चिनगीराशि / उत्तेजना उद्भ्रान्त;
ज्वाला मधुर धधकैत छल वक्ष विकल अशान्त।
बान्हैत छल किछु वातचक्र सन आवेश;
नहि छल किछियो धैर्यक मनुकेर हृदय मे लेश।

उन्मत्त मन भऽ हाथ गहि कहय लगला, "आज;
किछु दोसर देखैत छी मधुरिमामय साज!
वएह छवि! हँ वएह जेना मुदा ई की भूल?
स्मृति नौका विस्मृति सिन्धुमे रहल विकल अकूल!

एक छल जे जन्म संगिनि कामबाला, नाम
छल मधुर श्रद्धा, हमर प्राणकेँ विश्राम—
सतत भेटैत छल ओकरेसँ हे जकरा फूल;
दैत एलहुँ अर्घ मे मकरन्द, सुषमा मूल!

बचि गेलहुँ हम प्रलयोमे फेर मिलनक मोद;
बचल मिलबालेल रहल सून जगतक गोद।
ज्योत्स्ना सन निकसि आएल पार कऽ नीहार;
ठाढ़ नभमे प्रणय विधु अछि लेने तारकहार!

बनबैत काल कुटिल कुन्तल सँ मायाजाल;
रचैत नयनकेर नीलिमा सँ अन्हारक माल।
नीन सन दुर्भेद्य तमकेर फेकैत ई दृष्टि;
छिड़िया जाइत स्वप्न सन अछि हँसी केर चल सृष्टि।

भेल केन्द्रीभूत सन अछि साधनाक स्फुर्ति;
सकल सुकमारतामे दृढ़ रम्य नारी मूर्ति।
दिवाकर दिन वा परिश्रमकेर विकल विश्रांत;
भटकैत छलहुँ आइ धरि हम पुरुष शिशु सन भ्रान्त।

विश्राम राका चन्द्र केर बालिका सन भ्रान्त;
विजयिनी सन दृश्य अहाँ माधुरी सन कान्त।
थकल व्रज्या पद दलित सन जेना सतत आक्रान्त;
शस्य श्यामल भूमिमे होइत समाप्त अशान्त।

आह! बनि रहल ओहने हृदयकेर परिणाम;
पाबि रहल छी आइ दऽ कऽ अहीँ सँ निज काम।
आइ लऽ लिअ चेतनाकेर ई समर्पण दान;
विश्व रानी! सुन्नर नारि! जगतकेर मान!''

गगन तरु पर धूम लतिका सन नञ् चढ़इत दीन;
दबल शिशिरक रातिमे जेना ओस भार नवीन।
झुकि चलल सलज्ज ओ सुकमारता केर भार;
भेल समृद्ध पाबिकेँ पुरुषक नरम मृदु उपचार।

आओर ओ नारीत्वकेर मूल मधु अनुभाव;
हँसि रहल आइ जेना बढ़बैत भीतर चाव।
मधुर लज्जासिक्त चिन्ता संग लऽ उल्लास;
आनन्द कूजन करय लागल हृदयकेर रास।

पलकदल खसि रहल, छल झुकल नासिकाकेर नोक;
कान धरि छल भ्रूलता चढ़ैत रहल बेरोक।
लज्जा स्पर्श करय लगल ललित कर्ण कपोल;
खिलल पुलक कदम्ब सन छल भरल गदगद बोल।

मुदा बाजलि ''की समर्पण आइकेर हे देव!
बनत चिर बन्ध नारी हृदय हेतु सदैव।
आह दुर्बल हम, कहू लऽ सकब की दान!
ओ, जकर उपभोग करबामे विकल होऽ प्रान?''

लज्जा

''अंचलमे कोमल किसलयकेर
जेना नान्हि कली छिपैत सन;
धूमिल पटमे गोधुलिकेर
स्वरमे दीपककेर दिपैत सन।

विस्मृतिमे मंजुल स्वप्नकेर
निखरैत मनक उन्माद जेना;
छायामे सुरभित लहरिकेर
छिड़ियैत बुद्बुदक विभव जेना।

लपटल ओहने मायामे
आंगुर अधरदल पर धरने;
माधव केर सरस कुतूहलकेर
दुनू आँखिमे पानि भरने।

लतिकासन नीरव निशीथमे
अहाँ आबि रहल छी के बढ़ैत?
पसारनेसन कोमल बाँहि दुनू
जादू आलिंगनकेर पढ़ैत!

फूलराशिसँ कोन इन्द्रजाल केर
सुहागकण लऽ कऽ राग भरल;
होऽ गुँथि रहल सिर नीचाँ कऽ
माला जहि सँ मधु धार ढरल?

मालासन पुलकित कदम्बकेर
दैत होऽ पहिरा अन्तरमे;
मनकेर डारि लबि जाइत अछि
अपन फलभरताकेर डरमे।

दैत रहल भ' वरदान सदृश
बुनल नील किरनदल सँ;
हल्लुक सन ई अंचल कतेक
सानल कतेक सौरभसँ।

बनइत अछि सब अंग मोम सन
बल खाइत छी कोमलतामे;
सुनि पाबय छी परिहास गीत
हम सिमटि रहल अपने टा मे।

स्मित बनि जाइत अछि तरल हँसी
नयन मे चतुरपन भरि केँ;
देखैत छी प्रत्यक्ष सब जे
अबैत अछि ओ सपना बनि केँ।

हमर सपनमे कलरव केर
आँखि जखन जग खोलि रहल;
हेलैत अनुराग समीर दल पर
अगराएत सन डोलि रहल छल।

अपन यौवनमे अभिलाषा
उठैत ओहि सुखक स्वागतमे;
बल वैभव सँ जीवन भरिक
सत्कृत करैत दूरागत केँ।

समटि लेल किरनक रज्जु
अवलम्बन जकर लऽ चढ़ैत;

धँसिक' हम रसकेर निर्झर सँ
आनन्द शिखरकेर दिस बढ़ैत।

हिचक छूबयमे, देखय मे
पलक आँखि पर झुकैत अछि;
गुंज कलरव परिहास भरल
अधर तक सहसा रुकैत अछि।

संकेत कऽ रहल रोमाली
बरजैत ठाढ़ चुपचाप रहल;
भाषा बनि भौंह केर कारी
रेखा सन भ्रममे पड़ल रहल।

के अहाँ? परवशता हृदयक?
सबटा स्वतंत्रता छीनि रहलहुँ;
खिलल रहल जे स्वच्छंद सुमन
जीवन वनसँ छी बिछि रहलहुँ।

हँसैत संध्याकेर लालीमे
ओकरे आश्रय लैत जकाँ;
गुनगुना उठल छाया प्रतिमा
उत्तर श्रद्धाकेर दैत जकाँ।

"बाला! नञ् चमत्कृत होउ एतेक
अपन मनक उपकार करू;
हम एक पकड़ छी जे कहइत
थमु किछु सोच-विचार करू।

अम्बर चुमैत हिमशिखर सबसँ
कलरव कोलाहल संग लेने;
विद्युतकेर प्राणमयी धारा
बहैत जहिमे उन्माद लेने।

जहिमे मंगल कुंकुमकेर श्री
उषाक लाली निखरल हो;
अगराबैत होऽ भोला सोहाग
हरियरी एहन जहिमे हो।

कल्याण बनल होऽ नयन युगक
विकसल आनन्द सुमन सन हो;
वन वैभव मे वासन्तीकेर
पंचम स्वर जकर पिक सन हो।

फेर उठय गुँजि जे नस-नस मे
मचलैत जकाँ मूर्च्छना सन;
आबि कऽ आँखिक साँचामे
रमणीय रूप बनि गढ़ैत सन।

नीलमकेर घाटी नयनयुगक
जहि रस घन सँ भरि जाइत होऽ;
ओ चमक कि जहि सँ अन्तर केर
शीतलता ठंढक पबइत होऽ।

ऋतुपतिकेर हिलोर भरल हो
ममता होऽ गोधुलि जकाँ;
निखरैत हो मध्याह्न जहि मे
हँसैत होऽ जागरण प्रात जकाँ।

सहसा भ' चकित निकलि आएलि
प्राचीक अपन घर सँ जे;
पिछड़ल ओहि नयन चन्द्रिकाकेर
लहरि पर सँ मानसकेर जे।

पँखुड़ी सब कोमल फूलकेर
छितरल जकर अभिनन्दन मे;
मकरन्द अपन मिलाबैत होऽ
स्वागत केर कुंकुम चन्दन मे।

किसलय मर्मर रव सँ कोमल
जकर जयघोष सुनाबैत होऽ;
जहिमे मनकेर दुख सुख मिलि कैँ
उत्सव आनन्द मनाबैत होऽ।

उज्ज्वल वरदान चेतनाकेर
सौन्दर्य कहैत अछि जकरा सब;
अभिलाषा केर जहिमे अनन्त
जगैत रहैत अछि सपना सब।

ओही चपलकेर धात्री छी हम
गौरव गरिमा छी सिखाबैत;
अछि जे ठोकर लागयवला
धिरे सँ ओकरा समझाबैत।

हम रतिरानी देव सृष्टिकेर
वंचित भ' निज पंचवान सँ;
आवर्जना मूर्तिदीना बनि
संचित भ' अपन अतृप्ति सँ।

अनुभवमे अवशिष्ट गेल रहि
अपन अतीत असफलता सन;
विलासकेर लीला खेद भरल
व्यथा भरल श्रमदलिता सन।

हम रतिक प्रतिकृति लज्जा छी
शालीनता सिखाबय छी हम;
पग मे मतवाली सुन्दरता
लपटि मनाबय छी नुपुर सन।

सरल कपोल युगमे लाली बनि
आँखिमे लगैत अंजन सन;

मनकेर मरोर बनिक' जगैत
कुंचित घुमड़ल अलक राशि सन।

चंचल किशोर सुन्दरता केर
रखवारि करैत रहैत छी हम;
जे अछि बनैत कानक लाली
ओ हलुक सन मसलन छी हम।''

''हँ ठीक, परञ्च बताएब
की हमर जीवनकेर पथ छी?
एहि निबिड़ निशामे संसृतिकेर
आलोकपूर्ण रेखा की छी?

ई आइ समझि गेल छीजे
दुर्बलता मे नारी छी हम;
सुन्दर कोमलता अवयव केर
ल' क' सबसँ हारल छी हम।

पर एतेक ढील मन सेहो किए
अपनहि सँ होइत जाइत अछि;
घनश्यामक खंड सन आँखिमे
जल भरि सहसा किए आबय अछि।

सर्वस्व समर्पण करबाकेर
विश्वास महा तरु छाया मे;
किए चुपचांप पड़ल रहैक
ममता जगैत अछि मायामे?

तारक द्युति सन छायापथ मे
झिलमिल करबाक मधुलीला;
किए एहि मनमे अभिनय करैत
निराशा कोमल श्रमशीला।

हेलैत छी निस्संबल भ' कऽ
एहि गहिराइमे मानसकेर;
चाहैत जागरण कहियो नहि
एहि सुघराइमे सपनाकेर।

नारी जीवनकेर चित्र इएह
की? विकल रंग भरि दैत छी;
सीमामे अस्फुट रेखाकेर
आकार कलाकेँ दैत छी।

रुकैत छी आ ठहरैत छी
मुदा सोच विचार नहि क' सकैत;
केओ अन्तर मे पगलीसन
बैसल जेना अनुदिन बकैत।

हम जखने तोलबा लए करओं
उपचार स्वयं तोलि जाइत छी;
भुज लता फँसा कऽ नर तरु सँ
झूला सन झोंका खाइत छी।

किछु आओर नहि एहि अर्पणमे
केवल उत्सर्ग छलकैत अछि;
हम दऽ दी आओर नहि पुनि किछु ली
एतबेटा सरल झलकैत अछि।''

''की कहैत छी ठहरू नारी!
संकल्प अश्रुजल सँ अपन;
अहाँ दान कऽ चुकलहुँ पहिनहि
जीवनकेर सपना सोना सन।

नारी! अहँ केवल श्रद्धा छी
विश्वास रजत नग पदतलमे;

पीयूष स्रोत सन बहल करू
जीवनकेर सुन्दर समतलमे।

देवक विजय दानव केर
हारिक होइत युद्ध रहल;
संघर्ष सदा उर अन्तर मे
जीवित रहि नित्य विरुद्ध रहल।

अश्रु सँ भीजल अंचल पर
मनक सभ किछु रखैक होएत;
अहाँकेँ अपन स्मित रेखा सँ
ई संधिपत्र लिखैक होएत।''

कर्म

मनुकेँ तखन सोमलता छल
कर्म सूत्र संकेत जकाँ,
खिचलनि ओ जीवन धनुकेँ
फेर चढ़ल शिंजिनी जकाँ।

अग्रसर ओही मार्ग मे भेला
पुनि छुटल तीर सन ओ,
कटु पुकार सँ यज्ञ-यज्ञकेर
आब रहि सकला नहि थिर ओ।

कथन कामकेर भरल कानमे
मनमे नव अभिलाषा,
लगलथि अतिरंजित मनु सोचय
छल उमड़ि रहल आशा।

सोमपानक लेल पिआसल
ललित लालसा ललकि रहल,
जीवनकेर ओहि दीन विभवमे
बनल जेना उदासल।

अविराम साधना जीवनकेर
भरि उछाह ठाढ़ छल,
नाह जेना विपरीत हवामे
गहिरे लौटि पड़ल छल।

श्रद्धाकेर उत्साह वचन, फेर
काम प्रेरणा मिलि कैँ,
आगाँ आएल भ्रान्त अर्थ बनि
बनल ताड़ छल तिलकेर।

सिद्धान्त प्रथम बनि जाइछ
पुष्टि फेर होइत अछि,
सबसँ लऽ बुद्धि ओहि ऋणकैँ
सदा भरल करैत अछि।

निश्चित कऽ लैत जखन मन
कोनो मत अपन अछि,
बुद्धि दैव बल सँ प्रमाणकेर
सपन सतत निरखय अछि।

वएह पवन हिलकोर उठाबय
वएह तरलता जलमे,
वएह प्रतिध्वनि अंतरतम केर
पसरि जाइत नभतलमे।

ओकर समर्थन करैत सदा
तर्कशास्त्र केर पीढ़ी,
''ठीक इएह छी सत्य! इएह छी
उन्नति सुखकेर सीढ़ी।

आओर सत्य! ई एक शब्द तोँ
भेल कतेक गहन छऽ,
मेधाक क्रीड़ा-पिंजर केर
पालल गेल सूगा छऽ।

खोज तोहर सब बातमे
रट सन लागत अछि,

मुदा तर्क करक स्पर्श सँ
बनइत 'छुईमुई' अछि।

ओहि विप्लवसँ असुर पुरोहित
बचिकैँ भटकि रहल छल,
ओ किलात आकुलि छल जे
कष्ट अनेक सहने छल।

मनुक पशु जे देखि-देखिकैँ
व्याकुल चंचल रहइत,
हुनकर अमिष लोलुप रसना
आँखि सँ किछु कहइत।

''किए किलात! खाइत-खाइत तृण
आओर कतय धरि जीबी,
जीवित पशु कखन धरि हम देखी
घोंट लहूकेर पीबी।

की एकर कोनो उपाय नहि
कि एकरा खाऽली?
एक बेर तँ बहुत दिन पर
सुखक बीन बजाबी।

देखैत नहि संगमे ओकर
आकुलि तखन कहल,
एक कोमलताकेर, ममताकेर
छाया हँसिते रहल।

दूर भगाबय अंधकारकैँ
ओ आलोक किरन सन,
बेधल जाइत अछि माया हमर
जहि सँ हलुक घन सन।

चलु तइयो आइ किछु कऽ कें
स्वस्थ तखन हम रहब,
अथवा सुख-दुख आएत जे
ओकरा सहज सहब।''

ओहिना दुनु कऽ विचार
ओहि कुन्ज द्वार पर आएल,
जतय सोचैत छला मनु बैसल
मनसँ ध्यान लगाएल।

''कर्म यज्ञ सँ जीवनकेर
स्वर्ग मिलत सपना केर,
एही विपिन मे मानसकेर
कुसुम खिलत आशाकेर।

किन्तु बनत पुरोहित के?
ई प्रश्न आब नव अछि,
कोन विधान सँ करी यज्ञ ई
पथ गेल कोन दिस अछि!

श्रद्धा! पुण्य प्राप्य हमर छथि
ओ अनन्त अभिलाषा,
खोजय फेर एहि निर्जनमे
ककरा आब हमर आशा।''

कहलक असुर मित्र सब अपन
मुख गंभीर बनाएल,
''जिनका लेल यज्ञ होएत हम
हुनके भेजने आएल।

यजन करब की अहाँ? फेर ई
ककरा खोजि रहल छी,

हे पुरोहित केर आशामे
कतेक कष्ट सहने छी।

प्रतिनिधि एहि जगतक जिनकासँ
प्रकट निशीथ भोरहर
'मित्र वरुण' जिनकर छाया थिक
ई आलोक अन्हर।

वएह होथि पथदर्शक सब विधि
हमर पूर होएत,
चलु आइ फेर सँ वेदी पर
ज्वालाकेर फेरी होएत।''

''परम्परागत कर्म केर ओ
लड़ी कतेक सुन्दर
जीवन साधनक ओझराएल अछि
घड़ी जहिमे सुखकर।

प्रेरणामयी सन जहिमे अछि
संचित कतेक रास कृति,
देबयवाली पुलक भरल सुख
बनिकऽ मादक स्मृति।

अतिरंजित किछु साधारण सँ
गतिमे मधुर त्वरा सन,
निर्जनताकेर उत्सव लीला
जहिसँ कटय उदासी घन।

श्रद्धाकेँ सेहो कुतूहल हेतनि
एक विशेष प्रकारक''
प्रसन्नता सँ नाचि उठल मन
नूतनताक लोभी भऽ कऽ।

यज्ञ समाप्त भऽ गेल तइयो
धधकि रहल छल ज्वाला,
दारूण दृश्य! रक्तकेर छींटा
अस्थि-खंड केर माला!

निर्मम प्रसन्नता वेदी केर
पशुकेर कातर वाणी,
मिलिकऽ वातावरण बनल छल
कोनो कुत्सित प्राणी।

सोमपात्र सेहो भरल छल
साकल्यो आगाँ छल,
छलीह नहि श्रद्धा ओतय
मनुक सुप्त भाव सब जागल।

''जकर छल खुशी निरखब
वएह अलग जा बैसलि,
ई सब किए फेर? दृप्त वासना
लागल गरजय ऐंठलि।

संचित सुख जहिमे जीवन केर
सुन्दर मूर्त्त बनल अछि;
कोना ओकरा हृदय खोलिकऽ
कही कि ओ अपन अछि।

वएह प्रसन्न नहि? रहस्य किछु
एहिमे सुनिहित होएत,
मरियो कऽ की आइ वएह पशु
सुखमे बाधक होएत?

श्रद्धा रुसि गेलि तँ फेर की
हुनका मनबय होएत,
या ओ मानि जेती स्वयं
कोन पथ जाए पड़त?''

साकल्यक संग सोमकेर
पान करय मनु लगला,
रिक्त अंशकेँ प्राणकेर
मादकता सँ भरय लगला।

धूसर छायामे संध्याकेर
शैल शिखर केर रेखा,
दिगन्त अम्बर मे अंकित छल
लेने मलिन शशि-लेखा।

अपन शयन गुहामे श्रद्धा
दुखी लौटि कऽ अएली,
उघइत एक विरक्ति बोझ सन
मोनेमोन कलपली।

पातर सूखल काष्ठ संधिमे
अनल शिखा जरैत छल,
ओहि झलफल गृहमे आभासँ
तामसकेँ छलैत छल।

किन्तु कखनहुँ झोंका शीतपवनक
पाबि मिझा जाइत छल,
कखनहुँ ओहि सँ जरि उठैत तखन
के फेर ओकरा रोकय छल।

पड़ल छलीह कामायनी अपन
चर्म बिछाकेँ कोमल,
मृदु आलसकेँ पाबिकेँ
मानु श्रम विश्राम कऽ रहल।

चलि रहल जगत धिरे-धिरे
अपन ओहि ऋजु पथमे,
खिलैत तरेगन धिरे-धिरे
मृग जोतैत विधु रथमे!

लटकाबैत अंचल रजनी
अपन ज्योत्स्नाशाली,
सुख पाबय जकर छायामे
सृष्टि वेदनावाली।

हँसैत उच्च शैल शिखर पर
प्रकृति चंचला बाला,
अपन हँसी उज्जर छिड़ियाबैत
मधुर पसरल उजियारा।

लालसा प्रबल जीवनकेर
जहि सँ लाज ओझराएल,
तीव्र एक सनक आ मन
मथयवाली पीड़ा आएल।

मधुर विरक्ति भरल आकुलता
हृदय-गगनमे घिरइत,
अन्तर्दाह स्नेहकेर तखनहुँ
छल ओहि मन मे होइत।

नयन ओ असहाय छल खुलैत—
मुनैत भीषणतामे,
पात्र आइ ठाढ़ छल स्नेहक
साफ कुटिल कटुतामे।

''कतेक दुख जकरा हम चाही
ओ किछु आओर बनल होऽ,
मानसचित्र हमर खिचब
सुन्दर सन सपना होऽ।

जागि उठल अछि दारुण ज्वाला
एहि अनन्त मधुबन मे,
कोना बुझत के देत कहि
एहि नीरव निर्जनमे?

ई अनन्त अवकाश नीड़ सन
जकर व्यथित बसेर,
सजग पलकमे वएह वेदना
भरिकऽ अलस सबेर।

चरण पवनकेर काँपि रहल अछि
विस्तृत नीरवता सन,
धुअल जा रहल अछि दिसि-दिसिकेर
उदासी नभमे मलिन।

अंतरतमक पिआस, विकलतासँ
लपटल बढ़ैत अछि,
युग-युग केर असफलताक
लऽ अवलम्बन चढ़ैत अछि।

आतंक-त्रस्त अछि विश्व विपुल
अपन विषम तापसँ,
निबिड़ नीलिमा पसरि रहल अछि
परम अंतर्दाह सँ।

उद्वेलित अछि सागर, लहरि
लोटि रहल व्याकुल,
चक्रवालकेर धूमिल रेखा
मानु जाइत झुलसल।

केहन सघन धूम कुंडलमे
नाचि रहल ई ज्वाला!
व्याल अन्हारक मानु पहिरने
अपन मणिकेर माला!

सबटा रोदन जगती तलकेर
ओ विषमयी विषमता,
अन्तरंग छल चुभयवला
अति दारूण निर्ममता।

निष्ठुर दंशन जीवनकेर ओ
जिनकर आतुर पीड़ा,
कलुष चक्र सन नाचि रहल अछि
बनिकऽ आँखि क्रीड़ा।

स्खलन चेतनाकेर कौशलकेर —
जकरा भ्रान्ति कहय छी,
एक बिन्दु जहिमे विषादकेर
नद उमड़ैत रहय अछि।

आह वहय अपराध जगतकेर
दुर्बलताकेर माया,
धरतीकेर वर्जित मादकता
संचित तमकेर छाया।

भरल नील गरल सँ
ई चन्द्र कपाल लेने होऽ,
एही निमिलित तारागणमे
कतेक शान्ति पिने होऽ।

विष पीबय छऽ अखिल विश्वकेर
सृष्टि जियत फेर सँ,
एतेक अमर शीतलता कहऽ
आबय तोरा कोने सँ?

नील अचल अनन्त लहरि पर
बैसल मारने आसन,
देव! के अहाँ झरैत तन सँ
श्रमकणसन ई तारागण!

कर्म कुसुमकेर एहि पदयुगमे
अंजलि ओ दऽ सकइत,
छायापथ मे चलल आबि रहल
लोक पथिक जे थकइत।

मुदा कतय हुनका ओ दुर्लभ
स्वीकृति अहँक मिलल,
घुराएल जाएत ओ जहिना
नित्य भिखारी असफल।

विनाशशील प्रखर नृत्यमे
विपुल विश्वकेर माया,
प्रकट नवीना क्षण-क्षण होइत
बनि कऽ ओकर काया!

की सब भूल करय
सदा पूर्णता पाबय लए ?
जी जीक' मरैत की
जीवनमे यौवन आनय लए?

ई गतिशाली व्यापार महा
कतहु नहि बसय की?
क्षणिक विनाश सबमे स्थिर
मंगल निश्शब्द हँसय की?

ई विराग सम्बंध हृदयकेर
केहन ई मानवता!
प्राणीकेँ प्राणीकेर प्रति बस
बचल रहल निर्ममता!

जीवनक संतोष दोसराक
किए रोदन बनि हँसइत?
विश्राम प्रगतिकेँ एक-एक
साँकड़ सन किए कसइत?

दुर्व्यवहार कोना एक केर
दोसर बिसरि जाएत,
उपाय कोन! कोना विषकेँ
अमृत बना पाएत!''

तरल वासना जागि उठल छल
मादकता मिलल रहय,
मनुकेँ आब ओतय आबय सँ
भने के रोकि सकय!

खुलल कोमल भुज मूल सँ
छल मिलैत ओ आमंत्रण,
उन्नत वक्षयुग मे हेलैत
लहरिसन सुख आलिंगन।

नीचाँ भ'जे मन्द-मन्द
निश्वासमे उठइत,
ज्वार जीवनकेर जेना
हिमकरक हासमे उठइत।

सौन्दर्य जदपि ओ जागृत छल
सूतल छल सुकमारि,
उज्ज्वल रूप चन्द्रिकामे छल
आइ निशासन नारि।

परमाणु किरण सन माँसल ओ
विद्युत छल छिड़िआएत,
जीवन केसराशिक डोरीमे
कण-कण ओझराएल जाएत।

श्रमसीकर पछिला विचार केर
मोती छल बनइत,
करुण कल्पना मुखमंडल पर
रहल ओकरा गँथइत।

मनुक छुबयसँ कंटकित
ओ बेली होइत छल,
लहरिजकाँ स्वस्थ व्यथाकेर
जे अंगलता छल पसरल।

एहि जगतीकेर ओ पागल सुख
आइ विराट बनल छल,
अंधकार मिश्रित प्रकाशकेर
एक वितान तनल छल।

किछु-किछु जगल छली कामायनी
चेतनता सब हेरायल
मनोभाव आकार स्वयं से
बिगड़ैत-बनैत रहल।

पास अछि जकर हृदय सदा
वएह दूर जाइत अछि,
आओर क्रोध होइत ओकरे पर
सम्बंध जहिसँ किछु अछि।

ठोकराइयोकऽ प्रियकेँ
मनक माया ओझरा लैत,
शिला प्रणयकेर बहुरयमे
ओकरा घुरा दैत।

कम्पित जलदागम मारुतसन
पल्लव सन तरहथ,
श्रद्धाकेर, धिरेसँ मनु
अपन करमे ल'लेलथि।

वाणीमे अनुनय, आँखिमे
उपालम्भकेर छाया,
लगला कहय "अरे ई केहन
मानवती केर माया!

स्वर्ग बनेने छी हमजे
नहि ओकरा विफल बनाउ,
ओहि अतीतकेर हे अप्सरे!
नूतन गान सुनाउ।

ज्योत्स्ना पुलकित विधुयुत
नभकेर नीचाँ एहि निर्जनमे,
के अछि आओर? केवल हम अहाँ
नहि रहू आँखि बन्द कएने।

आकर्षणसँ भरल विश्वई
भोग्य हमर केवल,
जीवनकेर दुनु कूलमे
वासना धार बहल।

श्रमकेर, एहि अभावकेर जगती
ओकर सब आकुलता
जहि क्षण बिसरि सकओँ हम अपन
ई भीषण चेतनता।

बनि अनन्तता वएह स्वर्गकेर
रहैत अछि मुस्काइत,
जीवन केर रस दु बुन्दमे
लिअ बरवस अछि बहइत।

छूबि लिअ देवगणकेँ अर्पित
मधु मिश्रित सोम अधरसँ,
प्रेयसि! मादकता दोला पर
आउ झुलु मिलिकेँ।''

जागि रहल छलि श्रद्धा तखनहुँ
मादकता पसरल छल,
तनमनमे हुनकर मधुर भाव
अपनहि रस पिबइत छल।

एक सहज मुद्रा सँ बाजलि
''ई की अहाँ कहैत छी?
कोनो भावकेर आइ एखन तँ
धारामे बहइत छी।

परिवर्त्तन यदि काल्हिए होएत
तँ के फेर बचत,
केओ साथी बनि की जानओं
नूतन यज्ञ रचत!

आओर कोनो देवक नाते
फेर ककरो बलि होएत,
धोखा कतेक! हमतँ ओहि सँ
अपनहि सुख पबैत।

एहि अचला जगती केर
ई प्राणी जे बाँचल छथि,
हुनकर अधिकार नहि की किछु
ओ सबटा नीरस छथि!

मनु! अहाँ केर इएह होएत की
उज्ज्वल नव मानवता?
सभ किछु ल' लेबाक हो जहिमे
हाए! बचल की शवता!''

''अपन सुख सेहो अछि अधम नहि
श्रद्धे! ओ सेहो किछु अछि,
दु दिनक एहि जीवनकेर तँ
सब किछु वएह चरम अछि।

अभिलाषा जतेक इन्द्रियकेर
सतत सफलता पाबय,
तृप्ति विलासिनी जतय हृदयकेर
मधुर-मधुर किछु गाबय।

ओहि ज्योत्स्नामे रोम-हर्ष हो
मृदु मुसकान खिलय तँ,
श्वास निछावर आशपुंज पर
भ' कए गरा मिलय तँ।

जकर आगाँ विश्व माधुरी
बनल अएना रहइत,
सुख स्वर्ग अपन ओ नहि थिक!
ई छी अहाँ की कहइत?

खोजैत फिरैत छी हम जकरा एहि
हिमगिरिकेर अंचलमे,
वएह अभाव हँसइत स्वर्ग बनि
एहि जीवन चंचलमे।

वर्तमान जीवनकेर सुखसँ
योग जतय होइत अछि,
किए अभाव बनल अदृष्ट छली
ओतहिँ प्रकट होइत अछि।

मुदा सफल कृति सभक अपन
सीमा छी हमही तँ,
पूर्णहो कामना हमर
प्रयास विफल नहि तँ।''

एक अचेतनता अनैत सन
सविनय श्रद्धा बाजलि,
''बचल जानि ई भाव
आँखि फेर सँ सृष्टि खोललि।

भेद बुद्धि निर्मम ममताकेर
समझ बचले होइत,
प्रलय सागरकेर लहरि सेहो
घुरिए गेल होइत।

सबकिछु भरि अपनामे
कोना व्यक्ति विकास करत?
ई एकांत स्वार्थ भीषण अछि
अपन नाश करत!

दोसरकेँ हँसैत देखु मनु
हँसु आओर सुख पाउ,
विस्तृत कऽ लिअ अपन सुखकेँ
सभकेँ सुखी बनाउ।

सृष्टि यज्ञ ई रचनामूलक
यज्ञपुरुषकेर जे अछि,
संसृति सेवा भाग हमर
ओकरा विकसय लऽ अछि।

अपनहिमे सुखकेँ सीमित कऽ
केवल दुख छोड़ब,
पीड़ाकेँ लखि आन प्राणिकेर
अपन मुँह मोड़ब।

एहि मुद्रित कलीदलमे सब
सौरभ बन्दी कऽ ली,
नहि सरस हो मकरन्द बिन्दुसँ
खुलि कऽ तँ ई भरि ली।

सूखल, झड़ल आ तखन कुचलल
सौरभ केँ पाएब,
फेर आमोद कतय सँ मधुमय
वसुधा पर आनब!

सुख सन्तोषक लेल अपन
संग्रह मूल नहि अछि,
ओहिमे एक प्रदर्शन जकरा
देखय अन्य, वएह अछि।

एक एकसर खुशी अहाँकेँ
मिलत की निर्जनमे?
नहि एहि सँ सुमन कोनो
खिलत अन्य हृदयमे।

सुख समीर पाबि कऽ चाहे होऽ
ओ एकान्त अहाँ केर,
बढ़ैत अछि सीमा संसृतिक
धारा बनि मानवताकेर।''

उत्तेजित छल हृदय भ' रहल
बात सब कहइत-कहइत,
अधर सुखैत छल श्रद्धाकेर
मनक ज्वाला सहइत।

ओने सोमक पात्र लेने मनु
बजला समय देखिकेँ
''श्रद्धे! पी लिअ एकरा बुद्धिक
जे खोलय बंधन केँ।

जे कहैत छी वएह करब
सत्य एकसर सुख की।''
ई मनुहार! रुकत पिआला
पीबय सँ फेर मुख की?

आँखि प्रिय आँखिमे, डूबल
अरुण अधर छल रसमे,
सुखी काल्पनिक विजयमे हृदय
चेतनता नस-नसमे।

ई प्रवंचना छल वाणीकेर
हृदययुगक शिशुताकेँ,
खेल खेलाबय, बिसराबय जे
ओहि निर्मल विभुताकेँ।

जीवनकेर उद्देश्य, लक्ष्यकेर
प्रगति दिशाकेँ पलमे,
एक मधुर अपन इंगित सँ
बदलि सकय जे छल मे।

वएह शक्ति अवलम्ब मनोहर
छलि निज मनुकेँ देइत,
जे मनकेँ अपन अभिनयसँ
सुखमे ओझरा लेइत।

''श्रद्धे, होएत चन्द्रशालिनी
ई भव रजनी भीमा,
एहि जीवनकेर बनि जाउ अहाँ
हमर सुखकेर सीमा।

झाँपि लेइत अछि लज्जाकेर
आवरण प्राणकेँ तमसँ,
ओंकरा कऽ दैत अकिंचन
अलगाबय 'हम-अहँ' सँ।

थकुचि उठल आनन्द, यएह अछि
बाधा, दूर हटाउ,
अपनहि अनुकूल सुख सबकेँ
मिलय दिअ, मिलि जाउ।''

फेर आओर एक व्याकुल चुम्बन
रक्त खौलय जहिसँ,
धधकि उठइत अछि शीतल प्राण
तृषा-तृप्तिकेर मिषसँ।

संधि बीच ओहि दु काठक
एकांत गुफामे अपन,
मिझाएल अग्नि शिखा, जगला
पर जहिना सुख-सपन।

ईर्ष्या

ओ चंचलता पलभरि केर
हेरा देलक हृदयकेर स्वाधिकार!
आब मधुर निशा ओ श्रद्धाकेर
पसारय निष्फल अन्धकार!

मृगया छोड़ि नहि मनुकेँ आब
रहि गेल छल आओर अधिक काम;
ओहि मुखमे रक्त छल लागि गेल
हिंसा-सुख लाली सँ ललाम।

आओरो किछु हिंसे टा नहि
खोजि रहल छल ओ मन अधीर;
सुख सीमा अपन प्रभुत्व केर
बढ़इत होऽ जे अवसाद चीर।

तरहथमे जे किछु मनुकेर छल
ओहिमे नवीन किछियो ने रहल;
बनि रहल दीन नहि छल रुचैत
आब श्रद्धाकेर विनोद सरल।

सदैव उठैत अन्तस्तल सँ
दुर्ललित लालसा जे कि कान्त;
झिलमिल भऽ ओ इन्द्रधनुष सन
दबि जाइत अपनहि आप शान्त।

"मुख बंद केने निज उद्‌गम केर
सूतत कहिया धरि अलस प्राण;
चंचल पुकार चिर जीवनकेर
कानत कहिया धरि अछि कतय त्राण!

श्रद्धाकेर प्रणय आओर हुनकर
अभिव्यक्ति सोझ आरम्भिक;
आलिंगनकेर व्याकुल जहिमे
अस्तित्व नञ् तँ अछि कुशल सुक्ति।

स्फुर्ति नहि ओ भावनामयी
स्मितरेखा मे नव-नव विलीन;
अनुरोध नञ् तँ उल्लास, नहि
किछियो कुसुमोद्‌गम सन नवीन।

कहियो ने अबैत अछि बोलीमे
ओ भरल चाह लीला हिलोर;
नृत्यमयी जहिमे नूतनता
अगराबय अछि चंचल मरोड़।

बैसल ओतहीँ देखु जखन
नहि बीछि कए शालि शान्त;
वा करइत अछि संचित अन्न
होइत कखनहुँ नहि कनिसन क्लान्त।

बीजक संग्रह आ ओमहर
चलैत अछि टेकुरीभरल गीत;
सभ किछु लऽ कऽ बैसल अछि ओ
भेल हमर अस्तित्व अतीत।"

घुरल छला मृगया सँ थकि केँ
देखा पड़ैत छल गुफा-द्वार;

किन्तु आगाँ बढ़वाकेर आओर नहि
इच्छा होइत, करइत विचार!

मृग राखि देलनि, फेर धनु सेहो
बैसि गेला मनु थाकल शरीर;
उपकरण ओतय सब छितरल छल
आयुध, प्रत्यंचा, शृंग, तीर।

"रागमयी संध्या पश्चिमकेर
आब अछि कारी भ' गेल;
एखन धरि एला ने अहेरी ओ
की चपल जंतु दूर ल' गेल!"

सोचि रहलि एना अपन मनमे
टेकुरी हाथमे रहल घुमि;
अनमन जकाँ श्रद्धा किछु-किछु
केश राशि लैत छल गुल्फ चुमि।

पीयर केतकी गर्भसन मुँह
आँखिमे आलसभरल स्नेह;
लजाएल छल किछु दुर्बलता
लतिका सन कँपैत लेने देह!

झुकल बोझ सँ मातृत्वक
पुष्ट पयोधर आइ बँधि रहल;
कोमलकारी ऊनक नव
पट्टिका रुचिर साज बनल।

मानु बालुमे सोनाकेर
बहइत कालिन्दी भरि उसाँस;
इन्दीवर केर स्वर्गंगामे
वा एक पाँति कऽ रहल हास!

लपटल छल डाँड़मे नवल वस्त्र
हलुक ओहने बुनल नील;
छल असह्य मधुर पीड़ा गर्भक
जकरा सहैत जननी सलील।

झलकि रहल श्रमबिन्दु बनल सन
भावी माताकेर सरस गर्व;
छितरैत कुसुम बनि छल भूपर
लग आएल छल महापर्व।

जखन श्रद्धाकेँ देखलनि मनु
ओ सहज दुख सँ भरल रूप;
दिढ़ विरोध अपन इच्छाकेर
भाव नहि जहिमे ओ अनूप।

नहि बजलाह किछियो ओ, रहलाह
देखैत चुप साधिकार;
मुसका उठलि किछु-किछु श्रद्धा
जेना जानि गेली हुनकर विचार।

"अहाँ दिनभरि भटकैत छलहुँ कतय"
श्रद्धा बाजलि भरि मधुर स्नेह;
"एतेक प्रिय ई हिंसा अछि
बिसराबय अछि जे देह-गेह!

एकसरि हम एतय देखि रहलहुँ पथ
सुनइत सन पदध्वनि नितान्त;
दौड़ैत छलहुँ अहाँ जखन काननमे
हरिनक पाछाँ बनि कऽ अशान्त।

पीयर पीयर दिन बीति गेल
अहाँ रक्तारुण बनि घुमि रहल;

नीड़ मे देखु विहग युगल
अपन शिशु सभकेँ चुमि रहल।

कोलाहल अछि हुनकर घरमे
गुफा द्वार अछि सुन्न हमर;
की अहाँकेँ कमी रहल एहन
जाइत जकरा लए द्वार दोसर?''

श्रद्धे! नहि किछु कमी अहाँकेँ
मुदा देखि तँ रहलहुँ हम अभाव;
प्रिय वस्तु कोनो बिसरल सन
कऽ दैत जेना विकल घाओ।

कहियाओ एतेक चिर मुक्त पुरुष
लेत श्वास अवरुद्ध निरीह;
पड़ल-पड़ल गतिहीन पंगु सन
बनि रहल जहिना ढहि कऽ डीह।

एक मोह जखन जड़ बंधन सन
कसैत प्राणक कोमल शरीर;
आओर जकड़यकेर आकुलता
गेंठ तोड़ैत तखन भऽ अधीर।

बजला हँसिकए, बजैत
मधु निर्झर ललित गान निकलल;
बनि मधुर प्राण झुमय जहिमे
गानमे होऽ उल्लास भरल।

कतय रहल आब ओ आकुलता
सब किछु जाए जहिमे झुलि;
आशाक कोमल सूत जकाँ
टेकुरी मे छी अहाँ रहल झुलि।

किए ई की मिलैत नहि अहाँकेँ
शावक केर सुन्दर नरम चर्म?
अहाँ बीज बिछय छी किए? हमर
ने भेल शिकारक शिथिल कर्म।

ई पीयर वर्ण केहन ओहि पर
ई बुनैक श्रम सचिन्त किए?
छिपि रहल भेद अछि की एहिमे
बताउ तँ ई ककरा लए!''

''रक्षा करबा मे अपन जे
चलि जाए अहाँकेर कतओ अस्त्र;
किछु जानि गेल छी हम ओ तँ
हिंसक सँ रक्षा करय शस्त्र।

मुदा किछु निरीह जीबिकेँ सेहो जे
उपकारी होएबामे समर्थ;
उपयोगी बनि ओ जीबय ने किए
समझि सकलहुँ ने हम एकर अर्थ!

आवरण रहय चाम ओकर
ऊनसँ हमर चलय काम;
ओ जीवित होऽ मांसल बनि कऽ
हम अमृत दुही, ओ दुग्ध धाम।

ओ स्थल थिक नहि द्रोह करैक
जे पालल जा सकैत सहेतु;
हम ऊँच छी किछु यदि पशु सँ
तँ भवसागरमे बनओं सेतु।''

''मानि सकैत हम तँ ई नहि
एना सुख सहज लब्ध छुटय;

संघर्ष चलय जीवनकेर जे
हम ठकल जाए ओ विफल रहय।

तारामे कारी आँखि केर
हम देखओँ अपन चित्र धन्य;
हमर मानसकेर मुकुर रहय
अहीँ सँ प्रतिबिम्बित अनन्य।

श्रद्धे! नव संकल्प नहि ई—
चलबाक लघु जीवन अमोल;
हम भोगि ली निश्चय ओकरा
जे सुख चलदल सन रहल डोलि!

की कहियो नहि अहाँ देखलहुँ
स्वर्गीय सुख पर प्रलय नृत्य;
फेर नाश आओर चिर निद्रा अछि
किए तखन एतेक विश्वास सत्य?

किए चिर प्रशान्त मंगलकेर ई
एतेक अभिलाषा रहल जागि?
भ' रहल किए ई स्नेह संचित
छी एतेक ककरा पर सानुराग?

ई जीवनकेर वरदान, हमरा
दऽ दिअ रानी अपन दुलार!
हमरे चिन्ताकेर केवल
अहँक चित्त उधि रहल भार।

विश्राम बनल हमर सुन्दर
सिरजैत हो विश्व एक मधुमय;
लहरि उठैत हो एक-एक
जहिमे मधु धारा बहय।''

''हम जे एक बनेने छी
चलि कऽ देखु हमर कुटीर;''
ई कहि कैँ हाथ पकड़ि श्रद्धा
ओतहिँ लऽ चललि मनुकैँ अधीर।

पुआरकेर ओहि गुफा निकट
छोट सन छाजन शांति पुंज
डारि कोमल लतिका दल केर
बनबैत जतय मिलि सघन कुंज।

छल वातायन सेहो कटल
पर्णमय रचित शुभ्र प्राचीर;
आबय क्षण भरि तँ घुरि जाए
थमि जाए कतहु ने बादल, समीर।

छल पड़ल रहल झूला ओहिमे
वेतसी लता केर सुरुचिपूर्ण;
धरती पर चिक्कन बिछ रहल
फूलक कोमल सुरभिचूर्ण।

अभिलाषा सब कतेक मीठ
चुपचाप रहल ओहिमे घुमि!
मधुर गान कतेक मंगलकेर
ओकर कोन कैँ रहल चूमि!

मनु देखैत छला चकित नव
ई गृहलक्ष्मीकेर गृह-विधान!
मुदा नीक सन नहि लागल किछु
'ई किए? ककर सुख साभिमान?'

चुप छला, मुदा श्रद्धे बाजलि
''देखु ई तँ बनि गेल नीड़;

मुदा कलरव करबाक लेल एहिमे
आकुल नञ् भ' रहल एखन भीड़।

चलि जाइत छी अहाँ जखन दूर
एतय टेकुरी ल' कऽ तखन बैसि;
चलबैत रहय छी ओकरा हम
अपन निर्जनता बीच पैसि।

हम बैसल गाबय छी टेकुरी केर
प्रतिवर्त्तनमे स्वर विभोर;
चल गे टेकुरी धिरे-धिरे
प्रिय गेला खेलैक लेल अहेर।

बढय कोमल सूत जीवन केर
तोरे कोमलता समान;
ओहिमे लपटय चिर नग्न प्राण
सुन्दरता केर किछु बढ़य मान।

बुनह किरण सन तोँ उज्ज्वल
हमर मधु जीवनकेर प्रभात;
जहिमे निर्वसना प्रकृति सरल
झाँपि लए प्रकाश सँ नवल गात।

वासना भरल ओहि आँखि पर
आवरण ओढ़ाब' कांतिमान;
सौन्दर्य निखरि आबय जहिमे
लतिकामे विकसल कुसुम समान।

आब आगन्तुक ओ गुफा बीच
पशु सन ने रहय निर्वसन नग्न;
जड़तामे अपन अभाव केर
ओ कहियो नहि रहि सकत मग्न।

नहि सुन रहत लघु विश्व हमर
जखन कहियो नहि रहब;
फूलक रसकेर मृदुल फेन
हम ओकरा लेल बिछाएब।

झुलाएब ओकरा झूला पर
लेब दुलार कऽ देह चुमि;
हमर छातीसँ लपटल एहि
घाटीमे लेत सहज घुमि।

कोमल चानन सन ओ आओत
लहराएत अपन नरम बाल;
पसरल ओकर अधर युग्म सँ
नव मधुमय स्मिति लतिका प्रवाल।

अपन मीठ बोली सँ ओ
बाजत एहन मधुर बोल;
छिटि देत हमर पीड़ा पर
जे कुसुम धूलि मकरन्द घोरि।

सब पानि हमर आँखिकेर
बनि जाएत तखन अमृत स्निग्ध;
ओहि निर्मल नयनमे जखन
देखब अपन चित्र मुग्ध!''

''लतिका सन अहाँ फुलि उठब
कम्पित कए सुख सौरभ तरंग;
भटकब हम सुरभि खोजैत
बनि वन-वन कस्तूरी कुरंग।

सहि सकब नहि हम ई जलन
चाही हमरा हमर ममत्व;

एहि पंचभूत केर रचनामे
हम रमणकरी बनि एक तत्त्व।

ई द्वैत, हे ई दुविधा तँ
अछि प्रेम बाँटय केर प्रकार!
भिक्षुक हम? नहि, ई कहियो नहि
हम घुरा लेब अपन विचार।

दानशीलता सँ अपन अहाँ
बनि सजल जलद बाँटु ने बिन्दु;
विचरब हम एहि सुख नभमे
बनि सकल कलाधर शरदइन्दु।

निहारब कहियो भूलोसँ
आकर्षणमय कए हास एक;
मायाविनि! लेब ने ओकरा हम
वरदान जानिकेँ, ठेहुन टेकि!

हमरा पर एहिदीन अनुग्रह केर
अहाँ बोझ देबयमे समर्थ;
अपनाकेँ नहि समझु श्रद्धा!
होएत प्रयास ई सदा व्यर्थ।

अपन सुख सँ सुखी रहू अहाँ
हमरा दुख पाबय दिअ स्वतंत्र;
'मनक परवशता महा दुख'
यएह जपब हम महामंत्र।

हम छोड़ि एतहि आइ चललहुँ लिअ
संचित संवेदन भार पुंज;
हमरा काँटेटा मिलय धन्य!
होऽ सफल अहीँ केँ कुसुम कुंज।''

कहि, ज्वलनशील अन्तर लेने
मनु चलि गेलाह, छल शून्य प्रान्त;
''थमि जाउ, सुनु हे निर्मोही!''
ओ कहैत रहलि अधीर श्रान्त!

इड़ा

"कोन गहन गुफा सँ अति अधीर
निकलत ई झंझाक धार सन जीवन अशान्त महासमीर
आतुर परमाणु पुंज संग लऽ नभ, अनिल, अनल भू आओर नीर
दैत भय भयभीत सबकेँ भयकेर उपासनामे विलीन
कटुता केँ बाँटि रहल प्राणी करैत विश्वकेँ अधिक दीन
रचना आओर प्रतिपद विनाश मे देखाबैत अपन क्षमता
करैत रहल संघर्ष जखन सँ, सबसँ विराग सबपर ममता
छूटि पड़ल अछि अस्तित्व चिरन्तन धनु सँ कखन ई विषम तीर
कोन लक्ष्य-भेदकेँ शून्य चीर?"

"देखलहुँ हम ओ शैल शृंग
रंजित जे अचल हिमानी सँ, उन्मुक्त उपेक्षा भरल तुंग
प्रतीक अपन जड़ गौरव केर वसुधा केर कऽ अभिमान भंग
सुखी रहय समाधिमे अपन बहि जाइत अछि सब नदी अबोध
पसेनाक बुन्न लऽ कऽ ओकर किछु ओ स्तिमित नयन गत शोक-क्रोध
स्थिर मुक्ति, हम चाहओँ नहि मान ओहन एहि जीवन केर
पवन जकाँ अबाध गति हम तँ, छी चाहि रहल अपन मनकेर
अग जग प्रतिपदमे चुमि चलि जाइत जे कम्पन केर तरंग
—ओ ज्वलनशील गतिमय पतंग।"

"अपन ज्वाला सँ कए प्रकाश
चलि अयलहुँ जखन छोड़ि शुरुक सुन्दर जीवनकेर निवास
छी खोजि रहल वन, गुफा, कुंज मरु अंचलमे अपन विकास
सदय रहलहुँ ककरा पर पागल हम? की हम ममता ने लेलहुँ तोड़ि!
रिझलहुँ उदारतासँ ककरा पर? लगेलहुँ ककरा सँ ने कठिन होड़!
हमर पुकार एहि विजन प्रांतमे कलपि रहल उत्तर नञ् मिलल
झुलसाबैत दौड़ि रहल लू सन कोनो कहिया हमरा सँ फूल खिलल
देखैत छी स्वप्न हम उजड़ल कल्पनालोकमे कए निवास
देखलहुँ कहिया हम कुसुम हास।"

"दुखमय एहि जीवनकेर प्रकाश
ओझरल नभ नीललता केर डारिमे सुख सँ अपन हताश
समझैत छलहुँ कली हम जकरा काँट ओ छितरल आस-पास
चललहुँ कतेक वीहड़ पथ आ पड़ि रहलहुँ कतओ थकि कए नितान्त
हँसैत उन्मुक्त शिखर हमरा पर कानैत हम निर्वासित अशान्त
अति भीषण नियति नटीकेर एहि अभिनयक छाया नाचि रहल
प्रतिपद खोसली शून्यतामे असफलता अधिक कुलाँचि रहल
भगजोगनीकेँ पावस रजनीमे दौड़ि पकड़ैत हम निराश
ओहि ज्योतिकण केर कऽ विनाश।"

"जीवन रातिक अन्धकार!
तोँ बनिकेँ नील तुहिन सागर पसरल छऽ कतेक आर पार
चेतनताक किरन कतेक ई डुबि रहल अछि निर्विकार
कतेक मादक तम, अखिल भुवन भरि रहल भूमिकामे अभंग
छिपि जाइत तोँ भऽ मूर्तिमान प्रतिपलकेर परिवर्त्तन अनंग
अरुण रेख ममताक दुर्बल खिलैत अछि तोरामे ज्योति कला
घुरमल केश राशिमे जेना सोहागिनक कुंकुमचूर्ण भला
हे चिरनिवास विश्राम प्राणकेर मोह मेघ छाया उदार
मायारानी केर केशभार!"

"जीवन रातिक अन्धकार!
अभिलाषा केर नव ज्वलन धूमसन घुमि रहल तोँ दुर्निवार

अपूर्ण लालसा, कसक, चिनगी सन उठइत जहिमे पुकार
बहि रहल यमुना यौवन मधुबन केर चुमि कऽ सब दिगंत
क्रीड़ा नौका सब मन शिशुकेर बस दौड़ लगाबय अछि अनंत
कोकिल अपलक दृगकेर अंजन! हँसैत तोरा सँ सुन्दर छलना
सजीव धूमिल रेखा सँ चंचल चित्रक नव-कलना
एहि चिर प्रवास श्यामल पथमे पसरल पिक प्राणक पुकार
बनि नील प्रतिध्वनि नभ अपार।"

"ई उजड़ल सून नगर-प्रांत
सुख-दुखकेर परिभाषा जहिमे विनष्ट शिल्पसन भ' नितान्त
अपन बिगड़ल टेढ़ रेखा सभसँ, प्राणीक भाग्य बनल अशांत
स्मृति पुंज सुखमय कतेक, अपूर्ण रूचि बनिकऽ मँड़राबय विकीर्ण
एहि ढेरी मे दुखभरल कुरुचि दबि रहल एखन बनि पत्र जीर्ण
आबय दुलारकेँ हिचकी सन सून कोनमे कसक भरल
एहि सुखल गाछ पर मनोवृत्ति अकासबेलि सन हरित रहल
जीवन समाधिक खँड़हर पर जे उठय जरि दीपक अशांत
मिझा जाएत फेर ई स्वयं शांत।"

"सोचि रहला एना मनु पड़ल शान्त
सुख साधन निवास श्रद्धाक छोड़ि जखन चलि अएला प्रशान्त
भटकि अटकैत पथ-पथमे ओ अयला एहि उजरल नगर प्रान्त
बहैत सरस्वती वेग भरल निस्तब्ध भऽ रहलि निशा श्याम
निरखैत नक्षत्र अपलक ओ गति वसुधाकेर विकल वाम
वृत्रघ्नीक ओ जनाकीर्ण उपकूल आइ कतेक सून
स्मृति देवेश इन्द्रक विजय कथाकेर छल दैत दुख दून
दुःस्वप्न देखैत पावन सारस्वत प्रदेश ओ पड़ल क्लान्त
पसरल छल चारू कात ध्वान्त।"

"जीवन केर लऽ कऽ नव विचार
चलल जखन द्वन्द्व छल असुरदलमे प्राणिक पूजाकेर प्रचार

ओहि दिस आत्मविश्वास निरत सुरवर्ग कहि रहल छल पुकारि
''हम स्वयं सतत आराध्य आत्म मंगल उपासनामे विभोर
उल्लासशील हम शक्ति केन्द्र, खोजओँ ककर फेर शरण अओर
आनन्द उच्छलित शक्ति स्रोत जीवन विकास वैचित्र्य लेने
रखैत ई विश्व सदैव हरित अपन नव नव निर्माण केने''
प्राणक सुख साधने मे व्यस्त असुर करइत सुधार
बँधैत नियममे दुर्निवार।"

"पुजैत छल एक देहदीन
दोसर अपूर्ण अहंतामे अपनाकेँ समझि रहल प्रवीण
हठ छल दुनुक दुर्निवार, दुनुटा छल विश्वासहीन
फेर किएने तर्ककेँ शस्त्रसँ ओ सिद्ध करथि-किए होऽ ने युद्ध
संघर्ष चलल हुनकर अशान्त ओ भाव रहल आइ धरि विरुद्ध
हमरामे ममत्वमय आत्ममोह स्वातंत्र्यमयी उच्छृंखलता
भऽ प्रलयभीत तन रक्षामे पूजन करबाकेर व्याकुलता
बना रहल ओ पूर्व द्वन्द्व परिवर्तित भऽ हमरा अधिक दीन
सचमुच छी हम श्रद्धाविहीन।"

"मनु! अहँ श्रद्धाकेँ गेलहुँ बिसरि
ओहि पूर्ण आत्मविश्वासमयीकेँ उड़ा देलहुँ जानिकेँ तूर
अहाँ तँ बुझलहुँ असत विश्व जीवनक तागमे रहल झुलि
जे क्षण बीतय सुख साधनमे ओकरे साँच लेलहुँ मानि
वासना तृप्तिटा स्वर्ग बनल उनटल मतिक ई व्यर्थ ज्ञान
अहाँ बिसरि गेलहुँ पुरुषत्वमोह मे किछु सत्ता छै नारी केर
समरसता अछि संबंध बनल अधिकार आओर अधिकारी केर''
गुँजल ई वाणी तीव्र जखन कम्पित करैत अम्बर अकूल
जेना मनुकेँ गड़ि गेल शूल।"

"ई के? हे फेर वएह काम!
गिरा देलक एहि भ्रममे जे छिनलक जीवनकेर सुख विराम?

प्रत्यक्ष लगल होमय अतीत आब जाहि क्षणकेर शेष नाम
ओहि गतयुग केर वरदान आइ कम्पित करैत अछि अन्तरंग,
अभिशाप तापकेर ज्वाला सँ जरि रहल आइ मन आओर अंग''
बजला मनु ''की भ्रान्त साधनामे हम आइ धरि लगल रहलहुँ
की श्रद्धाकेँ पाबैक लेल अहाँ नहि सस्नेह कहलहुँ?
पओलहुँ तँ, हमरा ओ दऽ देलनि सेहो हृदय निज अमृत धाम
फेर किए नञ् भेलहुँ हम पूर्णकाम?"

"मनु ओ तँ कऽ देल दान
ओ हृदय प्रणयसँ पूर्ण सरल जहिमे जीवनकेर भरल मान
चेतनता जाहिमे केवल निज शान्त प्रभासँ ज्योतिमान
मुदा अहाँ तँ पओलहुँ सदैव हुनकर सुन्दर जड़ देह मात्र
भरि अनलहुँ अहाँ सौन्दर्य जलधि सँ केवल अपन गरल पात्र
अति अबोध अपन अपूर्णताकेँ स्वयं अहाँ नहि बुझि सकलहुँ
करैत जकरा पूर्ण परिणय ओहिसँ अहँ अपनहि सँ रुकलहुँ
'किछु हमर हो' ई राग भाव संकुचित पूर्णता अछि अजान
मानस सागर तुच्छ यान।"

"हँ! आब अहाँ बनबालए स्वतंत्र
सब कलुष ढारिकेँ दोसर पर रखैत छी अपन अलग तंत्र
द्वन्द्वक उद्गम तँ सदैव रहैत शाश्वत ओ एक मंत्र
खिलैत डारिमे काँटक संग मिलैत कुसुम अछि सेहो नवीन
वेधल अहाँ अपन रुचिसँ जकरा चाही लैत चुनि
अहाँ तँ प्राणमयी ज्वालाकेर प्रणय प्रकाश नहि ग्रहण कएल
हँ जलनि वासनाकेँ जीवन भ्रम तममे पहिल स्थान देल
एहन विकल प्रवर्त्तन होए आब जे नियति चक्रकेर बनय यंत्र
होऽ शाप भरल तव प्रजातंत्र।"

"ई नूतन मानव प्रजा सृष्टि
लगल निरन्तरे द्वयतामे रहय करैत वर्णसभक वृष्टि

गढैत अनजान समस्या सब रचैत होऽ अपनहि विनष्टि
चलल अनन्त कलह कोलाहल एकता नष्ट भऽ बढल भेद
अभिलषित वस्तु तँ दूर रहल, हँ मिलल अनिच्छित दुखद खेद
अपन वक्षस्थल केर जड़ता सदा हृदयक आवरण होइत
पहिचान सकत परस्पर नहि चलत विश्व गिरैत-पड़ैत
किछियो जँ होऽ पास भरल तखन दूर रहत सदा मुदा तुष्टि
दुख देत ई संकुचित दृष्टि।"

"अविराम उठल कतेक उमंग
अश्रु बादल सँ चुम्बित होऽ अभिलाषा पुंजक शैल शृंग
हाहाकार भरल होऽ जीवननद उठैत पीड़ाकेर तरंग
लालसा भरल दिन यौवनकेर पतझड़ सन सूखल जाए बीत
उत्पन्न रहय नव सन्देह ओहिसँ संतप्त सदा सभीत
पसरत विरोध स्वजनवर्गक बनिकेँ तमवाली श्याम अमा
बिलखैत होए दारिद दलित ई शस्य श्यामला प्रकृति रमा
बनि इन्द्रधनुष दुख बादलमे बदलल कतेक नर नवल रंग
बनि तृष्णा ज्वालाकेर पतंग।"

"रहि जाए प्रेम नञ् ओ पुनीत
आवृत भ' अपन स्वार्थ सँ मंगल रहस्य सँकुचय सभीत
विरह भरल संसृति होऽ समस्त गबइते बीतय करुण गीत
सीमा होऽ सागरक आकांक्षा क्षितिज निराशा सदा रक्त
सबसँ करु राग-विराग अहाँ अपनाकेँ कए शतशः विभक्त
हृदयक हो विरूद्ध मस्तिष्क दुनुमे होए सद्भाव नहि
कहय ओ चलबालए कतहु जखन हृदय विकल तखन चलि जाए कतहु
बीतय वर्तमान क्षण सब कानिकेँ सुन्दर क्षण सपना हो अतीत
पेंग मे झूलय हारजीत।"

"संकुचित असीम अमोघ शक्ति
बाधामय पथ पर जीवनकेँ लऽ चलल भेदसँ भरल भक्ति

वा कहियो अपूर्ण अहंता मे भऽ रागमयी सन महाशक्ति
नियति प्रेरणा बनि व्यापकता सीमामे अपन रहय बन्द
सर्वज्ञ ज्ञानकेर तुच्छ अंश विद्या बनिकऽ किछु रचय छन्द
नश्वर छायासन ललित कला कर्तृत्व सकल बनिकेँ आबय
नित्यता विभाजित भ' पल-पल मे काल निरंतर ढरल चलय
अहाँ समझि नहि सकब निन्दन सँ शुभ इच्छाकेर अछि पैघ शक्ति
हो विफल तर्कसँ भरल युक्ति।"

"जीवन समस्त बनि जाए युद्ध
ओहि रक्त अग्निकेर वर्षामे बहि जाए सब जे भाव शुद्ध
अपन संदेह सबसँ व्याकुल अहाँ अपनहि भऽ कऽ विरुद्ध
केने रहू अपनाकेँ आवृत देखाउ निज कृत्रिम स्वरूप
उन्नत वसुधाकेर समतल पद चलैत- फिरैत होऽ दंभस्तूप
एहि संसृतिकेर रहस्य श्रद्धा व्यापक विशुद्ध विश्वासमयी
अपन नवनिधि सब किछु दऽ कऽ अहीसँ तँ ओ छलल गेली
अहाँ वर्तमान सँ वंचित भऽ अपन भविष्यमे रहू रुद्ध
सकल प्रपंचे हो अशुद्ध।"

"अहाँ जरामरन मे चिर अशान्त
आइ धरि जकरा समझैत छल सब जीवनमे परिवर्त्तन अनन्त
बिसरत वएह अमरत्व आब अहाँ व्याकुल ओकरा कहूँ अंत
दुखमय चिर चिन्तनकेर प्रतीक! श्रद्धा वंचक बनिकेँ अधीर
ग्रह रश्मि सँ भाग्य बान्हि मानव संतति पीटय लकीर
यएह 'कल्याण भूमि ई लोक' श्रद्धा रहस्य जानय नञ् प्रजा
परलोक वंचना सँ भरि कऽ अतिचारी एकरा मानय मिथ्या
अपन आशा सबमे निराश निज बुद्धि विभव सँ रहल भ्रान्त
ओ चलैत रहय सदैव श्रान्त।"

"अभिशाप अनुगुंजन भेल लीन
छिपि जैत जेना नभ सागरकेर अंतस्तलमे महामीन

फेनोपम मृदु मरुत लहरिमे तारागण झिलमिल भेल दीन
छल अखिल लोक निस्तब्ध मौन आलस झपकी छल ओ विजन प्रान्त
अन्हार भरल राति जकाँ साँस लऽ रहल छला मनु अशान्त
"आइ फेर हमर अदृष्ट बनि आएल वएह ओ सोचि रहल छला
जे देने छल जीवन पर पहिने अपन कारी छाया
भविष्य आइ लिखि देलक ओ! चलत यातना अन्तहीन
आब तँ बचल उपायो नञ्।"

"करैत सरस्वती मधुर नाद
श्यामल घाटीमे बहैत छली निर्लिप्त भावसँ अप्रमाद
उपेक्षित पड़ल रहल उपल सब जेना ओ निष्ठु र जड़ विषाद
खुशीकेर धारा छलि ओ जहिमे छल केवल मधुर गान
छल कर्म निरन्तरता प्रतीक चलैत छल स्ववश अनंत ज्ञान
रहि-रहिकेँ हिमशीतल लहरिक तट सँ टकराएत जाएब
ओहि पर आलोक अरुण किरनक अपन छाया छितराएब
अद्भुत छल! निज निर्मित पथकेर ओ पथिक चलि रहल निर्विवाद
कहइत जाइत किछु सुसंवाद।"

"पसरल प्राचीमे मधुर राग
एक कमल जकर मंडलमे खिलि उठल सोनहुल भरि पराग
व्याकुल भ' जकर परिमल सँ सब श्यामल कलरव उठल जागि
आलोक रश्मि सँ बुनल उषा अंचल मे आन्दोलन अमन्द
करैत मधुर पवन प्रभातकेर सब दिस वितरय लेल मरन्द
नवल चित्रसन ओहि रम्य फलक पर प्रकट भेलि सुन्दर बाला
प्रतीक नयन-महोत्सवकेर ओ अम्लान कमलक नव माला
सुस्मित सुषमाकेर मंडल सन पसराबैत संसृति पर सुराग
सुतल जीवनकेर तम विराग।"

"छिड़ियैल अलक जेना तर्कजाल
उज्ज्वलतम विश्व मुकुट सन ओ शशिखंड जकाँ छल साफ गाल

दु पद्मपलास चसक सन आँखि दैत अनुराग-विराग ढारि
मुकुल जकाँ गुंजरित मधुपसँ ओ मुख जहिमे भरल गान
एकहि ठाम धरल वक्षस्थल पर संसारक सब विज्ञान ज्ञान
कर्म कलस छल एक हाथमे वसुधा जीवन सार लेने
विचारक नभकेँ छल दोसर मधुर अभय अवलंब देने
त्रिबली छल त्रिगुण तरंगमयी आलोक वसन लपटल अराल
पदयुग मे छल गति भरल ताल।"

''छल नीरव प्राणक पुकार
जीवन सर मूर्च्छित निस्तरंग कुहेस घिरि रहल छल अपार,
सूतलि बनि कऽ स्तब्ध अलस चलैत नहि चंचल बेआर
पिबैत मन मुकलित कंज स्वयं अपन मधु बुन्द मधुर मौन
नीरव दिगन्त मे रहय रुद्ध सहसा बजला मनु "हे कौन
आलोकमयी स्मिति चेतनता आयलि ई हेमवती छाया"
छल स्वप्न तिरोहित तन्द्राकेर छितरल केवल उज्ज्वल माया
भरि स्पर्श दुलार पुलकसँ ओ उठैत बीतल युगकेँ पुकारि
घन लहरि नचइत वार-वार।

प्रतिभा प्रसन्न मुख सहज खोलि
ओ बाजलि "हम छी इड़ा, कहू, एतय छी अहाँ के रहल डोलि"
पातर पुट नोकगर नाककेर फरकि रहल कऽ स्मित अमोल
"मनु हमर नाम सुनु बाले! हम विश्वपथिक सहि रहल क्लेश"
"स्वागत! पर देखि रहलहुँ अहाँ ई उजड़ल सारस्वत प्रदेश
चंचल भ' उठल भौतिक हलचल सँ छल ई देश हमर
पड़ल छी आइ धरि एहिमे एहि आशा सँ आएत दिन हमर''
"हम तँ आएल छी देवि बताउ जीवनकेर की सहज मोल
जगकेर भविष्यक द्वार खोलि!"

"एहि विश्व कुहरमे इन्द्रजाल
पसारने अछि रचिकेँ जे ग्रह, तारा, विद्युत, नखत माल

भीषण तम तरंगसन सागर केर खोलि रहल ओ महाकाल
एहि वसुधाकेर लघु लघु प्राणीकेँ की तखन करबा लए सभीत
रचना कठोर ओहि निष्ठुर केर केवल विनाशकेर रहल जीत
जे नाशमयी ओकरा सृष्टि तखन समझैत आइधरि मूर्ख किए
दुखक पुकार गेल नहि जकरा लग ओकर अधिपति होएत केओ
घेरने रहैत सुख नीड़ सबकेँ अविरत विषादकेर चक्रवाल
के ई पट अछि देने डारि!"

"शनिक सुदूर ओ नील लोक
पसरल अछि जकर छाया सन ऊपर-नीचाँ ई गगन शोक
सुनल जाइत अलग ओकरो सँ कोनो प्रकाशकेर महाओक
अपन ओ एक किरन दऽ कऽ हमर स्वतंत्रतामे सहाय
की बनि सकैत अछि? नियति जालसँ मुक्ति दान केर कऽ उपाय।"

☆ ☆ ☆ ☆

"ओ की बाजय, होए केओ बनि पागल नर निर्भर ने करय
सम्हारि अपन बल दुर्बलता गंतव्य मार्ग पर पैर धरय
जुनि करु पसार निज पैर चलु, चलबाक जकरा रहय झोँकि
केओ कखन ओकरा सकल रोकि।"

"हँ अहीं छी अपन सहाय
नहि मानि ओकरा जे कहय बुद्धि फेर ककर नर शरण जाय
विचार संस्कार रहय जतेक दोसर नहि ओकर अछि उपाय
रमणीय परम ई प्रकृति अखिल ऐश्वर्य भरल शोधक विहीन
खोलयमे ओकर पटल अहाँ बनु परिकर कसिकए कर्मलीन
शासन नियमन करैत सबहक बस बढ़ेने चलु अपन क्षमता
निर्णायक छी अहीँ एकर होऽ कतहु विषमता वा समता
चैतन्य करु अहँ जड़ताकेँ विज्ञान सहज साधन उपाय
यश अखिल लोकमे रहल छाय।"

"हँसि पड़ल गगन ओ सून लोक
बसिकए उजड़ल जकर भीतर कतेको जीवन मरन शोक
मधुर मिलन हृदयक कतेक करैत क्रन्दन बनि बिरह कोक
मनु लऽ लेलनि विषम भार अपन ई आइ अपन सिर पर।
प्राची नभमे हँसि पड़ल उषा राज काज अपन देखय नर
देखय कौतुक चलि पड़ल ओ मलयाचलकेर बाला चंचल
लाली लखि प्रकृतिक कपोलमे गिरैत मदमातल तारादल
होइत छल उन्निद्र कमल काननमे मधुपवृन्दक नोंकझोंकि
वसुधा विस्मृत छल सकल शोक।"

"जीवन निशीथ केर अन्धकार
क्षितिजक अंचलमे भागि रहल मुख आवृत कए अहँकेँ निहारि
आइ एतय उषासन आएल छी अहँ इड़े बनि कतेक उदार
जागि पड़ल हमर ई कलरव कऽ मनोभाव सुतल विहंग
हँसैत प्रसन्नता चाह भरल बनि किरनपुंजक सन तरंग
छोड़िकेँ अन्यकेर अवलम्ब जखन बुद्धिवादकेँ अपनाओल
सहज बढलहुँ हम, तँ स्वयं बुद्धिकेँ मानु आए एतय पाओल
हमर विकल्प संकल्प बनय जीवन होऽ कर्मक पुकार
सुख साधनकेर होऽ खुलल द्वार।"

स्वप्न

एखन धरि छल संध्या लाल कमल केसर लऽ मन बहटारैत,
कखन गिरल कमल मुरझिकेँ ओकरा खोजि कतय पाएत!
मिटैत क्षितिज भालकेर कुंकुम मलिन कालिमाकेर कर सँ,
आब व्यर्थ कलिदल पर काकली कोकिल केर मँड़राएत।

पड़ल वसुधा पर कुसुम कामायनी ने ओ मकरन्द रहय,
रेखावलिकेर एक चित्र बस ओहिमे आब ने रंग भरल!
हीन कला शशि ओ प्रभातकेर किरन कतय चाननि रहय,
रवि शशि तारा ई सब केओ ने जतय ओ संध्या छल।

जतय नील, रक्त कमल वा सित शतदल अछि मुरझाएल,
ओ श्रद्धा छल अपन पनिबट पर सरसल, मधुप नहि आएल;
ओ जलधर जहिमे चपला वा श्यामलताकेर नाम नहि,
ओ स्रोत क्षीण शिशिरकला जे हिमतल मे जाय जमल।

विजनकेर एक मौनवेदना नहि झिल्लीकेर झनकार,
उपेक्षा अस्पष्ट संसारक एक कसक रहल साकार;
छायाटा छल हरित कुंजकेर आलिंगन करैत वसुधा,
छोट सन ओ विरह नदी छल जकर अछि आब नहि पार।

उड़इत-उड़इत नील गगनमे किरन विहग-बालिका सन,
नीन सेज पर गिरबालए चललि स्वप्न लोक केँ थाकल सन;
मुदा एक घड़ीक विश्राम नहि विरहनी केर जीवनमे,
तखने चमकि उठल बिजली सन स्मृति जखने लगल घिरय घन।

संध्या नील कमल सँ जे श्याम पराग झरैत छल,
अंचलकेँ शैल घाटी वृन्दक ओ धिरेसँ भरैत छल;
रोमांचित तृण गुल्मदलसँ परबत सुनैत ओहि दुखक कथा,
स्वर जे श्रद्धाक सून साँससँ मिलिकेँ भरैत छल—

"सुख अधिक या कि दुख जीवन मे मंदाकिनी किछु बाजब?
नखत अधिक नभमे या बुदबुद अछि सागर मे गनब?
तारा अहँमे प्रतिबिम्बित अछि, जाइत छी सिन्धु मिलनकेँ,
वा दुनु प्रतिबिम्ब एककेर एहि रहस्यकेँ खोलब!

चित्र जतेक एहि अवकाश पटी पर अछि बिगड़ैत-बनैत,
कतेक रंग भरल ओहिमे जे सुरधनु पट सँ अछि छनैत;
मुदा घोरिकेँ सकल अणु पलमे व्यापक नील शून्यता सन,
आवरण वेदनाक जगतीकेर धूमिल पट अछि बुनैत।

आहि ने निकलय दग्ध साँस सँ सजल अमामे आइ एतय!
जरैत कतेक स्नेह जराकेँ अछि एहन लघु दीप कतय?
साँझ किरन सन मिझा ने जाए ओ एहि कुटीरकेर दीपशिखा,
नीक शलभ निकट नहि तँ सुखी एकसर जरय एतय!

चुप भऽ कऽ आइ सुनब केवल, जे चाहय कहि लए कोकिल,
मुदा ने परागगणक अछि ओहन पहिने जे छल चहलपहल;
सून डारि एहि पतझड़ केर आओर प्रतीक्षा केर संध्या,
कामायनि! अहाँ हृदय दृढ़ कए धिरे-धिरे सब करू सहल!

सब निकुंज दुर्लभ डारि सभक दुख केर लऽ निश्वास रहय,
समीर चलैत अछि ओहि स्मृतिकेर के फेर मिलन कथा कहय?
रुसि रहल जेना विश्व अभिमानी आइ अपराध बिना,
कोन पदवृन्द के धोएत जे अश्रु पलक केर पार बहय!

हे मधुर अछि कष्टपूर्ण सेहो घड़ी जीवनकेर बीतल!
निस्सम्बल भऽ कऽ जोड़ि रहल जखन केओ कड़ी छितरल;

अपन चिर सुन्दरतामे छल एक वएह जे सत्य बनल,
तखन कोना छिपल कतहु सोझरय सुख-दुखक लड़ी ओझरल!

बीतल बात विस्मृत हो सब जाहिमे किछु आब नहि सार,
नहि रहल ओ जरैत छाती आब ओहन नहि शीतल प्यार!
लीन भऽ गेल सब अतीतमे आशा सब मधु अभिलाषा,
विजय भेल कठोर प्रियकेर, मुदा ई तँ हमर नहि हारि!

एक फन्दा छल ओ आलिंगन, स्मिति चपला छल, आइ कतय?
अओर मधुर विश्वास! हे ओ पागल मनकेर मोह रहय!
बनल समर्पण वंचित जीवन ई अकिंचन केर अभिमान,
कहियो किछु दऽ देने छलहुँ हम आब एहन अनुमान रहय!

ई व्यापार कतेक भयसंकुल हे! प्राणयुगक विनिमय!
दऽ दिअ जतेक देबाक होऽ अहाँ, लेब! केओ ई ने करय,
तुच्छ प्रतीक्षा परिवर्त्तनकेर पूर भऽ सकैत ने कहियो,
रवि दऽ कऽ पबैत अछि संध्या एनए-ओनए उड़ुगन छितरय।

ओ किछु दिन जे हँसैत आएल अंतरिक्ष अरुणाचल सँ,
फूल सभक अम्बार स्वरक कूजन लेने कुहक बलसँ!
स्मितिक माया जखन पसरि गेल किरण कलीकेर क्रीड़ा सँ,
चिर प्रवासमे चलि गेल ओ आबय लऽ कहिकेँ छलसँ!

मधुर गंधसँ जखन शिरीषक मान भरल मधुऋतु राति,
रक्तिम मुख रुसि चलि जाइत सहि नहि जागरणकेर घात;
आलाप कथासन दिवस मधुर कहैत पसरि जाइत नभमे,
तखन जगैत ओ स्वप्न अपन ओ तारा बनिकऽ मुसकैत!"

सब निकुंज वनबालावृन्दक वेणुक भरल मधुस्वर सँ,
घुरि आएल छल आबयवला सुनि पुकार अपनहि घर सँ;
युग छिपि गेल प्रतीक्षामे मुदा नहि आएल ओ परदेशी,
कण-कण बरसल तुहिन बिन्दु रजनीकेर भीजल पलसँ।

झरैत विन्दु मरन्द सघन मानसक खिलैत स्मृति शतदल,
मोती कठिन पारदर्शी ई, एहिमे कतेको चित्र बनल!
अश्रु सरल तरल विद्युतकण, नयनालोक विरह तममे
संबल लऽ कऽ प्राण पथिक ई रचय कल्पना जगत लगल।

शोण कोण छल अरुण कमलकेर नव तुषारकेर बिन्दु भरल,
बनि रहल प्रतिच्छवि मुकुरचूर्ण कतेक संग लेने छितरल!
ओ अनुराग हँसी दुलारकेर पंक्ति चलल सूतय तममे,
वर्षा बिरह कुहू मे जरैत खद्योत स्मृतिकेर डरल-डरल।

गुंजारित शृंगनादकेर सून गिरिपथमे ध्वनि चलइत,
दुख तटिनी आकांक्षा लहरल पुलिन अंकमे छल पलइत;
जरल दीप नभकेर, अभिलाषा शलभ उड़ल ओहि ओर चलल,
जल रहि गेल आँखिमे भरल मिझाएल नहि ओ ज्वाला जरइत।

"मा" पुनि एक किलक दूरागत, सून कुटी गुँजि उठल,
उत्कंठा लऽ भरल हृदयमे दुगुण माए उठि दौड़लि;
लुटरी खुलल अलक, रजधूसर बाँहि आबिकऽ गेल लपटि,
निशा तापसीकेर जरैक लेल मिझाएल धुनी धधकि उठल!

आइ धरि हमर भाग्य बनल तू नटखट फिरैत रहय कतय!
हे पिताकेर प्रतिनिधि तोँ सेहो तँ सुख-दुख सघन देलय!
भरैत छह चौकड़ी कतहु तोँ चंचल बनल मृग वनचर,
कोना मना करितहुँ तोरा हम डरैत तोँ नहि रुसि जयबह!"

"कतेक नीक बात कहलहुँ हम रूसी अहाँ मनाउ माय,
लिअ आब जाकऽ हम सुतलहुँ बाजब हम नहि आय;
पाकल फल सबसँ पेट भरल अछि नीन नहि खुलयवाली"
श्रद्धा चुम्बन लऽ प्रसन्न किछु, किछु विषादेँ भरल रहलि आय।

जरि उठैत अछि लघु जीवनकेर मधुर-मधुर ओ हलुक पल,
मुक्त उदास गगनकेर उरमे फोंका बनिकऽ झलकल;

दिवा श्रान्त आलोक रश्मि सब नील अकास मे छिपल कतहु,
करुण वएह स्वर ओहि संसृतिमे पुनि ओ जाएत अछि गलि।

कोमल बंधन प्रणय किरनकेर मुक्ति बनल बढ़इत जाइत,
दूर, किन्तु कतेक प्रतिपल ओ हृदय निकट भेल जाइत!
तन्द्रा मधुर चाँदनी सन जखन पसरल मुर्च्छित मानस पर,
ओहिमे तखन अभिन्न प्रेमास्पद अपन चित्र बनाइत!

कामायनी अपन सुख स्वप्न सकल बनल सन देखि रहलि,
विकल प्रताड़ित ओ युग-युग केर मेटाएल बनि लेख रहलि;
कखनहुँ अंकित छल पवन पर जे कुसुमक कोमल दलसँ,
नभमे आइ पपीहाकेर पुकारि बनि खिचइत रेख रहलि।

आगाँ जरइत अग्नि ज्वालासन इड़ा छथि उल्लास भरल,
पथ आलोकित करैत मनुकेर विपद् नदीमे नाह बनल;
आरोहन उन्नतिकेर शैल शृंग सन महिमा, श्रांति नहि,
बहल तीव्र प्रेरणाक धार सन ओतहिँ उत्साह भरल।

आलोक किरन सन ओ सुन्दर हृदय वेधनी दृष्टि लेने,
खुलि जाइत अछि जिमहर देखइत पथ जकरा तम बन्द केने!
सतत सफलताक मनुकेर ओ उदय विजयिनी तारा छल,
भुखल जनता आश्रय केर निज श्रमकेर उपहार देने!

सुन्दर नगर बसल अछि मनुकेर छथि सहयोगी सभकेओ बनल,
द्वार मंदिरकेर दृढ़ प्राचीर पाँतिमे सघन देखाए पड़ल;
छायाक वर्षा रौद शिशिरमे भेल सम्पन्न साधन,
हर चलबैत कृषक खेत सभमे प्रमुदित श्रम-स्वेद सनल।

ओमहर धातु गलैत अस्त्र आ आभूषण नव बनइत अछि,
मृगया केर उपहार नवल साहसी कतहु लऽ आबय छथि;
वन कुसुम पुंज केर आध खिलल कलि पुष्पलाबि सब चुनैत अछि।
लोध्र कुसुम रज गंध चूर्ण छल, जुटल नवीन प्रसाधन अछि।

होइछ घनकेर अघात सँ जे प्रचण्ड ध्वनि रोष भरल,
तँ सुन्दरीक मधुर कंठ सँ हृदय मूर्च्छना ओने ढरल;
श्रमकेर अपन वर्ग बनाकए करैत सब उपाय ओतय,
मिलित प्रयत्न प्रथा सँ हुनकर पुरक श्री देखइत निखरल।

करइत देश काल केर लाघव ओ प्राणी चंचल सन छथि,
एकत्र कऽ रहल सुख साधन जे हुनकर संबल मे छथि;
श्रम बलकेर विस्तृत छायामे ज्ञान व्यवसाय बढय,
ऊपर आबय नर प्रयत्न सँ जे किछु वसुधा तलमे अछि।

अंकुरित, प्रफुल्लित, हरित-भरित सृष्टि बीज भऽ रहल सफल,
रक्षित मनुसँ प्रलय बीच सेहो पसरल ओ उत्साह भरल;
अपन कुशल कल्पना कऽ कैं आइ स्वचेतन प्राणी,
स्वाबलम्बकेर दृढ़ धरती पर ठाढ़ आब नहि रहल डरल।

ओहि आश्चर्य लोकमे श्रद्धा मलय बालिका सन चलइत,
सिंह द्वार केर भीतर पहुँचलि ठाढ़ प्रहरी सबकैं छलइत;
ऊँच स्तम्भ पर बलभीयुत बनल रम्य प्रासाद ओतय,
धूप धूम सुरभित गृह जाहिमे छल आलोक शिखा जरइत।

स्वर्ण कलश शोभित भवनसँ लगल बनल उद्यान,
ऋजु प्रशस्त पथ बीच-बीच मे कतहु लताकेर कुंज वितान;
जहिमे दम्पति समुद बिहरैत प्रीति भरल दऽ गलबाँही,
सरस मधुप छल गुँजि रहल मदिरा मोद परागक गान।

ओ प्रलम्ब भुज देवदार केर जहिमे ओझरल वायु तरंग,
कलरव मुखरित आभूषण सँ करइत सुन्दर बाल विहंग;
आश्रय दैत वेणुवन सँ निकसल स्वर लहरि ध्वनिकैं,
कियारीमे नागकेसर केर छल अन्य सुमन सेहो बहुरंग।

सिंहासन सम्मुख नव मंडपमे छल कतेको मंच ततय,
सुन्दर मढ़ल चर्मसँ राखल एक ओर अछि सुखद ओतय;

धूम गंध शैलेय अगरुकेर आबय अछि आमोद भरल,
सोचि रहलि सपनामे श्रद्धा 'ई लिअ हम आबि गेलहुँ कतय?'

आओर देखल ओ आगाँ निज दृढ़ करमे चषक धरल,
ओ क्रतुमय पुरुष! मनु, वएह मुख संध्याक लालिमा पियल;
मादक भाव समक्ष एतय के एक सुन्दर चित्र जकाँ,
ई जीवन ककरा देखबा लए मरि-मरिकैं सै बेर जियल।

छलि ढारैत इड़ा ओ आसव जकर बुझैत नहि पिआस,
पीबियोकैं सेहो जाहिमे अछि तृषित कंठकैं नहि विश्वास;
बैसलि मंच वेदिका पर ओ वैश्वानरकेर ज्वाला सन,
पसारैत सौमनस्य शीतल, जड़ताकेर किछु नहि भास।

मनु पुछलनि "किछु करबा लए आओर एखन अछि शेष एतय?"
कहलनि इड़ा "सफल एतबेमे एखन कर्म सविशेष कतय!
की सब साधन स्ववश भऽ चुकल?" "नञ् एखन हम रिक्त रहओं -
देश बसेलहुँ मुदा उजड़ल अछि सून मानस देश एतय।

सुन्दर मुख, आँखिकेर आशा, मुदा भेल ई किनकर अछि,
एक चतुरपन प्रतिपद शशिकेर, भरल भाव किछु रीसक अछि;
मान मोचनक किछु अनुरोध करैत आँखिमे संकेत
हे हमर चेतनता! बाजु अहाँ ककर ई किनकर अछि?"

"प्रजा अहाँक, अहाँकैं प्रजापति सबहक गुनैत छी हम,
ई सन्देह भरल फेर केहन नव प्रश्न सुनैत छी हम?"
"अहाँ हमर रानी, प्रजा नहि हमरा ने आब भ्रममे ओझराउ,
मधुर हंसिनी! कहू 'प्रणयक मोती आब चुनैत छी हम।'

हमर भाग्य गगन धूमिल सन, प्राची पट सन अहाँ ओहिमे,
खुलि कऽ स्वयं अचानक कतेक प्रभापूर्ण छी छवि यश मे;
ओ प्रकाश बालिके! बताउ हम अतृप्त आलोक भिखारि
डूबत कखन पिआस हमर एहि मधु अधर दलक रसमे?

ई सुख साधन आओर रूपा रातिकेर शीतल छाया,
स्वर संचरित दिशासब, मन अछि उन्मद आ थकल काया;
तखन अहाँ प्रजा बनु नञ् रानी!'' नर पशु कऽ हुँकार उठल,
ओने पसरइत मदिर घटा सन अंधकारक घन माया।

आलिंगन! फेर भयकेर क्रन्दन! वसुधा जेना काँपि उठल!
ओ अतिचारी, दुर्बल नारी परित्राण पथ नापि उठल!
रुद्र हुँकार भेल अंतरिक्षमे हलचल भयानक छल,
अहे आत्मजा प्रजा! पापक परिभाषा बनि शाप उठल।

क्षुब्ध भेल ओने गगनमे देव शक्ति सब क्रोध भरल,
खुलि गेल अचानक रुद्र नयन व्याकुल नगरी काँपि उठल;
स्वयं प्रजापति छल अतिचारी देव एखन शिव बनल रहथु!
नहि; एहि सँ चढ़ल शिंजिनी अजगव पर प्रतिशोध भरल!

प्रकृति त्रस्त छल, भूतनाथ नृत्य विकम्पित पद अपन,
ओने उठाएल भूत सृष्टि सब होमय लागल छल सपन!
सब व्याकुल आश्रय पाबए लेल स्वयं कलुषमे मनु संदिग्ध,
समझिकेँ फेर किछु होएत वसुधा केर थर-थर कम्पन।

प्रलयमयी क्रीड़ासँ काँपि रहल छल सब आशंकित जन्तु,
सबकेँ अपन अपन पड़ल, छिन्न स्नेहक कोमल तन्तु;
रक्षाक भार लेने छल जे आइ कतय ओ शासन छल,
इड़ा भरिकेँ क्रोध लज्जासँ बहार निकलि पड़लि पर्यंत।

देखलनि ओ, जनता व्याकुल राजद्वार कऽ रुद्ध रहलि,
झुकि आएल प्रहरी दल सेहो हुनकर भाव विशुद्ध नहि;
नियमन एक झुकाओ दबल सन, टूटय वा ऊपर उठि जाए,
प्रजा आइ किछु अओर सोचैत आइधरि जे अनुकूल रहलि।

छिपि बैसला मनु कोलाहलमे घिरि किछु सोच विचार भरल,
प्रजा त्रस्त सन द्वार बन्द लखि मन मे कोना पुनि धैर्य धरल!

आन्दोलन शक्ति लहरिसबमे रुद्ध क्रोध भीषणतम छल,
महानील लोहित ज्वालाकेर नृत्य सबसँ इतर पड़ल!

ओ विज्ञानमयी परिभाषा पंख लगाकेँ उड़ैक लेल,
जीवनकेर असीम आशा कहियो नहि नीचाँ मुड़ैक लेल;
अधिकारक सृष्टि आओर ओकर ओ मोहमयी माया,
खाधि बनि पसरल वर्ग दलक कहियो नहि जे जुड़ैक लेल।

किछु क्षुब्ध भऽ उठला असफल मनु आकस्मिक बाधा केहन,
ई भेल की समझि पाओल नहि, प्रजा जुटल किए आबि एहन!
विकल छल परित्राण प्रार्थना देव क्रोध सँ बनि विद्रोह,
स्पष्टे ओ घटना कुचक्र सन रहलि इड़ा ओतय जखन।

''बन्द कऽ दिअ द्वार आब एतय तँ हिनका नहि आबय देब,
उत्पात कऽ रहलि प्रकृति आइ हमरा बस सूतय देब!''
एना कहि कऽ मनु प्रगट क्रोधमे, डरल सन छला मुदा मनमे,
सोचैत चलला शयन कक्षमे जीवनकेर लेब-देब।

काँपि उठलि श्रद्धा सपनामे सहसा हुनकर आँखि खुलल,
छली कोना ओ एतेक भऽ गेला हम की ई देखल?
भयकेर कतेक स्वजन स्नेहमे आशंका उठि आबय,
होएत आब की इएह सोचमे व्याकुल रजनी बीतल।

संघर्ष

मुदा बनल छल सत्य स्वप्न ओ श्रद्धाकेर छल,
इड़ा संकुचित ओने प्रजामे क्षोभ सघन छल।

देखि विकल भौतिक विप्लव ओ छल घबड़ाएल,
त्राण प्राप्त करबा लए राज शरणमे आएल।

मुदा मिलल अपमान अओर व्यवहार बेजाए छल,
सबहक भीतर मनस्तापसँ रोष भरल छल।

निरखैत रुष्ट पीयर-पीयर बदन इड़ा केर,
रुकल नहि छल तांडव लीला ओने प्रकृति केर।

भीड़ बढ़ि रहल आँगनमे छल सब जुड़ि आएल,
कऽ द्वार बन्द छल प्रहरीगण ध्यान लगाएल।

कालिमापटी मे निबिड़ राति दबल-नुकल सन,
होइत प्रगट रहि-रहि मेघक ज्योति झुकल सन।

चिन्तित सन पड़ल शयन पर छला मनु सोचि रहल,
जंगली जन्तु क्रोध आओर शंका केर छल नोचि रहल।

"कतेक तुष्ट ई प्रजा बनाकेँ भेल हम छलहुँ,
कहि के सकत मुदा हुनका पर रुष्ट भेल छलहुँ।

कतेक जव सँ भरि कऽ एकर चक्र चलाएल,
अलग अलग ई मुदा एक ओकर छाया छल।

नियमनक लेल हम प्रयत्न कऽ बुद्धिबल सँ,
एकत्र कऽ हिनका चलाबैत नियम बनाकेँ।

मुदा स्वयं सेहो की ओसब मानि ली हम,
कनियोँ नहि स्वच्छंद सोन सन सतत गली हम।

सृष्टि हमर जे अछि ओकरे सँ डरल रही हम,
की अधिकार नहि कि कखनहुँ अविनीत रही हम।

श्रद्धाकेर अधिकार समर्पण दऽ नहि हम सकलहुँ,
भने कखन बढैत प्रतिपल ओतय हम रुकलहुँ!

नियम-परतंत्र इड़ा चाहैत छथि हमरा बनबय,
निर्बाधित अधिकार एक नहि ओ छथि मानय।

बंधन विहीन विश्व एक परिवर्त्तन तँ अछि,
रवि-शशि- तारागण ई सब एकर गतिमे जे अछि।

रहैत रूप बदलैत धरती सागर बनइत,
मरुस्थल बनल समुद्र जलधिमे ज्वाला जरइत।

सबहक भीतर दौड़ लगल अछि अग्निकेर तरल,
हिमनग बहैत गलिकेँ सरिता लीला रचल।

नृत्य स्फुलिंगकेर ई एक पल आएल बीतल!
एतय सुभीता ठहरैक कखन ककरा भेटल?

कोटि-कोटि नक्षत्र शून्यकेर महाविवरमे
करि रहल लास-रास लटकैत रहल अधरमे।

लहरि कतेक उठैत अछि पवनक स्तरमे,
एतेक ई असंख्य चित्कार अओर परवशता ओहिमे।

नर्तन उन्मुक्त ई विश्वक स्पन्दन द्रुततर
चलल जा रहल गतिमय होएत अपन लय पर।

हम वएह कखनहुँ-कखनहुँ बेरि-बेरि बहुरब देखैत छी,
चलि रहल जाहिसँ जीवन ओकरा मानैत नियम छी।

रुदन हास बनि मुदा पलकमे छलकि रहल अछि,
खोजैत विमुक्ति प्राण शत-शत ललकि रहल अछि।

जीवनमे अभिशाप शापमे ताप भरल अछि,
सृष्टि कुंज एहि विनाशमे भऽ रहल हरित अछि।

'विश्व बन्हल अछि एक नियमसँ' ई पुकारि सन,
हिनकर मनमे पसरि गेल अछि दृढ़ प्रचार सन।

नियम ई परिखल फेर सुख-साधन जानल,
वशी नियामक रहय एहन हम नहि मानल।

हम चिर बंधनहीन मृत्यु सीमा उल्लंघन,
करैत हरदम चलब हमर अछि ई दृढ़ प्रण।

महानाशकेर सृष्टि बीच जे क्षण होऽ अपन,
चेतनताक तुष्टि वएह अछि फेर सब सपन।''

प्रगतिशील मन रुकल एक क्षण करओट लऽ कऽ
देखल इड़ा ठाढ़ फेर अविचल सब किछु दऽ कऽ!

आओर कहि रहलि ''मुदा नियामक नियम नहि मानय
तँ फेर सब किछु नष्ट भेल सन जानु निश्चय।''

अएँ अहाँ फेर सेहो एतय आइ कोना चलि आएलि,
की किछु आओर उपद्रवकेर अछि बात समाएल—

मनमे एतेक जे किछु ई सब आइ भेल अछि!
तुष्टि की नहि भेल अछि? बचि रहल आब कतेक अछि?

''शासन स्वत्व अहाँकेर सब मनु सतत निमाहय,
तुष्टि, चेतनाकेर क्षण अपन अन्य नहि चाहय!

आह प्रजापति भेल नहि ई अछि, नहि कहियो होएत,
निर्बाधित अधिकार आइ धरि के अछि भोगलक?''

ई मनुष्य आकार चेतनाकेर अछि विकसित,
एक विश्व अपन आवरणमे अछि निर्मित।

संघर्ष जे चिति केन्द्रमे चलल करैत अछि,
भाव द्वयताकेर सदा जे मनमे भरैत अछि।

ओ पहिचान रहल विस्मृत सन एक-एककेँ,
होएत सतत समीप मिलाबय अछि अनेककेँ।

स्पर्धामे जे ठहरत, उत्तम ओ रहि जाएत,
कल्याण करय संसृति केर शुभ मार्ग बताएत।

एहि लेल व्यक्ति चेतना परतंत्र बनल सन,
रागपूर्ण, मुदा द्वेषपंक मे सतत सनल सन।

पद-पद पर अछि नियत मार्गमे ठोकर खाएत,
अपन लक्ष्य निकट श्रान्त भऽ चलइत जाएत।

ई जीवन उपयोग, यएह अछि बुद्धि साधना,
श्रेय अपन जहिमे यएह सुखकेर अराधना।

सुखी लोक होए आश्रय लए जँ ओहि छायामे,
प्राण समान रमू तँ राष्ट्रकेर एहि कायामे।

काल परिधिमे देश कल्पना होइत लय अछि,
खोजैत काल रहय चेतनामे निज क्षय अछि।

ओ अनन्त चेतन नचैत अछि उन्मद गति मे,
अहाँ सेहो नाचू अपन द्वयतामे विस्मृतिमे।

क्षितिज पटीकेँ बढ़ू उठाए ब्रह्माण्ड विवरमे,
घननाद सुनु गुँजारित एहि विश्वकुहरमे।

चलु ताल ताल पर नहि छूटय लय जहिमे,
स्वर तानु नञ् विवादी अहाँ अनजानहि एहिमे।''

''अच्छा! अहाँकेँ समझाबैक आब फेर तँ ई नहि अछि,
जानि चुकल सब कतेक अहाँ प्रेरणामयी छी।

मुदा एखन घुरिकए आइये पुनि भऽ आएल,
साहसकेर ई बात मनमे कोना समाएल।

आह अधिकार प्रजापति होएबाक इएह की!
हमर अभिलाषा अपूर्ण रहत सदा की?

हम सबकेँ वितरित करइते सदा रहब की?
किछु पाबैक प्रयास ई अछि पाप, सहब की!

प्रतिदान देलहुँ अहाँ सेहो किछु कहि सकैत छी?
दइए कऽ हमरा ज्ञान जीवित रहि सकैत छी!

वएह जखन भेटल नहि अछि जे हम चाहैत छी,
घुरा लिअ तखन बात व्यर्थ जे एखन कहैत छी!''

''इड़े! ओ वस्तु चाही हमरा जे हम चाहैत छी,
अहाँ पर होऽ अधिकार नहि तँ प्रजापति व्यर्थ छी।

देखिकऽ अहाँकेँ बंधने आब सब टूटि रहल अछि,
नहि आब कनेको शासन वा अधिकार चाहैत छी।

देखू ई दुर्धर्ष प्रकृतिकेर एतेक कम्पन,
हमर हृदय समक्ष क्षुद्र अछि एकर स्पन्दन!

ई कठोर हँसि कए प्रलय खेल खेलल अछि,
मुदा एकसर आइ कोमल कतेक भऽ रहल अछि!

अहाँ कहैत छी विश्व एक लय अछि, हम ओहिमे,
लीन भ जाउ? मुदा धरल अछि की सुख एहिमे।

रोदन केर निज एक अलग अकास बना ली,
ओहि क्रन्दन मे अट्टहास हो अहाँ केँ पाबि ली।

फेर सँ सागर उछलि बहय मर्यादा बहार,
फेर वात्या हो वज्र प्रगति सँ भीतर-बहार।

फेर डगमग होऽ नाह लहरि ऊपरसँ भागय,
रवि शशि तारा सावधान होऽ चौंकय जागय।

मुदा लगे रहूँ बालिके, हमर छी अहाँ,
हम खेलाड़ी छी किछु नहि जे खेलु आब अहाँ!''

''आह नहि समझब हमर नीक बात सब की,
उत्तेजित भऽ कऽ अहाँ अपन प्राप्य नहि पाबी।

शरण मांगैत प्रजा क्षुब्ध भऽ ओने ठाढ़ अछि,
आतंक विकम्पित प्रकृति सदा घड़ी-घड़ी अछि।

सावधान, हम शुभाकांक्षिणी आओर कहू की!
कहैक छल कहि चुकलहुँ आब आओर एतय रहू की!''

''मायाविनी, अहाँ पाबि लेलहुँ बस एहिना छुट्टी,
लड़िका जेना खेलमे कऽ लेइत कुट्टी।

अभिशाप मूर्तिमती बनल सन सम्मुख अयलहुँ,
संघर्ष भूमिका हमरा तँ अहीँ देखेलहुँ।

वेदिका भयंकर रक्त भरल ज्वाला ओहिमे,
सीखि निकाललहुँ विनयन केर उपचार अहीँ सँ।

चारि वर्ण बनि गेल बँटल श्रम हुनकर अपन,
शस्त्र यंत्र बनि गेल देखल नहि जकर सपन।

आइ शक्ति केर खेल खेलय मे आतुर नर,
प्रकृति संग संघर्ष निरन्तर आब केहन डर?

बाधा नियमक नहि पासमे आबय आब दिअ,
एहि हताश जीवनमे क्षण सुख मिलि जाए दिअ।

राष्ट्रस्वामिनी, लिअ ई सब किछु वैभव अपन,
केवल अहाँकेँ सब उपाय सँ कहि ली अपन।

ई सारस्वत देश वा कि फेर ध्वंस भेल सन,
जानु, अहाँ छी आगि आओर ई सब धुआँ सन।''

''मनु हम जे केलहुँ ओकरा एना कहि नहि बिसरू,
जतेक अहाँकेँ मिलल ओहिमे एना नहि फुलु।

हम अहाँकेँ प्रकृति संग संघर्ष सिखेलहुँ,
केन्द्र बना कऽ अहाँकेँ हम अनहित नहि केलहुँ।

पसरल एहि विभूति पर हम अहाँकेँ स्वामी,
सहज बनेलहुँ, अहाँ आब जकर अंतर्यामी।

मुदा अपराध हमर आइ अलग ठाढ़ अछि,
हँ मे हँ नहि मिलबओँ तँ अपराध पैघ अछि।

मनु! देखु ई भ्रान्त निशा आब बीति रहल अछि,
नव उषा तमसकेँ प्राचीमे जीति रहल अछि।

एखन समय अछि हमरा पर किछु विश्वास करू तँ,
बनइत अछि सब बात अहाँ कनि धैर्य धरू तँ।''

आओर प्रमादकेर फेर सँ एक क्षण ओ आएल,
एमहर इड़ा द्वार दिअ निज पाएर बढ़ाओलि।

मुदा रोकि लेल गेली ओ मनुक भुजयुगसँ,
निस्सहाय भऽ देखैत रहलि ओ दीन दृष्टिसँ।

''ई सारस्वत देश अहाँकेर अहाँ छी रानी!
हमरा अपन अस्त्र बना करैत मनमानी।

आब पंगु भेल सन ई चलबामे समझु,
हमरा सेहो मुक्त आब अपन जाल सँ समझु।

शासनकेर ई प्रगति एखन रुकत सहजहिँ,
किएक तँ दासता हमरा सँ आब भऽ सकत नहि।

हम शासक, हम चिर स्वतंत्र अहाँ पर सेहो हमर
होऽ अधिकार असीम, सफल होए जीवन हमर।

छिन्न-भिन्न अन्यथा भेल जाइत अछि पलमे,
एखन व्यवस्था सकल डुबल जाए अतलमे।

वसुधाकेर अति भयसँ कम्पन देखि रहल छी,
आओर नभकेर ई निर्मम क्रन्दन सुनि रहल छी।

मुदा अहाँ बन्दी छी आइ हमर बाँहिमे,
हमर छातीमे,'' डूबल फेर सब आहिमे!

सिंहद्वार अरराएल जनता भीतर आएल,
''हमर रानी'' ओ जे चित्कार मचाएल।

तखन छला हाँफि रहल अपन दुर्बलतामे मनु,
स्खलित विकम्पित पद ओ काँपि रहल छला एखनहुँ।

वज्रखचित लऽ राजदंड मनु भेला सजग तखन,
आओर पुकारल ''सुनि तँ लिअ जे कहय छी एखन—

तृप्तिकर सुखक साधन अहाँकेँ सकल बतेलहुँ,
हमही श्रमभाग केलहुँ फेर वर्ग बनेलहुँ।

अत्याचार प्रकृति कृत हम सब जे सहैत छी,
करइत किछु प्रतिकार आब ने हम चुप रहैत छी!

आइ नहि पशु छी वा बौक जंगली हम,
ई उपकार की बिसरि गेलहुँ हमर आइ अहाँ एकदम?''

ओ बजला तामससँ भीषण मनकेर दुख सँ
''देखु पाप पुकारि उठल अपनहि मुखसँ!

योगक्षेमसँ अधिक संचयवला अहाँ,
लोभ सिखाकेँ एहि विचार संकटमे देलहुँ अहाँ।

हम संवेदनशील भऽ गेलहुँ इएह मिलल सुख,
पीड़ा बुझय लगलहुँ बना कऽ जिन कृत्रिम दुख!

अहाँ यंत्र सँ सबहक प्रकृत शक्तिकेँ छिनलहुँ!
शोषण कए जीवनी जर्जर छिन्न बनेलहुँ!

आओर इड़ा पर ई की अत्याचार केने छी?
एही लेल हम सबहक बल अहाँ एतय जिबय छी?

आइ वंदिनी हमर रानी इड़ा एतय छथि,
हे यायावर! आब अहाँक निस्तार कतय अछि?''

''तँ हम छी फेर आइ एकसर जीवन रणमे,
प्रकृति आ ओकर पुतराकेर दल भीषणमे।

आई साहसीकेर पौरुष निज तन पर लेखी,
राजदंडकेँ वज्र बनल सन सचमुच देखी।''

एना कहि मनु अपन भीषण अस्त्र सम्हारल,
तैसहिँ देव 'आगि' अपन ज्वाला उगलल।

छुटि चलल वाण नोकगर तीक्ष्ण धनुषसँ,
टूटि रहल अति पीयर नील धूमकेतु नभसँ।

अन्हड़ छल बढ़ि रहल प्रजादल सन झुँझलाइत,
रण वर्षामे शस्त्र सब सन बिजली चमकाएत।

मुदा निर्दय मनु वर्जन करैत ओहि वाणयूथकेँ
बढ़ैत थकुचैत कत्तासँ जन प्राण सबकेँ।

तांडवमे छल तीव्र प्रगति, परमाणु विकल छल,
नियति विकर्षणमयी, त्राससँ सब व्याकुल छल।

मनु फिरि रहला अलातचक्र सन ओहि घन तम मे,
ओ रक्तिम सनक नचैत कर निर्मम मे।

तीव्र युद्ध ध्वनि उठल भयानक भेल अवस्था,
बढ़ल विपक्ष समूह मौन पद दलित व्यवस्था।

आहत पाछाँ हटैत स्तम्भसँ टिकिकए मनु,
श्वास लेल, टंकार कैल दुर्लक्ष्यी धनु।

बहैत विकट अधीर विषम उंचास वात छल,
मरण पर्व छल, नेता आकुलि आ किरात छल।

ललकारल "बस आब एकरा नहि जाए देब,"
मुदा सजग मनु पहुँचि गेला कहि "लेब-लेब।

कायर तोँ दुनुटा उत्पात मचौलह,
हे, समझिकेँ अपन जकरा अपनैल छलह।

तँ फेर आबि देखह कोना होइत अछि बलि,
रण ई, यज्ञ पुरोहित ओ किलात आ आकुलि।"

आओर धराशायी छल असुर पुरोहित ओहि क्षण,
इड़ा एखन कहैत जाइत छलि, "बस रोकु रण।"

भीषण जनसंहार अपनहिं तँ होइत अछि,
हे पागल प्राणी तोँ किएक जीवन गमबय छह।

हे अभिमानी थमि जाउ एतेक आतंक किए,
अहाँ सेहो सुखसँ जीबु पुनि सबकेँ जीबय दिअ।

धधकैत वेदी ज्वाला मुदा के सुनि रहल,
सामूहिक बलिकेर अद्‌भुत पंथ छल निकलल।

रक्तोन्मद मनुकेर हाथ ने आबो रुकैत छल,
प्रजा पक्षकेर सेहो नहि किछु साहस झुकैत छल।

ओतहिँ धमकी सम ठाढ़ इड़ा सारस्वत रानी,
ओ प्रतिशोध अधीर रक्त बहैत बनि पानि।

धूमकेतु सन चलल रुद्र वाण भयंकर,
लेने पुच्छमे ज्वाला अपन अति प्रलयंकर।

अंतरिक्षमे महाशक्ति हुँकार कऽ उठल,
शस्त्रसभकेर धार भीषण वेग भरि उठल।

आ गिरल मनु पर, मुमुर्षु ओ गिरला ओतहिँ सत्वर,
रक्त नदीकेर बाढ़ि पसरैत छल ओहि भूपर।

निर्वेद

क्षुब्ध मलिन किछु मौन बनल,
ओ सारस्वत नगर पड़ल छल,
विगत कर्मकेर जकरा ऊपर
विष विषाद आवरण तनल छल।

ग्रह-तारा उल्काधारी प्रहरी-
सन नभमे टहलि रहल,
की होइत अछि ई वसुधा पर
अणु-अणु किए अछि मचलि रहल?

जागरण सत्य अछि जीवनमे
वा सुसुप्ति टा सीमा अछि,
रहि रहि आबए अछि पुकारि सन
'ई भव रजनी भीमा अछि।'

निशिचारी भीषण विचारकेर,
पंख भरि रहल सर्राटा,
चलल जा रहलि छलि सरस्वती
खिचि रहल सन सन्नाटा।

एखन घाइलक सिसकीमे
जागि रहल छल मर्म व्यथा,
पुरलक्ष्मी खग रवकेर बिच किछु
कहि उठइत छलि करुण कथा।

किछु प्रकाश दीप-पाँतिसँ ओकर
धूमिल सन छल निकलि रहल,
रुकि-रुकि कऽ छल पवन चलि रहल
खिन्न भरल अवसाद रहल।

सजग सतत चुपचाप ठाढ़
मौन निरीक्षक सन भयमय छल,
नील आवरण अन्धकारकेर
दृश्य जगतसँ पैघ रहल।

शून्य राजचिह्न सँ मंदिर
बस समाधि सन ठाढ़ रहल,
किएकि ओतहि घाइल शरीर ओ
मनुकेर तँ छल पड़ल रहल।

इड़ा ग्लानि सँ भरल छलि बस
सोचि रहलि बात बीतल,
घृणा आओर ममतामे एहन
कतेक राति अछि बीति चुकल।

नारीकेर ओ हृदय! हृदयमे
सुधा सिन्धु लहरि लैत,
बाड़व जलन ओहिमे जरिकेँ
कंचन सन जल रँगि दैत।

मधुपिंगल ओहि तरल अग्निमे
शीतलता संसृति रचैत,
क्षमा आ प्रतिशोध! आह हे
माया दुनुकेर रचैत।

"ओ स्नेह केने छला हमरासँ
हँ अनन्य नहि रहला ओ,

सहज लब्ध छल ओ अनन्यता
पड़ल रहि सकय जतय कतओ।

अतिक्रमण कऽ बाधा सबहक
जे अबाध भऽ दौड़ रहल,
वएह स्नेह अपराध भऽ उठल
जे सब सीमा तोड़ि चलल।

''हँ अपराध एक एकसर
मुदा कतेक ओ भीम बनल,
उठिकए जीवन केर कोनसँ
आइ एतेक असीम बनल!

आओर प्रचुर उपकार सबटाओ
—सहृदयताकेर सब माया—
शून्य शून्य छल! केवल ओहिमे
खेलि रहल छल छल छाया!

''कतेक दुखी एक परदेशी
बनि, ओहि दिन जे आएल छल,
धरा नहि छल जकर नीचाँ
शून्य चतुर्दिस पसरल छल।

शासनकेर ओ सूत्रधार छल
आधार नियमनक बनल,
निर्मित नव विधानसँ अपन
स्वयं दंड साकार बनल।

''सागरकेर लहरिसँ उठिकेँ
शैल शिखर पर सहज चढ़ल,
गति निर्बाध, संस्थान सँ
रहैत छल जे सदा बढ़ल।

आइ मरणासन्न पड़ल ओ
अतीत सब ओ सपना छल,
हुनकेँ तँ सब भेल आन
सबहक जे अपन छल।

''मुदा वएह हमर अपराधी
जकर ओ उपकारी छल,
प्रकट ओकरेसँ दोष भेल अछि
जे सबकेँ गुणकारी छल।

हे दुनु सर्ग-अंकुर केर
नीक बेजाय ई पल्लव छथि,
एक दोसरकेर सीमा छथि
किए नहि युगलकेँ पिआर करथि?

''अपन हो वा दोसर केर सुख
बढल कि बस दुख ओतय बनल,
थमि जेबाकेर कोन बिन्दु अछि
ई जेना किछु ज्ञात नहि छल।

प्राणी निज भविष्य चिन्तामे
वर्तमानकेर सुख छोड़य,
पसारैत सन रोड़ा अपनहि
पथमे अछि दौड़ चलय।''

''एकरा दंड देबऽ लए बैसल
वा करैत रखवारि हम,
ई केहन अछि विकट बुझौअलि
कतेक ओझरौटवाली हम?

एक कल्पना अछि मीठ ई
एहिसँ किछु सुन्दर होएत,

हँ कि, यथार्थ सँ सुन्दर
सत्य एकरे वरण करत।''

अपन विचारसँ चौंकि उठल
दूरागत किछु ध्वनि सुनैत,
केओ एहि निर्जन रातिमे
चलल आबि रहल अछि कहैत—

''हे बता दिअ दयाकए हमरा
हमर प्रवासी छथि कतय?
ओहि पागलसँ मिलैक लेल
फेरा हम दऽ रहलहुँ एतय।

रुसि गेल छल अपनापन सँ
अपनाए सकलहुँ नहि ओकरा हम,
ओ तँ हमर छल अपने
भने मनबितहुँ ककरा हम!

यएह भूल आब शूल जकाँ भऽ
उरमे सालि रहल हमर,
कोना पाओब हम ओकरा
आबि कहय केओ सत्वर।''

इड़ा उठलि, देखाए पड़ल राजपथ
धुमिल सन छाया चलैत,
करुण वेदना छल वाणीमे
ओ पुकारि जेना जरैत।

थकल शरीर वसन अस्त व्यस्त
केश राशि अधिक अधीर खुलल,
छिन्न पत्र मकरन्द लुटल सन
जेना कोनो कली मुरझल।

नव कोमल अवलम्ब संगमे
वय किशोर आंगुर पकड़ल,
मौन धैर्यसन चलल आबि रहल
अपन माएकेँ जकड़ल

ओ दुनुटा मा बेटा
दुखी बटोही थाकल छल,
खोजि रहल छल बिसरल मनुकेँ
घाइल भऽ जे छला लेटल।

इड़ा आइ किछु द्रवित भऽ रहलि
दुखी जनकेँ ओ देखलनि,
''अहाँ केँ बिसराएल के?
पहुँचलि निकट आ फेर पुछलनि।

भटकैत कतय एहि रजनीमे
जाएब अहाँ बाजू तँ,
चंचल छी आइ अधिक बैसु
व्यथा गेँठ निज खोलु तँ।

जीवनकेर नमहर यात्रामे
हेराएल सेहो अछि भेटि जाएत,
जीवन अछि तँ मिलन अछि कहियो
दुखकेर राति कटि जाएत।''

श्रद्धा रुकलि कुमार श्रान्त छल
भेटैत अछि विश्राम एतय,
जतय इड़ाकेर संग चललि
अग्नि शिखा प्रज्ज्वलित रहय।

सहसा धधकत वेदी ज्वाला
मंडप आलोकित करइत,

कामायनी देखि पाओलि किछु
पहुँचलि ओहि तक डेग भरइत।

आओर वएह मनु! घाइल सचमुच
तँ की सपना साँच रहल?
"आह प्राण प्रिय! ई की? अहाँ एना!"
पिघलि हृदय, बनि नीर बहल।

श्रद्धा आबि बैसलि, इड़ा चकित
ओ छलि मनुकेँ सोहराबैत,
मधुर स्पर्श छल अनुलेपन सन
भने व्यथा किए रहि जैत?

ओहि मुर्च्छित नीरवता मे किछु
हलुक सन कम्पन आएल
खुलल आँखि चारि कोनमे
बिन्दु चारि आबि कऽ घेरल।

देखैत ओने कुमार ऊँच
मंदिर, मंडप, वेदीकेँ,
ई सब की अछि नवल मनोहर
केहन ई लगैत जीकेँ!

मा कहलनि 'हे तोँ सेहो आ
देख पड़ल पिता छथि',
'पिता आबि गेलहुँ लिअ' ई कहैत
भेल ठाढ़ रोआँ ओकर अछि।

'मा जल दिअ, किछु हेता पिआसल
की कऽ रहलहुँ बैसल एतय?
सून मंडप गेल मुखर भऽ
ई सजीवता रहल कतय?

घुलल आत्मीयता ओहि घरमे
छोट सन परिवार बनल,
पसरल एक मधुर स्वर ओहि पर
श्रद्धाकेर संगीत बनल।

"तुमुल कोलाहल कलहमे
हम हृदयकेर बात हे मन!

विकल भऽ कऽ नित्य चंचल,
खोजैत जखन नीनकेर पल;
चेतना तखन थकि सन रहल,
हम मलयकेर वात हे मन!

चिर विषाद विलीन मनकेर,
एहि व्यथाक तिमिर वन केर;
हम उषासन ज्योति रेखा,
कुसुम विकसित प्रात हे मन!

जतय मरु ज्वाला धधकैत,
चातकी कनकेँ तरसैत;
ओही जीवन घाटी सबहक,
हम सरस बरसात हे मन!

पवनकेर प्राचीरमे रूकि,
जरल जीवन जीबि रहल झुकि;
एहि झुलसैत विश्व दिन केर,
हम कुसुम ऋतुराति हे मन!

चिर निराशा पयोधर सन,
छायाबिम्बित अश्रुसर मे;
मधुप मुखर मरन्द मुकुलित,
हम सजल जलजात, हे मन!"

ओहि स्वर लहरीकेर अक्षर सब
संजीवन रस सँ बनल घुलल,
भोर भेल ओने प्राचीमे
मनुकेर मुद्रित नयन खुलल।

अवलम्ब मिलल पुनि श्रद्धाकेर
कृतज्ञतासँ हृदय भरल
मनु उठि बैसला गदगद भऽ कऽ
बजला किछु अनुराग भरल।

"श्रद्धा! अहाँ आबि गेलहुँ भने तँ,
मुदा हम की छलहुँ एतय पड़ल!"
वएह भवन, ओ स्तम्भ, वेदिका
चारू कात घृणा पसरल।

आँखि बन्द कऽ लेलनि क्षोभसँ
"दूर दूर लऽ चलू हमराकेँ,
एहि भयावह अंधकारमे
फेर हेराए नहि दी कतहु अहँकेँ।

चलि सकैत छी, हाथ पकड़ि लिअ
हँ कि यएह अवलम्ब मिलय,
ओ तोँ के? दूर हट, श्रद्धे!
आउ कि हृदयक कुसुम खिलय।"

निसबद श्रद्धा माथ सोहराबय
आँखि मे विश्वास भरल,
जनु कहैत 'अहाँ हमर छी
आब किए केओ व्यर्थ डरल?'

जल पीबिकोँ किछु स्वस्थ भेल सन
लगला बहुत धिरे कहय,
"लऽ चलु बहार एहि छायाकेर
हमरा दिअ नहि एतय रहय।

मुक्त नील नभकेर नीचा वा
कतहु गुहामे रहि लेब,
हे झेलैते आएल छी
जे आएत सहि लेब।"

"किछु तँ बल आबय दिअ ठहरू
लऽ चलब तुरंत अहाँकेँ,
एतेक क्षण धरि" श्रद्धा बाजलि—
"रहय देब कि हमरा ने?"

इड़ा संकुचित ओने ठाढ़ छलि
ई अधिकार नहि छिनि सकलि,
श्रद्धा निश्चल, आब बजला मनु
हुनकर वाणी नहि रुकल।

"जीवनमे मनोरथ छल भरल जखन
बन्धनहीन अनुरोध भरल,
अभिलाषा सब भरल हृदयमे
अपनापनकेर बोध भरल!

हम छलहुँ, सुन्दर कुसुमक ओ
गाढ़ सोनहुला छाया छल,
मलयानिल केर लहरि उठि रहल
उल्लास राशिक माया छल!

उषा भरि आनय अरुण पिआला
छायाकेर नीचाँ सुरभित!

हमर यौवन पीबैत सुखसँ
अलसाएल आँखिकेँ मिचि।

चुबि पड़ैत मकरन्द नव लऽ
शरद प्रातकेर शेफाली,
पसारैत सुखकेँ सन्ध्या केर
सुन्दर घुरमल अलकावलि।

सहसा अन्धकार केर अन्हड़,
उठल क्षितिज सँ वेग भरल,
हलचल सँ उत्तेजित विश्व, छल,
व्याकुल मानस लहरल।

ओहि नील अकासमे व्यथित हृदय
छाया पथ सन खुलल तखने,
मंगलमयी अपन मधुर स्मिति
कऽ देलहुँ अहाँ देवि! जखने।

अमर अमिट छवि दिव्य अहाँकेर
रंगरेली खेलय लागल,
हमर नव सोन लेखा सन
हृदय निकष पर भने खिचल।

मन मन्दिरकेर ओ अरुणाचल
मुग्ध माधुरी नव प्रतिमा,
स्नेहमयी सन लगल सिखाबय
सुन्दरताक कोमल महिमा।

जानि सकल छलहुँ हम ओहि दिन तँ
ककरा अछि कहैत सुन्दर!
तखन जानि सकलहुँ प्राणी ई
दुख-सुख सहैत हित ककर।

जीवन कहैत यौवन सँ
'मतवाला किछु देखलहुँ अहाँ'
कहैत यौवन 'साँस लेने चलु
किछु अपन सम्बल पालि अहाँ!'

छल सीपी सन हृदय बनि रहल
अहाँ स्वातिकेर बुन्द बनल,
झुमि उठल जखन मानस सरोज
ओहिमे अहाँ मकरन्द बनल।

अहाँ एहि सुखल पतझड़मे
हरियरी भरि देलहुँ कतेक,
हम बुझलहुँ मादकता अछि
ओ तृप्ति बनि गेल एतेक!

विश्व, कि जहि मे दुखकेर अन्हड़,
पीड़ा केर लहरि उठैत,
जहिमे जीवन मरन बनल छल
बुदबुद केर माया नचैत।

उज्ज्वल मंगल सन वएह शांत
देखाइत छल विश्वास भरल,
कदम्ब कानन सन वर्षा केर
सृष्टि विभव भऽ हरित उठल।

भगवति! मधु धारा पावन ओ
अमृत सेहो देखि ललचाबए,
वएह, रम्य सौन्दर्य शैल सन
जहिमे जीवन धोआ जाए।

लऽ जाइत आब साँझ हमरा सँ
तरेगनक अकथ कथा,

लऽ लेइत छल नीन सहजे
समस्त श्रमकेर विकल व्यथा।

कुतूहल आ कल्पना सकल
ओहि चरणयुग सँ ओझराएल,
भेल प्रसन्न कुसुम हँसइत सन
घड़ी जीवनक ओ धन्य रहल।

स्मिति मधुराका छल, श्वाससँ
खिलैत पारिजात कानन,
स्वरमे कतय मिलैत वेणु!
गति मरन्द मन्थर मलयज सन।

हमर श्वास पवन पर चढ़िकेँ
दूरागत वंशी रवसन,
विश्व कुहरमे अहाँ, गुँजि उठलहुँ
दिव्य रागिनी अभिनव सन!

जे जीवन सागरक सतहसँ
निकलि पड़ल ओ मुक्ता छल,
संगीत अहाँकेर जगमंगल
गबैत हमर रोआँ ठाढ़ छल।

आशाक आलोक किरनसँ
किछु मानस सँ हमर लेने,
सृजन भेल छल लघु मेघकेर
जकरा शशिलेखा घेरने।

ओहि पर मालासन बिजलीकेर
झुमि पड़लहुँ अहाँ प्रभामयी,
आओर मेघ ओ रिमझिम बरसल
हरित भेल मन वनस्थली।

सिखेलहुँ हमरा अहाँ हँसि-हँसि
विश्व खेल थिक खेल चलु,
मिलिकए अहाँ बुझेलहुँ हमरा
सबसँ करइत मेल चलु।

बिजली सन इहो अपन
संकेत सम्भ्रमसँ कैल,
अपन मन अछि चाहल जकरा
दान तखन एकरा दऽ देल।

अहाँ अजस्र वर्षा सोहागकेर
आओर मधुर रजनी स्नेहक,
चिर अतृप्ति जीवन यदि छल तँ
अहाँ ओहिमे सुख सन्तोषक।

अछि उपकार कतेक अहाँकेर
प्रेम हमर आश्रित भेल,
कतेक अभारी छी, एतेक
हृदय संवेदनमय भेल।

बुझि नहि पौलहुँ मुदा अधम हम
ओहि मंगल केर माया केँ,
आओर आइयो पकड़ि रहल छी
हर्ष शोककेर छायाकेँ।

हमर सब किछु क्रोध मोह केर
उपादान सँ गठित भेल,
आइधरि किरन नहि छुलक
एहने हमरा अनुभव गेल।

हम जीवनकेर शापित सन ई
लऽ कंकाल भटकैत छी,

ओहि खोखिलापनमे जेना
किछु खोजैत अटकैत छी।

घन अन्हार अछि, मुदा प्रकृति केर
आकर्षण अछि घिचि रहल,
सब पर, हँ अपना पर हम सेहो
झुझलाबय छी खिझि रहल।

जेना हम पाबि सकल छी नहि
जे अहाँ देबऽ चाहि रहलि,
छोट पात्र! कतेक ओहिमे अहाँ
मधु धारा छी ढारि रहलि।

सब बहार होइत जाइत अछि
स्वगत ओकरा हम कऽ सकलहुँ नहि,
बुद्धि तर्क केर छेद भेल छल
हृदयकेँ हम भरि सकलहुँ नहि।

ई कुमार हमर जीवनकेर
उच्चांश कला कल्याण रहल,
हमर लोभ कतेक पैघ
हृदय स्नेह बनि जतय ढलल।

"सुखी रहय, सब सुखी रहय बस
छोड़ु हम अपराधी केँ"
श्रद्धा देखि रहलि चुप मनुकेर,
भीतर उठइत आन्हीकेँ।

बीतल दिन राति सेहो आएल
झपकी नीन संग लेने,
इड़ा कुमार लग पड़ल छलि
मनकेर दबल उमंग लेने।

श्रद्धा सेहो किछु उदास थाकलि सन
हाथकेँ उपधान केने,
पड़लि सोचइत मनेमन किछु
मनु चुप सब अभिशाप पिने—

सोचि रहल छला "जीवन सुख थिक?
नञ् ई विकट बुझौअलि अछि,
भागु हे मनु! इन्द्रजाल सँ
व्यथा कतेक ने सहने छी?

स्वर्ण किरन सन ई प्रभातकेर
झिलमिल चंचल सन छाया,
श्रद्धाकेँ देखाउ कोना
ई मुख वा कलुषित काया।

आओर शत्रु सब, ई कृतघ्न फेर
हिनकर की विश्वास करी,
प्रतिहिंसा प्रतिशोध दबा कऽ
मनेमन चुपचाप मरी।

श्रद्धाक रहैत ई संभव
नहि कि किछु करि पाएब,
तँ फेर शान्ति मिलत हमरा
खोजैत जतय जाएब।"

जखन जगल सब नव प्रभातमे
देखल तँ मनु नहि ओतय,
ओ कुमार नहि शान्त आब
कहि खोजि रहल सन 'पिता कतय।'

इड़ा आइ स्वयं केँ सबसँ
अपराधी छथि समझि रहलि,
कामायनी मौन बैसलि सन
स्वयंमे ओझराय रहलि।

दर्शन

ओ चन्द्रहीन छल एक राति,
जहिमे सूतल छल स्वच्छ प्रात;
तरेगन झिलमिल उज्जर-उज्जर,
सरिता प्रतिबिम्बित वक्षस्थल;
बहि जाएत धारा बिम्ब अटल,
खुलैत छल धिरे पवन पटल;
चुपचाप ठाढ़ छल वृक्ष पाँति,
सुनैत जेना किछु निजी बात।

सब अछाह धूमिल रहलि घुमि,
रहलि पाएरकेँ लहरि चुमि;
''मा! चलि अएलहुँ अहाँ दूर एमहर,
चलि गेल कखनहिँ संध्या ओमहर;
आब एहि निर्जनमे की सुन्दर—
रहलहुँ अहाँ देखि, हँ बस चलु घर;
उठइत ओहिमे सँ गंध धूम'',
श्रद्धा ओहि मुखकेँ लेलनि चुमि।

''मा! एतेक अहाँ छी किए उदास,
की नहि छी हम अहँक पास;
कतेक दिनसँ अहाँ एहिना चुप रहि,
की सोचि रहल छी? किछु तँ कहु;
ई दुख अहाँकेर कतेक दुसह,
बहार भीतर जे दए अछि दाहि;
लेइत ढिल सन भरल साँस,
होइत जाइत जेना हताश।''

ओ बाजलि ''नील गगन अपार
जहिमे झुकल घन सजल भार;
अबइत जाइत, सुख-दुख, दिसि, पल,
शिशु सन अबइत कए खेल अनिल;
फेर झिलमिल सुन्दर तारक दल,
नभ रजनीकेर खद्योत अविरल;
ई विश्व अहे कतेक उदार,
हमर गृह हे उन्मुक्त द्वार।

ई लोचन गोचर सकल लोक,
संसारक कल्पित हर्ष शोक;
भाव सागर सन किरनकेर मग
स्वाती कन सन बनि भरइत जग,
उत्थान पतनमय सतत सजग,
झरना झरइत आलिंगित नग;
ओझरोटक मीठ रोक-टोक,
ई सब ओकर अछि नोंक-झोंक।

जागय जग आँखि केने लाल,
सुतय ओढ़ने अन्हार नीन-जाल;
सुरधनु सन अपन रंग बदलि,
माटि, जगत, नति उन्नति मे ढलि,
झिलमिल अपन सुषमामे ई,
एहि पर खिलइत झरइत उड़ुदल;
अवकाश सरोवरकेर मराल,
सुन्दर कतेक कतेक विशाल।

एकर तह-तहमे मौन शान्ति,
शीतल अगाध अछि ताप भ्रांति;
ई परिवर्त्तनमय चिर मंगल,
मुसकाइत एहि मे भाव सकल;
हँसइत अछि एहिमे कोलाहल,
उल्लास भरल सन अन्तस्तल;
हमर निवास अति मधुर कान्ति,
ई एक नीड़ अछि सुखद शान्ति।''

माता किए फेर एतेक विराग,
किए भेलहुँ हमरा पर नहि सानुराग?''
पाछाँ घुरिकेँ देखलनि श्रद्धा,
ओ इड़ा मलिन छविकेर रेखा;
जेना राहुग्रस्त सन शशिलेखा,
जहि पर विषाद केर विष रेखा;
किछु ग्रहण कऽ रहल विकल त्यागि,
सुतल जकर अछि भाग्य, जागु।

बाजलि ''अहाँ सँ केहन विरक्ति,
अहाँ जीवनकेर अन्धानुरक्ति;
हमरा सँ बिछुड़लकेँ अवलंबन,
दऽ केँ, अहाँ रखलहुँ जीवन;
अहँ आशामयि! स्थिर आकर्षण,
अहँ मादकताकेर झुकल घन;
मनुक मस्तककेर चिर अतृप्ति,
अहाँ उत्तेजित चंचला शक्ति!

अहाँकेँ हम की दऽ सकैत छी मोल,
ई हृदय! हे दु मधुर बोल;

हँसैत छी हम, कानि लेइत छी,
पबैत छी हम हेरा देइत छी,
एकरा सँ लऽ ओकरा दैत छी,
हम दुखकेँ सुख कऽ लैत छी;
अनुराग भरल छी मधुर घोरि,
चिर विस्मृति सन छी रहलि दोल।

ई प्रभापूर्ण अहँक मुँह निहारि,
मनु छला हतचेतन एक वार;
नारी माया ममताकेर बल,
ओ शक्तिमयी छाँह शीतल;
फेर के क्षमा कऽ दए निश्छल,
जहि सँ ई बनल धन्य भूतल;
'अहाँ क्षमा करब' ई विचार,
हम छोड़ब कोना साधिकार।''

रहि सकब हम नहि आब मौन,
अपराधी मुदा एतय के नञ्?
सब सुख-दुख जीवनमे सहैत,
मुदा केवल सुख अपन कहैत;
अधिकार नहि सीमामे रहैत,
पावस निर्झर सन ओ बहैत;
रोकय फेर ओकरा भने कोन?
सबकेँ ओ कहैत—'शत्रु छी नञ्!'

अग्रसर भऽ रहल एतय फूट,
सीमा सब कृत्रिम रहल टूटि;
श्रम भाग वर्ग बनि गेल जिनका,
अपन बलकेर छनि गर्व हुनका;

नियमक करैक सृष्टि जिनका,
क्रान्तिकेर करैक वृष्टि हुनका;
सब पिने मत्त लालसा घोंट,
साहस हमर आब गेल छुटि।

हम जनपद कल्याणी प्रसिद्ध,
आब अवनति कारण छी निषिद्ध;
हमर सुविभाजन भेल विषम,
टूटैत, नित्य बनि रहल नियम;
विविध केन्द्रमे बादल सम,
घिरि हटि, बरसल ई उपलोपम;
ई ज्वाला एतेक अछि समिद्ध,
चाहि रहल बस आहुति समृद्ध।

तँ की भ्रममे छलहुँ हम नितान्त,
संहारबध्य असहाय दान्त;
प्राणी विनाश मुखमे अविरल,
चुपचाप चलय भऽ कऽ निर्बल!
संघर्ष कर्मकेर मिथ्या बल,
ई शक्ति चिन्ह, ई यज्ञ विफल;
भयकेर उपासना! प्रणति भ्रान्त!
अनुशासनकेर अछाह अशान्त!

तहु पर हम छिनलहुँ सोहाग,
हे देवि! अहाँकेर दिव्य राग;
हम आइ अकिंचन पाबय छी,
अपनाकेँ नहि सोहाबय छी;
हम जे किछियो स्वर गाबय छी,
ओ स्वयं नहि सुनि पाबय छी;

दिअ क्षमा, नहि दिअ अपन विराग,
सुतल चेतनता उठय जागि।''

''अछि रुद्र रोष एखन धरि अशांत'',
श्रद्धा बाजलि, ''बनि विषम ध्वान्त!
माथ चढ़ल रहलह! पौलह नञ् हृदय,
तोँ विकल कऽ रहल छह अभिनय;
अपनापन चेतनकेर सुखमय,
हेरा गेल, नहि आलोक उदय;
सब अपन पथ पर चलल श्रान्त,
प्रत्येक विभाजन बनल भ्रान्त।

जीवन धारा सुन्दर प्रवाह,
सत, सतत, प्रकाश सुखद अथाह;
हे तर्कमयी! तोँ गनय लहरि,
प्रतिबिम्बित तारा पकड़ि, ठहरि;
तोँ रुकि-रुकि देखय आठ पहर,
ओ स्थिति जड़ताकेर भूल नञ् करि;
सुख-दुखकेर मधुमय रौद-छाँह,
तोँ छोड़ि देलह ई सरल राह।

चेतनताकेर भौतिक विभाग—
कऽ जगकेँ बाँटि देल विराग;
चितिकेर स्वरूप ई नित्य जगत,
ओ रूप बदलइत अछि शत-शत;
कन बिरह मिलन मय नृत्य निरत,
उल्लासपूर्ण आनन्द सतत;
मग्न पूर्ण अछि एक राग,
झंकृत अछि केवल 'जाग जाग!'

हम लोक अग्निमे तपि नितान्त,
दैत प्रसन्न आहुति प्रशान्त;
तोँ क्षमा नहि कऽ किछु चाहि रहलि,
जरैत छाती केर दाह रहलि;
तँ लऽ लेऽ जे निधि पास रहल,
हमरा बस अपन बाट रहल;
रहि सौम्य! एतहिँ होऽ सुखद प्रान्त,
विनिमय करि दऽ कऽ कर्म कान्त।

अहाँ दुनु देखू राष्ट्र नीति,
पसारु शासक बनि नहि भीति;
हम अपन मनुकेँ खोजि चललि,
सरिता, मरु, नग वा कुंज गली;
ओ भोला एतबा नहि छली!
मिलि जाएत, छी प्रेम पललि;
देखी तखन केहन चलल रीति,
मानव! होऽ तोहर सुयश गीति!''

बाजल बालक ''ममता नहि तोड़ु,
जननी! हमरा सँ मुँह ने मोड़ु;
अहाँक आज्ञाक कऽ पालन,
ओ स्नेह सदा करैत लालन;
हम मरी जिबी मुदा छुटय नहि प्राण,
वरदान बनय हमर जीवन;
जँ हमरा एना अहाँ जाएब छोड़ि,
तँ मिलय हमरा फेर इएह कोर!''

''हे सौम्य! इड़ाकेर शुचि दुलार,
लेत हरि तोहर व्यथा भार;

ई तर्कमयी तोँ श्रद्धामय,
तोँ मननशील करह कर्म अभय;
एकर तोँ सब व्यथा निचय,
हरि लए, होऽ मानव भाग्य उदय;
सबहक समरसता करह प्रचार,
सुत हमर! सुनह माएक पुकार।''

''अति मधुर वचन विश्वास मूल,
हमरा कहियो नहि ई जाए भूल;
हे देवि! अहाँकेर स्नेह प्रबल,
बनि दिव्य श्रेय उद्गम अविरल;
आकर्षण मेघसन वितरय जल,
निर्वासित होऽ संताप सकल;
कहि इड़ा झुकल लऽ चरण धूलि,
पकड़लि कुमार-कर नरम फूल।

ओ तीनु गोटे क्षण एक मौन,
विस्मृत सन छल, हम कतय, कोन!
बहार अवरुद्ध, छल आलिंगन—
ओ हृदयकेर, अति मधुर मिलन;
मिलैत दुखी भऽ कऽ जल कन,
लहरिकेर ई परिणत जीवन;
दु लौटि चलल पुर ओर मौन,
जखन भेल दूर तखन रहल दु नञ्।

निसबद अकास छल, दिशा शांत,
ओ छल असीमकेर चित्र कान्त;
किछु शून्य बिन्दु उरकेर ऊपर,
पीड़ित रजनीकेर श्रमसीकर;

झलकल कहिया सँ मुदा पड़य ने झरि,
गहन मलिन छाया धरती पर;
सरिता तट तरुकेर क्षितिज प्रान्त,
केवल छिड़िआबय विकल ध्वान्त।

शत शत तारा मंडित अनन्त,
पुष्प राशिक स्तवक खिलल वसंत;
हँसैत ऊपरकेर विश्व मधुर,
भरल हलुक प्रकाशसँ उर;
बहैत माया सरिता ऊपर,
उठैत किरनकेर लोल लहरि;
निचला तह पर छाँह दुरन्त,
आबय चुपसँ, जाए तुरन्त।

सरिताकेर ओ एकान्त कूल,
छल पवन हिन्दोल पर रहल झुलि;
मन्द मन्द लहरि केर दल,
तट सँ टकराकेँ होइत ओझर;
छप-छपकेर होइत शब्द विरल,
थर-थर कँपि रहइत ज्योति तरल;
संसृति अपनेमे रहल भूल,
ओ गंधहीन अम्लान फूल।

सरस्वती सन तखन फेंकि साँस,
श्रद्धा देखलनि आस-पास;
छल चमकि रहल दु खुलल नयन,
जेना शिलालग्न अनगढ़ल रतन;
ई की तममे करइत सनसन?
धारेकेर की ई निस्वन!

नहि, गुफा लतावृत एक पास,
केओ जीवित लऽ रहल साँस!

ओ निर्जन तट छल एक चित्र,
सुन्दर कतेक, कितेक पवित्र?
किछु उन्नत छल ओ शैल शिखर,
तइयो ऊँच श्रद्धाकेर सिर;
ओ लोक अग्निमे तपि गलिकेँ,
छलि ढलल स्वर्ण प्रतिमा बनिकेँ;
देखलनि मनु कतेक विचित्र!
ओ मातृमूर्ति छलि विश्व मित्र।

बजला "सुन्दरि अहाँ नहि आह!
जकरा मन मे होऽ भरल चाह;
अहाँ अपन सबकिछु गमाकए,
विरहित! जकरा पौलहुँ कानिकए;
हम भागलहुँ प्राण जिनका सँ लऽ कऽ
हुनका सब केँ ओकरा सेहो दऽ कऽ
की निर्दय मन नहि उठल कराहि?
अद्‌भुत अछि अहँक मोनक प्रवाह!

ई जंगली जंतु सन हिंसक अधीर;
कोमल शावक ओ बाल वीर;
सुनैत छल ओ वाणी शीतल,
कतेक दुलार, कतेक निर्मल?
केहन कठोर अछि अहँक अन्तस्तल,
ओ इड़ा कऽ गेली तइयो छल;
अहाँ बनल रहलहुँ अछि एखन धीर,
छुटि गेल हाथसँ आह तीर!"

प्रिय एखन धरि छी एतेक सशंक,
किछु दऽ कऽ नहि केओ रंक;
ई विनिमय अछि वा परिवर्तन,
बनि रहल अहाँक आब ऋणधन;
अपराध अहाँकेर ओ बन्धन—
लिअ बनल मुक्ति छोड़ि आब स्वजन—
निर्वासित अहाँ किए लगए डंक?
दिअ लिअ प्रसन्न, ई स्पष्ट अंक।''

अहाँ देवि! आह कतेक उदार,
ई मातृभूमि अछि निर्विकार;
हे सर्वमंगले! अहाँ महती,
सबहक दुख अपना पर सहइत;
कल्याणमयी वाणी कहइत,
अहाँ क्षमा निलय मे छी रहइत;
हम बिसरल छी अहाँकेँ निहारि,
नारिए सन! ओ लघु विचार।

हम एहि निर्जन तटमे अधीर,
सहि भूख, व्यथा तीक्ष्ण समीर;
हँ भावचक्रमे पिसि-पिसकेँ,
चलइते आएल छी बढ़िकेँ;
हिनक विकारेसन बनि कैं,
शून्य बनल हम सत्ता गमाकेँ
लघुता नहि देखु वक्ष चीरि,
पश्चाताप बनि जहिमे घुसल तीर।''

''प्रियतम! ई नत निसबद राति,
अछि यादि कराबैत बीतल बात;

ओ प्रलय शान्ति ओ कोलाहल,
अर्पित कऽ जखन जीवन संबल;
हम अहाँक भेल छलहुँ निश्छल,
की बिसरी हम, एतेक दुर्बल?
चलु तखन जतयहो शान्ति प्रात,
हम नित्य अहाँकेर, सत्य बात!

एहि देव द्वन्द्वकेर ओ प्रतीक—
मानव! कऽ लिअ सब भूल ठीक;
ई विष जे पसरल महाविषम,
निज कर्मोन्नति सँ करैत सम;
सब मुक्त बनय, काटब भ्रम,
हुनकर रहस्य होऽ शुभ संयम;
गिरि जाइत जे अछि अलीक,
मेटाइत अछि चलिकेँ पड़ल लीक।''

ओ शून्य असत वा अंधकार,
अवकाश पटलकेर वार पार;
बहार भीतर उन्मुक्त सघन;
छल अचल महानील अंजन;
भूमिका बनल ओ स्निग्धमलिन,
छल अपलक मनुकेर लोचन;
एतेक अनन्त छल शून्य सार,
नहि देखाए पड़ए जकर अलग पार!

सत्ताकेर कम्पन चलल डोलि,
आवरण पटलकेर ग्रंथि खोलि;
तम सागरकेर बनि मधु मंथन,
ज्योत्स्ना नदी केर आलिंगन;

ओ रजत गोर, उज्ज्वल जीवन,
आलोक पुरुष! मंगल चेतन!
केवल प्रकाशकेर छल किलोल,
मधु किरनक छल लहरि लोल।

बनि गेल अन्हार छल केश जाल,
सर्वांग ज्योतिमय छल विशाल;
अंतर्कूजन ध्वनि सँ पूरित,
छल शून्यवेधनी सत्ता चित्;
नटराज स्वयं छल नृत्य निरत,
छल अंतरिक्ष प्रमुदित मुखरित;
स्वर लय भऽ कऽ दऽ रहल ताल,
छल लुप्त भऽ रहल दिशाकाल।

स्पंदित लीलाकेर आह्लाद,
ओ प्रभापुंज चितिमय प्रसाद;
आनन्दपूर्ण तांडव सुन्दर,
झरैत छल उज्ज्वल श्रमसीकर;
बनैत तारा, हिमकर, दिनकर,
उड़ि रहल धूलिकण सन भूधर;
संहार सृजन सन युगल पाद,
गतिशील, अनाहत भेल नाद।

छितरल असंख्य ब्रह्माण्ड गोल,
युग त्याग ग्रहण कऽ रहल तोलि;
विद्युत कटाक्ष चलि गेल जिमहर,
कम्पित संसार बनि रहल ओमहर;
चेतन परमाणु अनन्त पसरि,
बनैत विलीन होइत क्षण भरि;

ई विश्व झुलैत महादोल,
परिवर्तन केर पट रहल खोलि।

ओहि शक्ति शरीरीकेर प्रकाश,
सब शाप पापकेर करि विनाश—
नर्तनमे निरत, प्रकृति गलि कऽ,
ओहि क्रांति सिन्धुमे घुलि मिलि कऽ
धरैत अपन स्वरूप सुन्दर,
कमनीय बनल छल भीषणतर;
हीरक गिरि पर विद्युत विलास,
उल्लसित महा हिम धवल हास।

देखलनि मनु नृत्यरत नटेश,
हतचेत पुकारि उठला विशेष;
"ई की ! श्रद्धे! बस अहाँ लऽ चलु,
ओहि पदयुग धरि दऽ निज संबल;
सब पाप पुण्य जहिमे जरि-जरि,
पावन बनि जाइत अछि निर्मल;
मेटैत असत्यसँ ज्ञान लेश,
समरस अखण्ड आनन्द वेश।"

रहस्य

ओहि नील अन्हारमे ऊर्ध्व देश
निसबद भऽ रहल अचल हिमानी;
पथ थकि कऽ अछि लीन, चारू दिस
देखि रहल ओ गिरि अभिमानी।

कहिया सँ दुनु पथिक चलल छथि
ऊँच-ऊँच चढ़ैत-चढ़ैत;
आगाँ श्रद्धा छला पाछाँ मनु
साहस उत्साहीसन बढ़ैत।

विपरीत ओनए छल पवन वेग
कहैत 'घुरि जाउ हे बटोही!
चललहुँ अहाँ कोनए हमरा बेधि कऽ!
प्राणक प्रति किए निर्मोही?'

अकास मचलल सन छुबए लेल
सतत उँचाइ बढ़ल जा रहल;
भीषण खड्ड भयानक खाधि
घाएल ओकर अंग, प्रकट छल।

सूर्य तुषार खंड पर पड़ि कऽ,
कतेक नव चान बनाबैत;
पवन सेहो काटि द्रुततर चक्कर
ओतहिँ फेर सँ घुरि आबि जाइत।

दौड़ि रहल छल नीचाँ बादल
सुन्दर सुरधनु मालक पहिरन;
कुन्जर कलभजकाँ अगराइत
चमकाबैत बिजलीक आभूषण।

देशमे नीचाँ प्रवहमान छल
सै-सै निर्झर एहन शीतल;
महाश्वेत गजराज गण्ड सन
जेहन मधु धारावलि छितरल।

हरियरी जकर उभरल, ओ
चित्रपटी सन लगैत समतल;
प्रकृति केर बाह्य रेख सँ
स्थिर, नद जे भगैत छल प्रतिपल।

छोटछीन ओ सब जे भूपर
ऊपर महाशून्य केर घेर;
ऊँच चढयकेर रजनीकेर
एतय भेल जा रहल सबेर।

"आब कतय लऽ चलल छी हमरा
श्रद्धे! हम थकि गेल अधिक छी;
साहस छूटि गेल अछि हमर
निस्संबल भग्नाश पथिक छी।

घुरि चलु, एहि वातचक्र सँ
आब हम दुर्बल नहि लड़ि सकब;
श्वास रुद्ध करयवला एहि
शीत पवनसँ अड़ि नहि सकब।

हमर, हँ ओ सब हमर छल
जिनकासँ रुसि चलि आएल छी;

ओ नीचाँ छुटल सुदूर, मुदा
बिसरि नहि हुनका पाओल छी।''

ओ विश्वास भरल स्मिति निश्छल
झलकि उठल श्रद्धा मुख पर छल;
हुनकर कर-पल्लवमे सेवा
किछु करबालए ललकि उठल छल।

दऽ अवलम्ब विकल साथीकेँ
कामायनी बाजलि मधुर स्वर;
''हम बढ़ि आब दूर चलि अएलहुँ
नहि हास करबाक अछि अवसर!

दिशा विकम्पित, पल असीम अछि
ई अनन्त सन किछु ऊपर अछि;
अनुभव करैत छी, बाजू की
पदतलमे साँचे भूधर अछि?

निराधार छी, मुदा रुकनाए
हम दुनुकेँ आइ एतहिँ अछि;
नियति खेल देखी नहि, आब सुनु
एकर अन्य उपाय नहि अछि!

अछाह लगइत जे, ओ अहाँ केँ
ऊपर उठबालए अछि कहइत;
एहि विपरीत पवन अघातकेँ
झोँकि दोसरे आबि सहइत।

श्रांत पक्ष, कऽ नेत्र बंद बस
विहग युगलसन हम आइ रही;
सून, हवा बनि पाँखि हमर
हमरा दए आधार, जमि रही।

घबड़ाउ जुनि! ई समतल अछि,
देखु तँ, हम आबि गेलहुँ कतए;''
जेना किछु क्षण त्राण पाबि गेला
देखलनि मनु आँखि खोलि कए।

तापकेर नूतन अनुभव सन
ग्रह, तारा, नक्षत्र अस्त छल;
दिन-रातिक संधि कालमे
ई सब केओ नहि व्यस्त छल।

ऋतुवृन्दक स्तर भेल तिरोहित
भूमण्डल रेखा विलीन सन;
निराश्रय ओहि महादेशमे
उदित सचेतनता नवीन सन।

त्रिदिक् विश्व, आलोक विन्दु सेहो
तीन ओ अलग देखाए पड़ल;
तीन भुवनक प्रतिनिधि छल मानु
अनमिल छल ओ मुदा सजग छल।

मनु पुछलनि, ''कोन नवग्रह
श्रद्धे! ई छथि, हमरा कहू?
हम पहुँचलहुँ कोन लोकमे, एहि
इन्द्रजालसँ हमरा बचाउ।''

''एहि त्रिकोणक मध्यबिन्दु अहाँ
विपुल शक्ति क्षमतावाला ई;
एक एककेँ स्थिर भऽ देखु;
इच्छा, ज्ञान, क्रियावाला ई।

ओ देखु रागारुण अछि जे
उषाकेर गेन सन सुन्दर;

भावमयी प्रतिमाकेर मन्दिर
छायामय कमनीय कलेवर।

शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंधकेर,
पारदर्शिनी सुन्दर पुतरी;
नृत्य करैत जेना चारु दिस
रूपवती रंगीन तितली!

एहि कुसुमाकरक काननकेर
अरुण पराग पटल छायामे;
अगराइत सुतैत जगैत इ
अपन भावभरल मायामे।

हुनकर ध्वनि ओ संगीत भरल
कोमल अंगेठी अछि लेइत;
लहरि उठाकेँ मादकता केर
अपन वस्त्र आर्द्र कऽ देइत।

मधुर प्रेरणा आलिंगन सन
छुबि लैत, फेर बनइत सिहरन;
खुलि जाइत अछि फेर मुनि जाइत
नव अलम्बुषाक लज्जा सन।

मध्यभूमि अछि ई जीवनकेर,
सिंचित होइत रसधारासँ;
ई धारा स्पंदित होइत
मधुर लालसाकेर लहरिसँ।

विद्युतकण सन जकर तट पर,
रूप रंगवला मनहर;
आकुल छायामय सुषमामे
विचरि रहल मत्त सुन्दर।

भूमि छेदसँ पुष्प संकुलित
मधुर गंध उठैत रस मंदतर;
एहिमे अनदिख भाफक फुहार
छूटि रहल रस बुन्नी पातर!

चौदिस घूमि रहल अछि एतय
चलचित्र सन संसारक छाया;
घेरय जहि आलोक बिन्दुकेँ
ओ बैसल मुसकाइत माया।

ई चला रहल अछि भावचक्र
इच्छाकेर रथ नाभि घुमइत;
नवरस भरल भूमि सब अविरल
चक्रवालकेँ चकित चुमइत।

एतय कऽ रहल विश्व मनोमय
रागारुण चेतन अराधब;
माया राज्य! एतहिँ प्रथा अछि
फन्दा बिछाए जीवकेँ फाँसब।

ई अशरीरी रूप, फूल सन
केवल वर्ण गंधमे फूलल;
एहि अप्सरासभक तानकेर
सुन्दर झूला अछि मचकि रहल।

एही लोककेर भाव भूमिका
जननी थिक सब पाप पुण्य केर;
अस्त होइत सब स्वभाव प्रतिकृति बनि
गलि ज्वाला सँ मधुर तापकेर।

नियममयी लतिकाकेर ओझरौट
भाव विटप सँ आबि कऽ मिलब;

बनल समस्या जीवन वनकेर
अकासकुसुमकेर आशा विकसब।

ई उत्स अछि चिर वसंतकेर
पतझर होइत एक ओर अछि;
एतय मिलल अछि अमिय हलाहल
सुख दुख बन्हैत, एक डोर अछि।''

''सुन्दर ई अहाँ देखेलहुँ
मुदा कोन ओ श्याम देश अछि?
कामायनी! बताउ ओहिमे
की रहस्य रहइत विशेष अछि।''

''मनु ई श्यामल कर्मलोक अछि,
धूमिल किछु-किछु अंधकार सन;
अनजानल ई घन भऽ रहल
देश मलिन अछि धूम धार सन।

घूमि रहल अछि कर्मचक्र सन
ई गोलक बनि नियति प्रेरणा;
लागल अछि सबहक पाछाँमे
कोनो व्याकुल नवल एषणा।

श्रममय कोलाहल, पीड़नमय
प्रायोजक विकल महामंत्रकेर;
विश्राम नहि अछि क्षण भरि सेहो
दास प्राण थिक क्रिया तंत्रकेर।

भाव राज्यक सकल मानसिक
सुख एना दुखमे बदलि रहल अछि;
हिंसा गर्वोन्मत हारिमे
ई अकड़ल अणु टहलि रहल अछि

ई भौतिक सदेह किछु कऽ कें
जीवित रहब चाहइत एतय;
एतय भाव राष्ट्र केर नियम
दण्ड बनल अछि सब कराहइत।

करइत छथि, छनि संतोष नहि
जेना कशाघात प्रेरित सन;
करइते जाइत छथि प्रतिक्षण
डरल विवश ई सब कम्पित सन

ई कर्मचक्र भाग्य चलबइत
इच्छाजन्य ममत्व वासना;
पंचभूत केर पाणि-पादमय
भऽ रहल अछि एतय उपासना।

एतय सदा संघर्ष, विफलता
कोलाहलक राज एतय अछि;
दौड़ लगि रहल अंधकारमे
ई सब उन्मत्त समाज अछि।

रूप बना कऽ स्थूल भऽ रहल
कर्म सभक भीषण परिणति अछि;
तीव्र पिआस आकांक्षाकेर
ममताक ई निर्मम गति अछि।

शासनादेश घोषणा एतय
विजयदलक हुँकार सुनाबइत;
विकल दलितकें एतय भूखसँ
पैरक नीचाँ फेर-फेर खसाबइत।

कर्मकेर दायित्व लेने एतय,
मतवाला उन्नति करबालए;

जराए-जराएकेँ फूटि पड़ि रहल
बहयवला फोंका ढलिकए।

एतय राशिकृत विपुल विभव सब
देखाए पड़ि रहल मरीचिका सन;
ओ विलीन, ई पुनः गड़ि रहल
क्षणिक भोगकेर भाग्यवान बनि।

एतय सुयशकेर पैघ लालसा
अपराध सभक बनइत स्वीकृति;
अंध प्रेरणासँ परिचालित
कर्त्तामे करैत निज गनती।

सघन साधना प्राण तत्त्वकेर
जल, हिम उपल एतय अछि बनइत;
घाइल भऽ जरि जाइत पिआसल
मरि मरिकेँ जिबइते बनइत।

नील लोहित ज्वाला एतय किछु
जराए-गलाएकेँ नित्य सिरजइत;
रुकयवाली चोट सहन कए
धातु, नहि जकरा मृत्यु सालइत।

वर्षाकेर बादल ध्वनि कऽ रहल
किनार सबकेँ सहज गिराबइत;
वन कुंजकेँ प्लावित करइत
लक्ष्य प्राप्ति सरिता बहि जाइत।''

''बस आओर आब नहि देखाउ अहाँ एकरा
ई अति भीषण कर्म जगत अछि;
श्रद्धे! ओ उज्ज्वल केहन अछि
जहिना पूँजीभूत रजत अछि।''

''प्रियतम ज्ञान क्षेत्र अछि ई तँ
सुख-दुख सँ अछि उदासीनता;
एतय न्याय निर्मम, चलइत अछि
बुद्धि चक्र, जाहिमे नञ् दीनता।

अस्ति नास्तिकेर भेद, निरंकुश
करइत ई अणु तर्कयुक्ति सँ;
ई निस्संग मुदा करि लेइत—
किछु सम्बंध-विधान मुक्ति सँ।

केवल प्राप्य मिलैत अछि एतय
तृप्ति नहि, कए भेद बाँटइत;
बुद्धि सकल सम्पदा बालु सन
पिआस लगल अछि ओस चाटइत।

रमल न्याय, तप, समृद्धिमे
ई प्राणी प्रभामय लगैत;
एहि ग्रीष्म मरुमे सुखलसन
जलधारक तट जहिना जगैत।

कार्यक्रमकेर मनोभावसँ
समतोलनमे दत्तचित्तसँ;
ई निस्पृह न्यायासनवाला
चुकि नहि सकैत तनिक वित्तसँ।

अपन सीमित पात्र लेने ई
बूँद-बूँदवला निर्झर सन;
माँगि रहल छथि जीवनकेर रस
बैसि एहिठाम अजर अमर सन।

धर्म तुलाकेर एतय विभाजन
अधिकारकेर व्याख्या करइत;

निरीह ई, पाबि कए मुदा किछु
अपन ढील साँसकेँ भरइत।;

उत्तमता हिनकर निजस्व थिक
कमलवला पोखरि सन देखु;
एकत्र कऽ रहल जीवन मधु
ओहि मधुमाछी सन बस लेखु।

धवल इजोरिया एतय शरदकेर
वेध अन्हारकेँ निखरइत;
ई अनवस्था, युगल मिलल सन
व्यवस्था आतुर सदा छिड़िआइत।

ओ सब सौम्य बनल छथि देखु
मुदा छथि शंका भरल दोष सँ;
चलैत ओ संकेत दंभकेर,
भ्रू चालन बिच परितोष सँ।

जीवन रस रहल अछूत एतय
छुबु नहि होबय दिअ संचित;
भाग अहाँकेर बस एतबे अछि
होबय दिअ पिआस! वृथा वंचित।

चलला मेल करबाक लेल
मुदा विषमता पसारैत छथि;
किछु अओर बताएत मूल स्वत्व
इच्छा सबकेँ झुठलाबैत छथि।

स्वयं व्यस्त मुदा शांत बनल सन
शस्त्र शास्त्र रक्षामे पलइत;
ई अनुशासन विज्ञान भरल
क्षण-क्षण परिवर्तनमे ढलइत।

देखलहुँ अहाँ यएह त्रिपुर अछि
तीन बिन्दु ज्योतिर्मय एतेक;
दुख-सुखमे अपन केन्द्र बनल
अछि भिन्न भेल ई सब कतेक!

ज्ञान दूर किछु, क्रिया भिन्न अछि
इच्छा किए पूर होऽ मनकेर;
मिलि सकय नहि एक दोसर सँ
ई विडम्बना अछि जीवनकेर।''

बनि कऽ महाज्योति रेख सन
स्मिति दौड़ल श्रद्धाकेर ओहिमे;
सहसा फेर सम्बद्ध भेला ओ
ज्वाला जागि उठल छल जहिमे।

नीचा ऊपर लचकदार ओ
वासना वायुमे धधकि रहलि सन;
सोनहुल ज्वाला महाशून्यमे
कहइत सबकेँ 'नहि नहि' सन।

प्रलय आगिकेर शक्ति लहरि
ओहि त्रिकोणमे निखरि उठल सन;
सिंघा आओर डमरू निनाद बस
सकल विश्वमे पसरि उठल सन।

धधकैत चिता चितिमय अविरल
महाकालकेर विषम नृत्य छल;
विश्व छेद ज्वाला सँ भरिकेँ
करैत अपन जटिल कृत्य छल।

जागरण भस्म भऽ स्वप्न, स्वाप
छल इच्छा-क्रिया-ज्ञान मिलि लय;
दिव्य अनाहत पर निनादमे
छला बस श्रद्धायुत मनु तन्मय।

आनन्द

चलइत छल धिरे धिरे
ओ एक यात्रीगणक दल;
सरिताक रम्य पुलिनमे
गिरिपथसँ लए निज संबल।

छल सोमलता सँ आवृत
वृष धवल धर्मकेर प्रतिनिधि;
तालवृन्द बजइत घंटा
छल ओकर मंथर गतिविधि।

वाम हाथमे वृष रज्जु छल
त्रिशूल सँ दहिन सुशोभित;
मानव छल संग ओकरे
मुख पर छल तेज अपरिमित।

तरुण सिंह सन अभिनव
प्रस्फुटित भेल अवयव छल;
भेल छल यौवन गंभीर
जहिमे किंचित भाव नवल छल।

चलि रहलि इड़ा सेहो वृषकेर
दोसर पार्श्वमे नीरव;
संध्या सन गैरिक वसना
चुप छल जकर सब कलरव।

युवकवृन्दक उल्लास रहल
मृदु कलरव शिशुगणक छल;
मंगल गान सँ नारिकेर
मुखरित छल ओ यात्रीदंल।

चमरौ पर बोझ लदल छल
चलैत छल ओ मिलि अविरल;
किछु नेना सेहो बैसि ओहि पर
अपनहि छल बनल कुतूहल।

माए सब पकड़ने हुनका
बात छलि करइत, बुझबैत;
'हम कतय चलि रहलहुँ' ई सब
हुनका विधिवत समझबैत।

एक छल कहि रहल "अहाँ तँ
कखने सँ सुनाए रहल छी—
आब आबि पहुँचल लिअ देखु
आगाँ ओ भूमि इएह अछि।

मुदा बढिते चलैत अछि
नाम रुकबाक नहि अछि;
ओ तीर्थ कतय छै कहु तँ
जकर हित दौड़ि रहल छी।"

"ओ समतल अगिला जहि पर
अछि देवदारु केर कानन;
घन भरैत अछि अपन पेआली
लए जकर दलसँ हिमकन।

हँ एहि ढलानकेँ जखनहि,
सहज उतरि जाएब हम;

भेटत सम्मुख तीर्थ तखनहि
ओ अति उज्ज्वल पावनतम।''

ओ इड़ा निकट पहुँचि कए
बाजल हुनका रुकबालए;
बालक छल, मचलि गेल छल
किछु आओर कथा सुनबालए।

ओ अपलक लोचन अपन
पादाग्र विलोकन करैत;
पथ प्रदर्शिका सन चलैत
धिरे-धिरे डेग भरैत।

बाजलि, ''हम जतय चलल छी
ओ अछि जगतीकेर पावन—
साधना प्रदेश ककरो
शीतल अति शांत तपोवन।''

''केहन! किए शान्त तपोवनी
कहू सब गप फरिछाकऽ;''
बालक कहलक इड़ासँ
ओ बाजलि किछु सकुचाऽ कऽ।

''सुनैत छी एक मनस्वी
छल ओतय एक दिन आएल;
ओ जगतीकेर ज्वाला सँ
अति विकल रहल झुलसाएल।

ओकर ओ जलन भयानक
पसरल गिरि अंचलमे फेर;
दावाग्निक धधरा प्रखर
केलक सघन वनकेँ अस्थिर।

छलि अर्द्धांगिनी ओकरे
जे ओकरा तकैत आएलि;
ई दशा देखि करुणाकेर—
वर्षा दृगमे भरि आनलि।

वरदान बनल फेर ओकर
अश्रु, करैत जग मंगल;
सब ताप शान्त भऽ कए वन
भऽ गेल हरित सुख शीतल।

गिरि निर्झर चलल उछलैत,
फेर सँ हरियरी पसरल;
सुखल तरु किछु हँसल
पल्लवमे लाली निखरल।

ओ युगल ओतहि आब बैसल
संसृतिक सेवा करैत;
संतोष आओर सुख दऽ कए
सबहक दुख ज्वाला हरैत।

ओतय अछि निर्मल पैघ झील
जे मनक पिआस बुझाबए;
मानस ओकरा अछि कहैत
जे जाइत अछि सुख पाबय।''

''तँ ई वृष किए अहाँ एहिना
अनेरे चला रहल छी
किए बैसि नै जाइत छी एहिपर
स्वयंकेँ थका रहल छी।''

''सारस्वत नगर निवासी
हम अएलहुँ यात्रा करबा लए;

ई व्यर्थ रिक्त जीवन घट
पीयूष जलसँ भरबालए।

एहि वृषभ धर्म प्रतिनिधि कँ
उत्सर्ग करब जा कऽ;
चिर मुक्त रहय ई निर्भय
स्वच्छन्द सदा सुख पाबि कए।''

सब सम्हरि गेल छल आगाँ
छल किछु नीचाँ उतार;
जहि समतल घाटीमे, ओ
छल हरिअरीक पूर्ण पसार।

श्रम, ताप अओर पथ पीड़ा
क्षण भरि मे छल अंतर्हित;
समक्ष विराट् धवल नग
अपन महिमा सँ विलसित।

श्यामल तृण वीरुधवाली
ओकर तलहटी मनोहर;
झीलसँ भरल निराली
नव कुंज, गुफा, गृह सुन्दर।

ओ मंजर पुंजक कानन
किछु अरुण पीत हरिअरी;
प्रति पर्व सुमन संकुल छल
छिपि गेल ओहिमे डारि।

यात्रीदल रुकि देखलनि
मानसक दृश्य सोहनगर;
खग मृगकेँ अति सुखदायक
छोट जगत बेस धवलगर।

पन्नाक वेदी पर जेना
राखल हीराकेर पानि;
छोट सन प्रकृतिकेर दर्पण
वा सुतलि राका रानी!

सुरुज आब पहाड़क पाछाँ
चान छल चढ़ल गगनमे;
कैलास सांध्य प्रभामे
बैसल स्थिर कोनो लगनमे।

संध्या निकट आएल छलि
ओहि झीलक, वल्कलवसना;
तारावलिसँ अलक गाँथल छल
पहिरने कदम्बकेर रसना।

खगकुल किलकारि रहल छल
कलहंस कऽ रहल कलरव;
किन्नरि दल बनल प्रतिध्वनि
छलि लेइत तान अभिनव।

ध्यानमग्न छला मनु बैसल
ओहि निर्मल मानस तटमे;
आँजुर मे भरि कऽ सुमनपुंज
श्रद्धा छलि ठाढ़ निकटमे।

श्रद्धा सुमन छिड़िआएल
शत शत मधुपक गुंजन;
भरि उठल मनोहर नभमे
मनु तन्मय बैसल उन्मन।

चिन्ह लेने छल सब केओ
फेर कोना आब ओ रुकैत;

ओ देव-द्वन्द्व द्युतिमय छल
किए नहि प्रणति मे पुनि झुकैत।

तखन सोमवाही वृषभ सेहो
अपन घंटा ध्वनि करैत;
बढ़ि चलल इड़ाकेर पाछाँ
मानव छल सेहो डेग भरैत।

हँ इड़ा आइ बिसरल छलि
मुदा क्षमा नहि चाहि रहल छलि;
ओ दृश्य देखबालए निज
दृग युगल सराहि रहलि छलि।

चिर मिलित प्रकृतिसँ पुलकित
ओ चेतन पुरुष पुरातन;
निज शक्ति तरंगित छल
आनन्द-अम्बु-निधि शोभन।

भरि रहल अंक श्रद्धाकेर
मानव हुनका अपना कए;
छल इड़ा शीश चरण पर
ओ पुलक भरलि गदगद स्वर।

बाजलि—"धन्य भेल छी हम
जे अएलहुँ बिसरि कऽ एतय;
हे देवि! अहाँकेर ममता
बस आनल हमरा खिचिकए।

भगवति, बुझलहुँ हम! साँचे
समझ छल किछिओ नहि हमरा;
बिसरि रहल छलहुँ सबकेँ
अंभ्यास इएह छल हमरा।

यात्रा करबालए आएल छी
हम एक कुटुम्ब बना कए;
ई दिव्य तपोवन जहिमे
सब पाप छुटय सुनि कए।"

मनु किछु-किछु मुसकाकए
कैलास दिस देखौलनि
"देखु एहिठाम केओ
नहि आन, बुझौलनि।

हम भिन्न ने अओर कुटुम्बी
हम केवल एक हमहीँ छी;
अहाँ सब हमर छी अवयव
जहिमे नहि हम कमी जनैछी।

एतय ने केओ शापित अछि
तापित पापी ने एतय अछि;
समतल अछि जीवन वसुधा
अछि समरस जे जतय अछि।

चेतन समुद्रमे जीवन
लहरि सन छिड़िआएल अछि;
किछु छाप व्यक्तिगत, अपन
निर्मित आकार ठाढ़ अछि।

एहि इजोरियाकेर सागरमे
बुदबुद सन रूप बनएने;
नक्षत्र देखाए दएत
अपन आभा चमकौने।

अभेद ओहन सागरमे
प्राण पुंजक सृष्टि-क्रम अछि;

सबमे घुलिमिलकेँ रसमय
ई भाव रहैत चरम अछि।

अपन दुख-सुखसँ पुलकित
ई मूर्त विश्व सचराचर;
चितिकेर देह मंगल विराट
ई सतत सत्य चिर सुन्दर।

सबहक सेवा नहि अनकर,
ओ अपन सुख संसृति अछि;
अपनहि अणु-अणु कण-कण
द्वयता सैह तँ विस्मृति अछि।

स्वकेर हमर चेतनता
सबकेँ स्पर्श केने सन;
भिन्न परिस्थितिकेर सब
अछि मादक घोंट पीने सन।

जागु ऊषाकेर दृगमे
सुतु निशाक पलकमे;
हँ स्वप्न देखि लेऽ सुन्दर
ओझराएल अलकमे—

चेतनकेर साक्षी मानव
भऽ निर्विकार हँसैत सन;
मानसक मधुर मिलनमे
गहिर-गहिर धँसैत सन

सब भेदभाव बिसराकऽ
दुख सुखकेँ दृश्य बनाएत;
मानव कह हे! "ई हम छी'
ई विश्व नीड़ बनि जाएत।"

श्रद्धाक मधु अधरकेर
छोट छोट सब रेखा;
रागारुण किरन कला सन
विकसल बनि स्मिति लेखा।

ओ कामायनी जगतकेर
मंगला कामना एकसरि;
छलि ज्योतिष्मती प्रफुल्लित
वनबेली मानस तटकेर।

औ विश्व चेतना पुलकित
छलि पूर्ण कामकेर प्रतिमा;
गंभीर झील पैघ जेना
हो भरल विमल जल महिमा।

जहि निनाद सँ मुरलीकेर
ई शून्य रागमय होइछ;
ओ कामायनी हँसैत
अग जग छल मुखरित होइछ।

परिवर्तित सब क्षण भरिमे
विश्व कमलक अणु अणु छल;
पिंगल पराग सँ उमगल
आनन्द सुधा रस छलकल।

अति मधुर गंधवह बैसत
परिमल बूँद सँ सिंचित;
सुख स्पर्श कमल केसरकेर
कए आएल रजसँ रंजित।

असंख्य मुकुल केर जेना
मादन विकास कए आएल;

अछूत अधर दलकेर हुनकर
कतेक चुम्बन भरि आनल।

रुकि-रुकि कऽ किछु अगराइत
जेना किछु होऽ ओ बिसरल;
नव कनक-कुसुम-रज धूसर
मकरन्द मेघ सन फूलल।

वनलक्ष्मी स्वयं जेना
छिड़िआएल हो केसर रज;
वा हेमकूट हिम जलमे
झलकाएत छाया निज।

संसृतिक मधुर मिलन केर
उच्छ्वास बनाए कए निज दल;
चलि पड़ल गगन आंगनमे
किछु गबैत अभिनव मंगल।

वल्लरी नृत्य निरत छल
सुगन्धक लहरि छितरल;
पुनि वेणु रंध्रसँ उठि कए
आब कतए मूर्च्छना ठहरत।

गुंजैत मधुर नूपुर सन
मधुकर मधु मातल भऽ कए;
वाणीकेर वीणा ध्वनि सन
भरि उठल शून्यमे झिल कए।

उन्मद माधव मलयानिल
दौड़ल सब खसैत पड़ैत;
परिमल सँ चललि नहाकए
काकली, सुमन छल झड़ैत।

सिकुड़न कौशेय वसनकेर
छल विश्वसुन्दरी तन पर;
वा मादन मृदुतम क म्पन
पसरल सम्पूर्ण सृजन पर।

सुख सहचर दुख विदूषक
परिहासपूर्ण करि अभिनय;
सबहक विस्मृतिकेर पटमे
आब नुका बैसल छल निर्भय।

छल डारि-डारिमे मधुमय
मृदु मुकुल बनल झालरसन;
मन्द मन्द सँ बरसल
सब रस भार प्रफुल्ल सुमन।

हिमखंड रश्मि मंडित भऽ
मणि-द्वीप प्रकाश देखबैत;
टकराकेँ जहिसँ समीर
अति मधुर मृदंग बजबैत।

उठैत संगीत मनोहर
मुरली बजैत जीवनकेर;
संकेत कामना बनि कऽ
बतबैत दिशा मिलनकेर।

रश्मिपुंज बनल अप्सरा
अंतरिक्षमे नचैत छल;
कन-कन लऽ केँ परिमल केर
निज रंगमंच रचैत छल।

आइ भेल छलि मांसल सन
हिमवती प्रकृति पाषाणी;

विह्वल ओहि लास रासमे
छलि हँसैत सन कल्याणी।

ओ चन्द्रकिरीट रजत नग
स्पन्दित सन पुरुष पुरातन;
देखैत मानसी गौरी
लहरिकेर कोमल नर्त्तन।

प्रतिफलित भेल सब आँखि
ओहि प्रेम ज्योति विमला सँ;
सब चिन्हल सन लगैत
अपनहि एक कलासँ।

समरस छल जड़ वा चेतन
सुन्दर साकार बनल छल;
चेतनता एक विलसैत
आनन्द अखंड सघन छल।